ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर

और

उसका सूची पत्र : एक अध्ययन

[16वीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु की परम्परा से जुड़े गौड़ीय आचार्यों के द्वारा ब्रज–वृन्दावन में स्थापित पांडुलिपि ग्रंथागार और उसके अप्रकाशित सूची पत्र (Catalogue) पर केन्द्रित संदर्भों की खोज एवं अध्ययन पर एकाग्र–]

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित
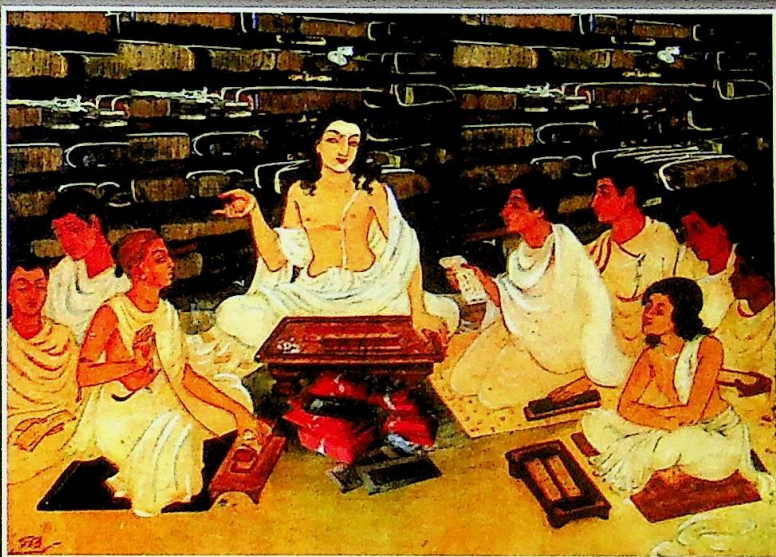
प्रगति शर्मा

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-२८११२१

I am particularly glad to learn about the publication of the book ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर और उसका सूचीपत्र and of the discovery of the booklist from 1597 the library (pustak Thaur) of the Radha-Damodar temple. This document, now preserved in the Vrindavan Research Institute. is the earlist available booklist from the Hindi belt. This is an exciting discovery that will considerably enhance our knowledge about the history of Indian books and libraries.

Pragati Sharma's monograph on document tells us not only what books were considered important in Vrindavan, and particularly among the Gaudiya Vaishnavas, at the end of the sixteenth century but also how books circulated and what material provisions were necessary for their circulation. It is also important to learn about Akbar's support of the library. Even though he was himself illiterate, he was well aware of the importance of libraries as treasure houses of learning.

In his foreword, Pandit Udaya Shanker Dube, the doyen of Hindi manuscript studies, puts in context the new discovery. Although there are no extant early catalogues of books we know of book lists already from Samvat 1383. This shows that some libraries meticulously kept record of their holdings. It is all the more interesting because even today there are libraries where the keeper keeps in mind all the books and does not think, it necessary to prepare a systematics registry. The only similar book list that I am aware of is from the Kutch Bhuj Braj Pathshala. Apparently, preparing booklists meant that the library was available to the public and it was not just the knowledgeable librarian to whom and through whom books were accessible.

I heartily congratulate the author Pragati Sharma for bringing in light the exciting history of the Pustak Thaur as well as the Vrindavan Research Institute for safeguarding the invaluable documents realating to this early library and for publishing this important book.

Imre Bangha
Associate Professor of Hindi
University of Oxford
The Oriental Institute,
Pusey Lane, Oxford. OX1 2LE
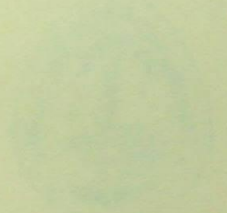
ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर
और
उसका सूची पत्र

[एक अध्ययन]

[16वीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु की परम्परा से जुड़े गौड़ीय आचार्यों के द्वारा ब्रज-वृन्दावन में स्थापित पाण्डुलिपि ग्रन्थागार और उसके अप्रकाशित सूची पत्र (कैटलॉग) पर केन्द्रित सन्दर्भों की खोज एवं अध्ययन पर एकाग्र—]

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित)

प्रगति शर्मा

वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन-281121

॥ श्रीराधामोहनो जयति ॥

॥श्रीराधादामोदरो जयति ॥
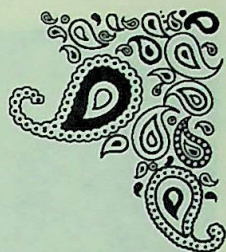
समर्पण

जिन, पितृचरण की सद्कृपा से,

हृदय में उदित हुआ,

यह चैतन्य भाव...

पूज्य

वात्सल्य मूर्ति

निकुंजवासी

श्रद्धेय मोहनलाल शर्मा

एवं

गुलाबचन्द्र जोशी जी को

श्रद्धा, समर्पण

— प्रगति

षड्गोस्वामी परम्परा के अन्तर्गत जीव गोस्वामी जी के
सेव्य विग्रह ठाकुर श्री राधादामोदर जी
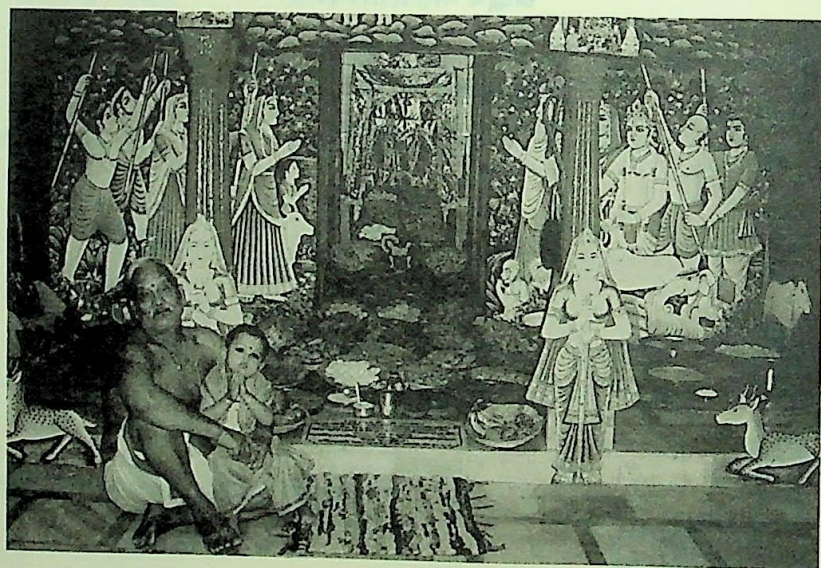
अन्नकूट मनोरथ के अवसर पर परम आराध्य निज विग्रह ठाकुर
श्री राधामोहन जी महाराज

शमीमा सिद्दिकी
SHAMIMA SIDDIQUI
भारत के राष्ट्रपति की उप प्रेस सचिव
Deputy Press Secretary
to the President of India

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-110004.
PRESIDENT'S SECRETARIAT,
RASHTRAPATI BHAVAN,
NEW DELHI - 110004.

MESSAGE

The President of India, Shri Pranab Mukherjee, is happy to know that the Vrindavan Research Institute, Vrindavan is bringing out a book dedicated to Chaitanya sect to commemorate the 500th anniversary of Sri Chaitanya Mahaprabhu's return to Vrindavan.

The President extends his warm greetings and felicitations to all those associated with the Institute and sends his best wishes for their future endeavours.

Deputy Press Secretary to the President

Tel. (O) : 91-11-23793528 (Direct), 91-11-23015321 Extn. 4442 , Fax : 91-11-23010252
E-mail : message-rb@rb.nic.in

रवीन्द्रदत्त पालीवाल,
पी0सी0एस0

स्टाफ आफीसर, मुख्य सचिव, उ0 प्र0 शासन,
मुख्य सचिव कार्यालय, 407- लाल बहादुर शास्त्री भवन,
लखनऊ (का॰) फोन: (0522) 2237006

पुस्तकालय आरम्भ से ही ज्ञान का केन्द्र रहे हैं। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा के साथ ही जैन ग्रंथागारों के उल्लेख मिलते हैं। वास्तव में मुद्रण तकनीकी से पूर्व भारत विद्या [Indology] को संरक्षित करने में प्राचीन ग्रंथागारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मुगलकाल में अकबर का अपना समृद्ध पुस्तकालय था। आज लोग नहीं जानते ठीक इसी दौर में सीकरी (आगरा) से लगभग 70 कि.मी. दूर वृन्दावन में भी एक पुस्तकालय था जो तत्कालीन समय में ''पुस्तक ठौर'' के नाम से लोकप्रिय था। सन्दर्भों के अनुसार रूप, सनातन एवं रघुनाथदास गोस्वामी के बाद यह पुस्तकालय जीव गोस्वामी के नियंत्रण में रहा तथा इनके बाद इसके अधिकारी, कृष्णदास पुजारी रहे तथा यहाँ से तैयार हुईं पाण्डुलिपियाँ न केवल उत्तर भारत बल्कि बंगाल एवं उड़ीसा तक प्रसारित हुई। इन साधकों को ग्रंथ लिखने के लिये कागज की आपूर्ति एवं सन्दर्भों के शोध- संकलन हेतु पुराणों की प्रतियाँ भी अकबर के द्वारा बनारस से मँगाकर इन्हें दी गई। कालांतर में वृन्दावन की इस पुस्तक ठौर (राधादामोदर) मंदिर की पाण्डुलिपियाँ वृन्दावन शोध संस्थान के संग्रह में आईं। संस्थान के संग्रह में पाण्डुलिपि के रूप में विद्यमान गौड़ीय वैष्णवों की ''पुस्तक ठौर'' का सूचीपत्र [Catalogue] और तत्कालीन दुर्लभ दस्तावेज इस शोध अध्ययन के केन्द्र में रहे हैं।

ब्रज संस्कृति अध्येता प्रगति शर्मा के द्वारा संस्थान के ग्रंथागार की पाण्डुलिपियों और दस्तावेजों की खोज सर्वेक्षण के उपरान्त इस पुस्तक ठौर से जुड़े अनेक अप्रसारित दुर्लभ संदर्भों को एक सूत्र में पिरोते हुए उस तत्कालीन परिदृश्य को जीवंत करने का सराहनीय प्रयास किया गया है। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा चैतन्य महाप्रभु के वृन्दावन आगमन के पंचाशत वर्ष के अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक विज्ञजनों के मध्य समादृत हो सकेगी, ऐसा विश्वास है।

(आर.डी.पालीवाल)
अध्यक्ष,
वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

University of Oxford

The Oriental Institute, Pusey Lane, Oxford. OX1 2LE

Imre Bangha

Associate Professor of Hindi

I am particularly glad to learn about the publication of the book ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर और उसका सूचीपत्र and of the discovery of the booklist from 1597 the library (pustak Thaur) of the Radha-Damodar temple. This document, now preserved in the Vrindavan Research Institute. is the earlist available booklist from the Hindi belt. This is an exciting discovery that will considerably enhance our knowledge about the history of Indian books and libraries.

Pragati Sharma's monograph on document tells us not only what books were considered important in Vrindavan, and particularly among the Gaudiya Vaishnavas, at the end of the sixteenth century but also how books circulated and what material provisions were necessary for their circulation. It is also important to learn about Akbar's support of the library. Even though he was himself illiterate, he was well aware of the importance of libraries as treasure houses of learning.

In his foreword, Pandit Udaya Shanker Dube, the doyen of Hindi manuscript studies, puts in context the new discovery. Although there are no extant early catalogues of books we know of book lists already from Samvat 1383. This shows that some libraries meticulously kept record of their holdings. It is all the more interesting because even today there are libraries where the keeper keeps in mind all the books and does not think, it necessary to prepare a systematics registry. The only similar book list that I am aware of is from the Kutch Bhuj Braj Pathshala. Apparently, preparing booklists meant that the library was available to the public and it was not just the knowledgeable librarian to whom and through whom books were accessible.

I heartily congratulate the author Pragati Sharma for bringing in light the exciting history of the Pustak Thaur as well as the Vrindavan Research Institute for safeguarding the invaluable documents realating to this early library and for publishing this important book.

Imre Bangha

Tel: +44 (0) 1865-278200 Fax: +44 (0)1865-278190
Direct Line: +44 (0)1865-278219 E-Mail: imre.bangha@orinst.ox.ac.uk

श्रीमन्माध्व गौड़ेश्वर वैष्णवाचार्य
गोस्वामी (डॉ॰) अच्युतलाल भट्ट
एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत, पी-एच.डी. भागवत- भूषण),
(श्रीमद्भागवत के मनीषी एवं परंपरा सिद्ध प्रवक्ता)

सी-253, चैतन्य विहार, फेस-द्वितीय,
श्रीधाम वृन्दावन, मथुरा (ऊ॰प्र॰)
मोबाइल नं॰ 09412485678

पुरा ग्रंथों पर शोध एवं प्रकाशन की दिशा में आज ठहराव सा दिखता है। प्रस्तुत पुस्तक इस तथ्य का अपवाद है। वृन्दावन शोध संस्थान के ग्रंथागार की 24,000 पाण्डुलिपियों और 200 से अधिक प्राचीन दस्तावेजों के खोज-सर्वेक्षण के साथ ही अनेक पाण्डुलिपि ग्रंथागारों में उपलब्ध प्राचीन सन्दर्भों को खोजकर, गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के एक अप्रकाशित पक्ष पर किये गये इस शोध कार्य का बीज वपन महाप्रभु की कृपा के बिना सम्भव न था, जिसका निमित्त बनने का सौभाग्य ग्रंथ लेखिका को प्राप्त हुआ है।

प्रगति शर्मा ने अनखोजे को खोजकर और अल्पज्ञात को सर्वज्ञात करके, भारत विद्या के संवर्धन में गौड़ीय आचार्यों के योगदान को सन्दर्भों के साथ जिस तरह रेखांकित किया है, उससे वृन्दावन में 16वीं शताब्दी में स्थापित 'पुस्तक ठौर' (पुस्तकालय) का महत्व तो प्रतिपादित हुआ ही है, साथ ही ब्रज संस्कृति के इस मूल्यवान कार्य से ब्रज पर कार्य करने वाले शोध अध्येताओं को भी एक नई दृष्टि मिलना स्वाभाविक है। उस जमाने में एक पोथी से दूसरी पाण्डुलिपि तैयार करना श्रम एवं समय साध्य प्रक्रिया थी। ऐसे में वृन्दावन के गौड़ीय वैष्णवों के द्वारा जनहित में 'पुस्तक ठौर' के नाम से ऐसा व्यवस्थित पुस्तकालय बनाना जिसका अपना सूचीपत्र भी था, स्वयं में अद्‌भुत है।

आठ अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक के लेखन में नये दृष्टिकोण से नई खोज के लिये लेखिका को पुनः साधुवाद। इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिये वृन्दावन शोध संस्थान भी बधाई का पात्र है जिसके द्वारा चैतन्य महाप्रभु के वृन्दावन आगमन की 500वीं जयंती वर्ष के अवसर पर इसे प्रकाशित कराया जा रहा है।

अच्युत लाल भट्ट
५.६.२०१५

(डॉ॰ अच्युतलाल भट्ट)
वृन्दावन, मथुरा

• जय श्रील जीव गोस्वामी •

• श्रीराधादामोदर जयति •

श्रील जीवगोस्वामी पीठाधीश्वर गौड़ीयवैष्णवसम्प्रदायाचार्य

श्रीनिर्मलचन्द्र गोस्वामीजी महाराज

'पूज्य महाराजश्री'

आचार्य प्रवर एवं सेवायत

श्रीराधादामोदर मंदिर, श्रीधाम वृन्दावन-281 121 (मथुरा) उ.प्र.

☎ : 0565 - 2442809 • Mob. : 09897092115

Radhadamodarmandir Vrindavan

सेवायत परम्परा

श्रीधाम वृन्दावन के प्रकट्यकर्ता कलियुग पावनावतारी
श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु
↓
गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के सर्वप्रथम आचार्य
श्रील रूपगोस्वामी प्रभुपाद
↓
विश्व वैष्णव राज्यसभा के संस्थापक आचार्य एवं ठाकुर श्रीराधादामोदर जी महाराज के प्राकट्यकर्ता
श्रील जीव गोस्वामी प्रभुपाद
↓
श्रीकृष्णदास गोस्वामी
↓
श्रीनन्द कुमार गोस्वामी
↓
श्रीब्रज कुमार गोस्वामी
↓
श्रीवृन्दावनदेव गोस्वामी
↓
श्रीगोपीरमण गोस्वामी
↓
श्रीब्रजलाल गोस्वामी
↓
श्रीनवलाल गोस्वामी
↓
श्रीगोविन्दलाल गोस्वामी
↓
श्रीकेशवानन्द गोस्वामी
↓
श्रीब्रजमोहनदेव गोस्वामी
↓
गोस्वामी श्रीकृष्णवल्लभी देव्या
↓
आचार्य प्रवर श्रीगोराचन्द गोस्वामी
"पूज्य आचार्य श्री"
↓
आचार्य श्रीनिर्मलचन्द गोस्वामी
"पूज्य महाराजश्री"

दिनांक 07-06-2016

लोक विश्रुत है श्रील जीव गोस्वामीपाद महान शास्त्रज्ञ थे। यही कारण है कि 16वीं शताब्दी में भक्तमाल के रचनाकार नाभादास एवं टीकाकार प्रियादास आदि ने इनकी इसी विशेषता को प्रस्तुत किया। ग्रन्थ लेखिका प्रगति शर्मा के द्वारा इस पुस्तक में पूरी परंपरा को शोधपूर्ण दृष्टि से संयोजित किया गया है। कार्य के दौरान ग्रंथ लेखिका का सम्पर्क निरंतर मंदिर से बना रहा। कई जिज्ञासाओं के समाधान हेतु पूज्य महाराजश्री निर्मलचन्द्र गोस्वामी जी से विषय सम्मत विस्तृत परिचर्चाएँ होती थी। भगवत कृपा से यह पुण्य कार्य आज फलित हुआ है।

वृन्दावन शोध संस्थान की स्थापना के दौरान राधादामोदर मंदिर से तत्कालीन सेवायत आचार्य गौराचाँद गोस्वामी जी के द्वारा वृन्दावन शोध संस्थान के संस्थापक डॉ॰ रामदास गुप्त को विपुल साहित्य इस पवित्र उद्देश्य के साथ दान स्वरूप दिया गया था कि अधिकाधिक जन इसका लाभ ले सकें। यह कार्य इस दिशा में सार्थक प्रयास है। राधादामोदर मंदिर की प्राचीन 'पुस्तक ठौर' और इसके तत्कालीन सूचीपत्र को केन्द्र में रखकर किया गया यह शोध-अध्ययन विज्ञजनों का ज्ञानार्जन करने में समर्थ रहेगा, ऐसा विश्वास है। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से चैतन्य महाप्रभु के वृन्दावन आगमन के पंचाशत वर्ष के अवसर पर वृन्दावन शोध संस्थान द्वारा इसके प्रकाशन तथा लेखन हेतु प्रगति शर्मा को मंगलकामनाएँ।

(आचार्य कृष्ण बलराम गोस्वामी)
सेवायत, राधादामोदर मंदिर, वृन्दावन (मथुरा)

Website : www.radhadamodarmandir.com • E-mail : goswamikb@radhadamodarmandir.com

प्रकाशकीय

पाण्डुलिपियों पर आधारित शोध, सर्वेक्षण, संकलन एवं प्रकाशन आदि कार्य वृन्दावन शोध संस्थान के आरम्भिक एवं प्रमुख प्रकल्प रहे हैं। संस्थान अपने इस पवित्र अनुष्ठान के प्रति सदैव तत्पर है कि भारत विद्या के अन्तर्गत ब्रज संस्कृति को रेखांकित करने वाले विरले सन्दर्भ, शोध अध्येताओं एवं आमजन के मध्य साझा होते रहें। इसी क्रम में चैतन्य महाप्रभु की परम्परा से सम्बद्ध एक नये पक्ष को इस पुस्तक के माध्यम से लोक-विदित करने का प्रयास किया गया है।

इस वर्ष पूरे देश में गौड़ीय वैष्णव परम्परा से जुड़े विभिन्न स्थलों पर चैतन्य महाप्रभु के वृन्दावन आगमन के पंचाशत् वर्ष पूर्ण होने पर अनेक कार्यक्रम हो रहे हैं। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा वृन्दावन शोध संस्थान को नोडल केन्द्र नामित किया गया है, जिसके अन्तर्गत संस्थान के द्वारा चैतन्य संस्कृति से अभिप्रेत सचल प्रदर्शनी का अयोजन किया गया, जो भारत के उन स्थलों पर पहुँची जहाँ से होकर महाप्रभु आज से 500 साल पूर्व वृन्दावन आये थे। इसी के साथ संस्थान के द्वारा कार्यक्रम के शुभारम्भ अवसर पर चैतन्य प्रेम मेला भी आकर्षण का केन्द्र रहा। संस्थान के द्वारा अपनी त्रैमासिक पत्रिका ब्रज सलिला का चैतन्य महाप्रभु पर केन्द्रित एक भव्य अंक भी इस अवसर पर प्रकाशित किया गया है।

इसी क्रम में ब्रज संस्कृति अध्येता प्रगति शर्मा के द्वारा सम्पादित ''ब्रज की अकबर कालीन पुस्तक ठौर और उसका सूचीपत्र : एक अध्ययन'' पुस्तक का प्रकाशन महाप्रभु के जयंती वर्ष समापन के दौरान किया जा रहा है। आशा है एक नई दृष्टि के साथ सम्पन्न यह मौलिक कार्य विज्ञजनों को लाभान्वित करेगा।

सतीशचन्द्र दीक्षित
निदेशक,
वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

पुरोवाक्

वृन्दावन शोध संस्थान के द्वारा प्रकाशनाधीन इस दुर्लभ पुस्तक की जानकारी जब मुझे हुई तो हार्दिक प्रसन्नता के साथ आश्चर्य भी हुआ; प्रसन्नता इस बात की, कि **पांडुलिपि विज्ञान के अंतर्गत अभी तक इस विषय पर एक भी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है, यह इस विषय पर पहली पुस्तक है, जिसे प्रकाशित करने का श्रेय वृन्दावन शोध संस्थान को है,** और आश्चर्य यह है कि मैंने संस्थान से प्रकाशित प्राचीन पांडुलिपियों के सूचीपत्रों (कैटलॉगों) को कई बार देखा किंतु मुझे पुस्तक ठौर के सूचीपत्रों की जानकारी नहीं हो सकी, जबकि यह सूचीपत्र संस्थान में सुरक्षित थे। मुझे यह दुर्लभ सूचीपत्र प्रथम बार देखने को मिला है। प्राचीन पांडुलिपियों को पढ़ना तथा उनकी खोज करना अत्यन्त श्रम और समय साध्य कार्य है। लगभग 500 वर्ष पूर्व तैयार किये गये पांडुलिपियों के सूचीपत्र पढ़ना, उन्हें पढ़कर तत्कालीन सन्दर्भों की खोज तथा सविधि ग्रंथ का लिखना साहसिक और कठिन कार्य है। इस कार्य को पांडित्यपूर्ण ढंग से निभाया है; ग्रंथ की लेखिका प्रगति शर्मा ने।

उनके अध्यवसाय का परिणाम है कि आज हिन्दी साहित्य जगत के सामने चैतन्य महाप्रभु की परम्परा से सम्बद्ध गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर से सम्बन्धित **ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर उसका सूचीपत्र: एक अध्ययन** जैसा पांडुलिपि विज्ञान से संबंधित ग्रंथ प्रकाश में आ सका। इस परंपरा पर यह प्रथम ग्रंथ है। इसके पूर्व इस विषय पर किसी भी पांडुलिपिविद् ने ग्रंथ नहीं लिखा। हाँ, आर.ए. शास्त्री धन्यवाद के पात्र है, जिन्होंने प्रथम बार सन् 1919 ई० में पूना (महाराष्ट्र) में आयोजित आल इंडिया ऑरियण्टल कान्फ्रेंस में काशी स्थित कवीन्द्राचार्य सरस्वती के ग्रंथागार की पांडुलिपियों से संबंधित सूचीपत्र पर अपना शोध निबंध प्रस्तुत किया था। उनका यह शोधपत्र तत्कालीन विद्वानों द्वारा समादृत हुआ और उसी समय यह शोध गायकवाड़ ऑरियण्टल सीरिज में प्रकाशित भी हुआ। वर्तमान में संस्थान के द्वारा प्रकाशित वृन्दावन के गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर (पुस्तकालय) का यह सूचीपत्र (कैटलॉग) कवीन्द्राचार्य के सूचीपत्र से भी अधिक प्राचीन, अकबर के काल का है।

मुगल सम्राट अकबर ने जीव गोस्वामी की प्रतिभा एवं विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्हें भूदान संबंधी फरमान देने के साथ ही उन्हें काशी से पुराणों की हस्तलिखित प्रतियां भी मंगाकर दीं थीं तथा पुस्तक लेखन हेतु कागज की व्यवस्था भी अकबर के द्वारा यहाँ की गई। यह जानकारी लेखिका के द्वारा स्थानीय पोथियों से मिलने वाले सन्दर्भों के आधार पर ग्रंथ के अंतर्गत दी गई है। अकबर पुस्तक प्रेमी था, यह सौभाग्य उसे वंशानुगत मिला था, अकबर का पितामह बाबर स्वयं विद्वान और लेखक था उसने '**तुजुके बाबरी**' की रचना की थी। जिसका रहीम ने फारसी में अनुवाद किया। सम्राट अकबर के पिता हुमायूँ का पुस्तक प्रेम प्रसिद्ध है। उसका अपना पुस्तकालय था। वह पुस्तकालय में नित्य अध्ययन करता था। कुरान शरीफ से वह फाल (शगुन) निकालने में माहिर था। पुस्तकालय से निकलते समय हुमायूँ सीढ़ी से फिसलकर गिर गया जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। अकबर को उत्तराधिकार में अपने पूर्वजों का पुस्तकालय प्राप्त हुआ था। शम्सुलाउल्मा मौलाना हुसैन 'आजाद' ने अकबर के पुस्तक प्रेम की चर्चा करते हुए लिखा है कि **''अकबर रात के समय सदा पुस्तकें पढ़वाया करता था और बड़े ध्यान से सुनता था। विद्या संबंधी चर्चा होती तथा पुस्तकालय कई स्थानों में विभक्त था कुछ अंदर महल में था कुछ बाहर रहता था। विद्या, ज्ञान और कला आदि के गद्य-पद्य, हिन्दी, फारसी, कश्मीरी, अरबी सबके अलग-अलग ग्रंथ थे। प्रतिवर्ष क्रमानुसार सब पुस्तकों की जाँच होती थी कि कहीं कोई पुस्तक गुम तो नहीं हो गयी। अरबी का स्थान सबके अंत में था। बड़े-बड़े विद्वान नियत समय पर पुस्तकें सुनाते थे। वह जो भी पुस्तक सुनने बैठता था उसका एक भी पृष्ठ न छोड़ता था। पढ़ते-पढ़ते जहाँ बीच में रूकते थे वहाँ वह अपने हाथ से चिह्न कर देता था; और जब पुस्तक समाप्त हो जाती थी तब पढ़ने वाले को पृष्ठ के हिसाब से स्वयं अपने पास से कुछ पुरस्कार भी देता था।''** (अकबरी दरबार- अनुवादक- रामचंद्र वर्मा, भाग-1, पृष्ठ 181, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, वि॰सं॰ 2024)

पुस्तकों के प्रति अकबर की अत्यधिक अभिरुचि थी। पुस्तकालय को 'शाही कुतुबखाना' की संज्ञा दी गयी थी। अकबर के दरबार में सभी धर्म और सम्प्रदाय के आचार्यों, कवि-पंडितों, विद्वानों, कलाकारों को आदर सम्मान प्राप्त था। अकबर सुविज्ञ था उसका भारतीय ग्रंथों के प्रति विचार था कि

"हिन्दी (भारतीय) पुस्तकें बुद्धिमान ऋषि-मुनियों की लिखी हुयी है जो बिल्कुल ठीक और सत्य हैं और हिन्दुओं के धर्म तथा उपासना आदि का आधार इन्हीं ग्रंथों पर है। ये पुस्तकें विलक्षण और नई हैं। फिर क्यों न हम अपने नाम से फारसी भाषा में इनका अनुवाद करें। ऐसे ग्रंथों के पठन-पाठन से इहलोक और परलोक सुधरता है, अक्षय धन-धान्य प्राप्त होता है। और वंश की वृद्धि होती है।" इसी आदर्श पूर्ण विचार को ध्यान में रखकर अकबर ने देश के प्रसिद्ध संस्कृत-फारसी-हिन्दी के ज्ञाता प्रबुद्ध विद्वानों को आमंत्रित कर उनसे संस्कृत के ग्रंथों का फारसी में, फारसी के ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद कराया तथा संस्कृत भाषा में कुछ नये ग्रंथों की रचना कराकर अपने शाही कुतुबखाना के भंडार को भरा। (मुगल सम्राट अकबर और संस्कृत भाग-1-2, लेखक प्रताप कुमार मिश्र, प्रकाशक-अखिल भारतीय मुस्लिम-संस्कृत संरक्षण एवं प्राच्य शोध संस्थान, बी-30/229, नगवाँ, लंका- वाराणसी, 2012 ई०)

बादशाह के दरबार में सत्रह संस्कृत सेवी जैन विद्वान भी थे। संस्कृत के प्रातिभ कवि जैनाचार्य पद्मसुन्दर ने बादशाह की आज्ञा से श्रृंगार दर्पण ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रंथ के प्रथम उल्लास के प्रारंभिक श्लोकों में बादशाह बाबर, हुमायूँ और अकबर की प्रशस्ति है। इसी उल्लास का आठवाँ छन्द स्पष्टतः उद्घोष करता है कि अकबर ने अपने नाम-यश को मर्त्यलोक में स्थायी (अनश्वर) करने की इच्छा से यह रचना प्रणीत करवायी—

मत्वा सर्वनश्वनैरं जीव लोकम नित्यं,

नित्यं कर्त्तुं स्व यशः काम मुच्चैः। ...

(जैन कवि आचार्य पद्मसुन्दर विरचितः श्रृंगार दर्पणः सम्वादनम्- शिव शंकर त्रिपाठी, भारतीय मनीषा सूत्रम, दारागंज, प्रयाग, सं० 2063, पृ०38)

चतुर्थ उल्लास की पुष्पिका दृष्टव्य है जिसमें अकबर साहि को 'रसिक साम्राज्य धुरीण' कहा गया है—

'**इति सकल कला पारीण रसिक साम्राज्य धुरीण श्री अकब्वर साहि श्रृंगार दर्पणे चतुर्थ उल्लासः।।** श्रृंगार दर्पण, पृ०65'

अकबर ने संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथों का फारसी अनुवाद कराकर शाही दरबार के कुशल चित्रकारों से चित्रांकन भी कराया, जो उसकी कलाप्रियता का साक्षी है। यहाँ पर अकबर द्वारा फारसी में अनूदित सचित्र वाल्मीकि रामायण

की प्रति की महत्ता पर कुछ शब्द लिख देना आवश्यक है। अकबर के नवरत्नों में कविवर रहीम प्रथम रामकथा प्रेमी थे, जिन्होंने बादशाह की अनुमति प्राप्त कर फारसी में अनूदित वाल्मीकि रामायण की अपने लेख विशारदों से प्रतिलिपि कराकर चित्रकारों से चित्रांकित करायी और स्वयं इस प्रति की संक्षिप्त भूमिका का लेखन किया। रहीम की यह प्रति फ्रीयर आर्ट गैलरी वाशिंगटन में सुरक्षित है। इसकी माइक्रोफिल्म भारतीय मनीषा सूत्रम् दारागंज इलाहाबाद के संग्रह में है। रामायण की इस विशेष प्रति के प्रथम पृष्ठ पर रहीम ने भूमिका लिखी है। प्रति के इसी पृष्ठ पर अब्दुल रहीम देलमी की मुहर है। जिस पर 'बंदा-ए-शाहजहां' अंकित है। देलमी शाहजहाँ के समय के श्रेष्ठ कातिब थे। दूसरी मुहर पर उत्कीर्ण है कि नवें जलूस के 26 असफनदार (तुर्की तिथि) को जहाँगीर ने इस किताब को देखा। इन दोनों मुहरों से ज्ञात होता है कि रहीम की रामायण की प्रति उनके अहमदाबाद स्थित पुस्तकालय से शाही कुतुबखाना में आ गयी थी। उल्लेखनीय है अकबर के प्रिय अबुल फजल का कत्ल होने के बाद उसकी पोथियाँ भी शाही कुतुबखाने का हिस्सा बनीं।

सम्राट अकबर के पुस्तक प्रेम के विषय में अधिक लिखने का कारण यह है कि जब बादशाह ही दिल से पुस्तकों का प्रेमी था तो जनता और सरदार-सामंतों की अभिरूचि भी इस ओर बढ़नी स्वाभाविक थी। इसे दैवीय संयोग ही कहा जा सकता है कि अकबर के पचास वर्षीय शासन में साहित्य और संस्कृति खूब पल्लवित हुई। उसके शासनकाल में एक से एक श्रेष्ठ कवि और आचार्य उत्पन्न हुये जिन्होंने श्रेष्ठ ग्रंथ रत्नों की रचना कर सरस्वती का भंडार भरा। ऐसे अनुकूल वातावरण में ब्रज क्षेत्र के अंतर्गत अकबर के शासनकाल में जीव गोस्वामी की पुस्तक ठौर संचालित रही थी, लेकिन एक लम्बे अर्से तक इस संदर्भ में कहीं कोई जानकारी प्रकाशित न हो सकी जिसके चलते अद्यावधि प्रकाशित यह पुस्तक स्वयं में मूल्यवान है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में अकबर से पूर्व भी ग्रंथागार एवं सूचीपत्रों के महत्वपूर्ण संदर्भ मिलते हैं जिनमें जैन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वि०सं०1383 में किसी अज्ञात जैन यती द्वारा तैयार की गई 'वृहत्तपणिका' (सूचीपत्र) का नामोल्लेख मिलता है। जहाँ तक जैन ग्रंथागारों की बात है उनके

प्राचीन ग्रंथालय समृद्ध और सुव्यवस्थित होते थे और आज भी हैं। इसका कारण यह है कि जैनियों के ग्रंथागार पंचायत व्यवस्था के द्वारा संचालित होते हैं। बिना पंचायत के अध्यक्ष की अनुमति के ग्रंथ का दर्शन भी दुर्लभ है। मुझे बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के कुछ जैन ग्रंथागारों को देखने का अवसर सुलभ हुआ है। मेरे मित्र श्री अगरचंद नाहटा, नाहटों की गुवाड़, बीकानेर का संग्रह देखकर मुझे बहुत हर्ष हुआ। उनके पुस्तकालय में एक से एक प्राचीन पांडुलिपियाँ सुरक्षित थीं। कल्पसूत्र की एक सचित्र प्राचीन प्रति सुन्दर लिखावट में लिखी होने से मनमोह लेने में समर्थ थी। नाहटा जी ने मुझे बताया कि हमारे धर्माचार्य श्रुति पंचमी (बसंत पंचमी) के दिन ग्रंथों के वेष्ठन बदलते थे और नये लाल रंग के कपड़े (तूल) में पांडुलिपियों को सुव्यवस्थित ढंग से बाँधकर क्रम से ग्रंथागार में रखते थे।

कर्नल टाड ने 'ट्रैवल्स इन वेस्टर्न इंडिया' ग्रंथ में अनहिल वाड़ा के वर्णन प्रसंग में वहाँ के प्रसिद्ध जैन मंदिर के पोथीखाना का विवरण देते हुए लिखा है कि "**अब हम दूसरे विषय पर आते हैं, वह है- पोथी भंडार अथवा पुस्तकालय जिसकी स्थिति सामने की ओर है, मैंने उसका निरीक्षण किया, उस समय तक यह बिल्कुल अज्ञात था। यह भंडार नये नगर के उस भाग में तहखाने में स्थित है, जिसको सही रूप में अनहिल वाड़ा का नाम प्राप्त है। उसकी स्थिति के कारण यह अल्ला (उद्दीन) की गिद्ध दृष्टि से बचकर रह गया। अन्यथा उसने तो इस प्राचीन अरवार (सरकार) में सभी कुछ नष्ट कर दिया था। यह संग्रह खर तर गच्छ (जैनियों की शाखा) की सम्पत्ति है, जिसमें आम्र और श्री पूज्य थे। मेरी यात्रा के कितने ही दिनों पूर्व मुझे इस भंडार की स्थिति का पता मेरे गुरु जी से लग चुका था और वे भी मेरे ही समान अपने संशय को दूर करने के लिए उत्सुक थे। वहाँ पहुँचते ही वह सबसे पहले भंडार की पूजा करने के लिए जा पहुँचे। यद्यपि उनकी सम्मानपूर्ण उपस्थिति ही कुल्फ (मोहर) उनके लिये पर्याप्त थी परन्तु नगर सेठ की आज्ञा बिना कुछ नहीं हो सकता था। पंचायत बुलायी गयी और उसके समक्ष मेरे यती ने अपनी पत्रावली (पट्टावली) अथवा हेमचंद्र की आध्यात्मिक शिष्य परंपरा में होने का वंश वृक्ष उपस्थित किया। जिसको देखते ही उन लोगों पर जादू सा असर हुआ और उन्होंने गुरुजी को तहखाने में उतरकर युगों पुराने भंडार की पूजा करने के लिये आमंत्रित किया। वहाँ सूची की एक बहुत बड़ी पोथी है और इसको देखकर इन कमरों में भरे हुए ग्रंथों की संख्या का अनुमान मुझे हुआ। उसे प्रगट करने में मुझे अपनी एवं गुरु की सत्यशीलता को संदेह में डालने का भय लगता**

है। ये ग्रंथ सावधानी से संदूकों में रखे हुए हैं जो मुग्द (अगरु) के बुरादे से भरे है। यह मुग्द का बुरादा कीटाणुओं से रक्षा करने का अचूक उपाय है। भंडार को देखकर जब वृद्ध मेरे पास आये तो उनके आनंद की कोई सीमा न थी। (ट्रैवल्स इन वैस्टर्न इंडिया, अनुवादक पं०बलदेव प्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस–मुंबई, सन् 1909 ई०)

ग्यारहवीं शताब्दी में लिखित प्रभाकर चरित्र हेमचंद्र प्रबंध में लेखन प्रक्रिया और ग्रंथागार–निर्माण का विवरण मिलता है। ऐसी भी जानकारी मिलती है कि महाराज सिद्धराज जयसिंह ने तीन सौ लेखकों को नियुक्त करके प्रचुर साहित्य की प्रतिलिपियाँ कराकर राजकीय ग्रंथागार में स्थापित की। इस संदर्भ के अंतर्गत यह भी उद्घाटित होता है कि उस दौरान जब ताड़पत्र समाप्ति पर थे, तब हेमचंद्र ने सिद्धराज से निवेदन किया कि अच्छे ताड़पत्र समाप्ति पर है। अतः इन्हें मँगाने की कृपा करें। उस दौरान अच्छे प्रकार का ताड़पत्र लंका, जावा, सुमात्रा से आता था। इन संदर्भों से ज्ञात होता है कि भारत में पुस्तक लेखन उसके रख–रखाव और सूचीकरण की प्राचीन परंपरा रही है। प्राचीन ग्रंथागारों के सूचीपत्र न प्राप्त होने के कई कारण है– जिनमें कालचक्र के प्रभाव से नष्ट होना प्रमुख है।

प्रस्तुत ग्रंथ में गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर सूचीपत्र पर सविस्तार और सप्रमाण विवरण देने के साथ पुस्तक ठौर को अपनी कृतियों से समृद्धि प्रदान करने वाले आचार्यों के विषय में सूचनायें दी गई हैः साथ ही ब्रज की ग्रंथागार संस्कृति एवं कुछ अप्रकाशित सूचीपत्रों का उल्लेख हुआ है। विशेषकर ब्रज वृन्दावन के अन्य वैष्णव सम्प्रदायों का, यथा– वल्लभ, निम्बार्क, राधावल्लभ, हरिदासी, ललित, चरणदासी (शुक) सम्प्रदाय के आचार्यों एवं उनके शिष्य–प्रशिष्य, कवि, पंडितों द्वारा सृजित संस्कृत और ब्रजभाषा के विपुल ग्रंथों का संक्षिप्त वर्णन पढ़ने को मिलता है। वि०सं०1654 (सन् 1597ई०) में राधादामोदर मंदिर में सुरक्षित पांडुलिपियों के सूचीपत्र का अध्ययन करने पर यह तथ्य उजागर होता है कि सूची निर्माताओं ने बहुत सूझबूझ के साथ, विषयानुसार, क्रम संख्या देते हुए ग्रंथों को अलग–अलग कोथली (वेष्टन) में सुव्यस्थित ढंग से बाँधकर रखा और प्रत्येक कोथली पर क्रमांक भी लिखा,

जिससे पांडुलिपि निकालने में सुविधा हो। जो ग्रंथों के संदर्भ में इस पारंपरिक ध्येय वाक्य का अनुकरण प्रतीत होता है–

जलं रक्षेत्, तैलं रक्षेत्, रक्षेत् शिथिल बंधनम्।
मूर्ख हस्ते न दातव्यं एषं वदति पुस्तकम्॥

कुल 966 पांडुलिपियों का सविधि सूचीपत्र बनाने एवं उसे अद्यतन रखने में पर्याप्त समय एवं सजगता अपेक्षित है। हम तत्कालीन विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते है।

योगेश्वर श्रीकृष्ण की लीलाभूमि में स्थित वृन्दावन शोध संस्थान रमणरेती वृन्दावन अपने स्थापना काल से ही प्राचीन पाण्डुलिपियों का संग्रह, संपादन और प्रकाशन का कार्य निरंतर करता आ रहा है। लगभग पाँच दशक के कार्यकाल में संस्थान के संग्रह में तीस हजार प्राचीन पाण्डुलिपियों का संग्रह होना विशेष महत्त्वपूर्ण है। पाण्डुलिपि संग्रह के साथ संस्थान में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक अभिलेखों (दस्तावेज) का जखीरा अध्येताओं के आकर्षण का केन्द्र हैं। सन् 1976 के दौरान मुझे वाचस्पति गैरोला जी का एक पत्र प्राप्त हुआ था जिसमें उन्होंने मुझे यह अवगत कराया कि वृन्दावन शोध संस्थान के संस्थापक मुझे अपनी संस्था में रखना चाहते है। नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी में सेवाओं के चलते उस समय मेरा यहाँ आना संभव नहीं था। आज भगवत्कृपा से मेरा संस्थान से पुनः साक्षात्कार हुआ। उत्तर भारत में राजे-रजवाड़ों, मठों-मन्दिरों, व्यक्तिगत संग्रहों, विश्वविद्यालयों के ग्रंथागारों में पांडुलिपियों का संग्रह तो है किन्तु पांडुलिपियों से संबंधित प्राचीन सूचीपत्र आज उपलब्ध नहीं हैं। एकमात्र वृन्दावन शोध संस्थान है, जिसके संग्रह में ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर की तत्कालीन पाण्डुलिपियों का सूचीपत्र सुरक्षित अवस्था में है। संस्थान को यह अभूतपूर्व संग्रह वृन्दावन स्थित राधादामोदर मंदिर से प्राप्त हुआ था। वृन्दावन शोध संस्थान ने चैतन्य महाप्रभु के वृन्दावन आगमन के पंचाशत वर्ष पूर्ण होने के मंगल अवसर पर चैतन्य महाप्रभु की परंपरा से जुड़े प्राचीन राधादामोदर मंदिर से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्र एवं अभिलेखों की खोज पर एकाग्र ''ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर और उसकी सूचीपत्रः एक अध्ययन'' नाम से ग्रंथ प्रकाशित करने का शिव-संकल्प लिया है, जो हर्ष का विषय है।

शोधार्थी प्रगति शर्मा ने ग्रंथ को 8 शीर्षकों में विभाजित कर तत्कालीन दुर्लभ लेकिन अब तक अनुद्घाटित सन्दर्भों के साथ अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न दुर्लभ संदर्भों का संकलन स्वयं में अद्भुत है। इस शोध के माध्यम से ब्रजमण्डल की अकबरकालीन अज्ञात पुस्तक ठौर का तत्कालीन परिदृश्य साकार हुआ है। पुस्तक के अंतर्गत प्रायः संदर्भ पहली बार प्रकाशित हुये है, जो पांडुलिपि विज्ञान से जुड़े अध्येताओं के लिए नई उपलब्धि सिद्ध होंगे। प्रस्तुत ग्रंथ में गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर के सूचीपत्र और इसकी समृद्ध परंपरा में योगदान देने वाले आचार्यों के विषय में सूचनायें दी गयी हैं; साथ ही ब्रज की ग्रंथागार संस्कृति एवं कुछ अन्य अप्रकाशित सूचीपत्रों का उल्लेख भी हुआ है। इसी क्रम में लेखिका के द्वारा संकलित 108 उपनिषदों की सूची का प्राचीन पत्रक अपने आपमें बहुत उपयोगी है। ग्रंथ में उल्लिखित कुछ याद्दाश्ती सूचीपत्र भी बड़े काम के है।

मैं वृन्दावन शोध संस्थान के मनीषी निदेशक श्री सतीशचन्द्र दीक्षित जी का आभारी हूँ जिन्होंने महाप्रभु चैतन्य के वृन्दावन आगमन के पंचाशत वर्ष पूर्ण होने पर, पांडुलिपि विज्ञान में अपनी तरह के इस अद्वितीय ग्रंथ के प्रकाशन का पवित्र संकल्प किया है और साथ ही मुझ जैसे घुमक्कड़ व्यक्ति को ग्रंथ के विषय में पुरोवाक् लिखने का सौभाग्य प्रदान किया। ग्रंथ लेखिका प्रगति शर्मा को साधुवाद, जिन्होंने अद्यावधि अविवेचित ग्रंथ लिखकर न केवल चैतन्य महाप्रभु की परंपरा से जुड़े एक अप्रकाशित पक्ष को सर्वविदित किया बल्कि इस विरले कार्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में मूल्यवान योगदान दिया है; जो साहित्य जगत के लिये एक बड़ी देन है।

उदयशंकर दुबे

(उदयशंकर दुबे)
पूर्व साहित्यान्वेषक,
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
सूत्र संयोजक,
भारतीय मनीषा सूत्रम्, दारागंज, प्रयाग

दिनांक : 30.8.2016
साहित्य कुटीर, कठारी बाजार,
पो० खमरिया, जिला-संत रविदासनगर
(उ०प्र०) - 221306

दो शब्द

महाप्रभु चैतन्य की प्रेमाभक्ति की पाठशाला के साधक सनातन गोस्वामी, रूप गोस्वामी, रघुनाथ भट्ट, गोपाल भट्ट, रघुनाथदास गोस्वामी एवं जीव गोस्वामी आदि ने 15-16वीं शताब्दी में ब्रज वृन्दावन को अपनी साधनास्थली बनाया। आज प्रायः लोग नहीं जानते मुगल बादशाह अकबर के शासनकाल में वृन्दावन के राधादामोदर मंदिर में जीव गोस्वामी का अपना भव्य पुस्तकालय था, जो चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी गौड़ीय साधकों के मध्य 'पुस्तक ठौर' के नाम से जाना जाता था। वास्तव में यह पुस्तक ठौर जीव गोस्वामी के द्वारा पाण्डुलिपियों के सृजन, शोध एवं प्रतिलिपिकरण (प्रकाशन) की एक समृद्ध इकाई थी, जिसने उस जमाने में आज के विश्वविद्यालयों की तरह कार्य करते हुये, भारत की ज्ञान सम्पदा (Indology) का संरक्षण एवं परिवर्द्धन किया। जीव गोस्वामी की बौद्धिक प्रतिभा से बादशाह अकबर भी खासा प्रभावित था। अकबर एवं जीव गोस्वामी के मध्य स्थापित सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रमाण वृन्दावन शोध संस्थान में संरक्षित विभिन्न दस्तावेजों से उद्घाटित देखे जा सकते हैं। बादशाह अकबर के द्वारा वैष्णवों को दिये गये भूदान विषयक फरमान हों या इन्हें ग्रंथ लिखने के लिये दिये गये शाही कागज के विवरण, जीव गोस्वामी के कहने से अकबर द्वारा इन्हें बनारस से पुराणों की पोथियाँ मँगाकर दिये जाने का उल्लेख हो या वृन्दावन में रूप गोस्वामी के श्रीविग्रह गोविन्ददेव के लिये मंदिर बनवाने में अकबर के द्वारा मानसिंह के साथ आर्थिक सहयोग के संदर्भ, सभी इन वैष्णव साधकों की बौद्धिक क्षमताओं का महत्व प्रतिपादित करने वाले हैं। अकबर की इस उदार नीति के चलते जीव गोस्वामी ने उन्हें स्वरचना 'गोविन्द मंदिर अष्टक' में आशीर्वाद भी दिया है, जो शिलालेख के रूप में गोविन्द देव मंदिर के गर्भगृह के निकट तथा पाण्डुलिपि के रूप में वृन्दावन शोध संस्थान की धरोहर है। अकबर के प्रति वैष्णव साधकों के सकारात्मक दृष्टिकोण से जुड़े उदाहरण केवल गौड़ीय सन्दर्भों से ही नहीं अपितु ब्रज की अन्य वैष्णव सम्प्रदायों के साहित्य से भी उद्घाटित देखे जा सकते हैं।

गौड़ीय वैष्णवों की इस पुस्तक ठौर (पुस्तकालय) में ग्रंथ सृजन के साथ ही पाण्डुलिपियों के उत्पादन के रूप में नई प्रतिलिपियाँ भी तैयार की जाती थीं। जीव गोस्वामी ने श्रीनिवासाचार्य एवं नरोत्तमदास 'ठाकुर' को इन पाण्डुलिपियों के प्रसारार्थ बंगाल भेजा था। बंगाल एवं ब्रज के मध्य साहित्यिक सामंजस्य को स्थापित करने में जीव गोस्वामी के कृपापात्र श्रीनिवासाचार्य और इनके शिष्य परिकर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। ब्रजबुलि, पदावलियों के सृजन के साथ ही गौड़ीय समाज में कीर्तन की एक नई शैली की स्थापना श्रीनिवासाचार्य के शिष्य परिकर की अपनी विशिष्ट पहिचान है। इनसे सम्बन्धित अनेकों ऐसी पाण्डुलिपियाँ संस्थान के ग्रंथागार में विद्यमान है जो वृन्दावन शोध संस्थान को उसी पुस्तक ठौर से प्राप्त हुई, जहाँ कभी ये महानुभाव साधनारत थे।

भारत में पुरा ग्रंथों के सूचीकरण (Cataloguing) के अभियान का शुभारम्भ अंग्रेजीराज में हुआ। सर विलियम जोन्स के द्वारा वर्तमान कोलकाता (कलकत्ता) में एशियाटिक सोसायटी की स्थापना की गई। इसी के साथ भारत में हस्तलिखित ग्रंथ की खोज तथा उनके सूचीकरण (Cataloguing) जैसे कार्यों को एक नई दिशा मिली बाद में इस कार्य को चार्ल्स विलकिन्स, हेनरी टामस कोलब्रुक, चार्ल्स स्टीवर्ट, डॉ॰बूलर, पं॰राधाकृष्ण, डॉ॰ राजेन्द्रलाल, हरप्रसाद शास्त्री, डॉ॰ सी॰कुन्हनराजा एवं मुनि पुण्य विजय जैसे साधकों ने आगे बढ़ाया। ग्रंथों की खोज एवं उनके सूचीकरण में नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी का वृहद् आंदोलन भी इस दिशा में एक बड़ी उपलब्धि रही। वृन्दावन शोध संस्थान के द्वारा भी वर्ष 1968 में अपनी स्थापना के साथ ही इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किये गये तथा हिन्दी, बंगला एवं संस्कृत पाण्डुलिपियों के कैटलॉग प्रकाशित किये। पाण्डुलिपियों के संरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में अंग्रेजों के द्वारा आरम्भ किया गया यह अभियान वास्तव में ग्रंथों की खोज, उनके संकलन एवं उनके सूचीकरण (Cataloguing) पर एकाग्र था, जिसके लिये उन्होंने न केवल भारत बल्कि इंग्लैण्ड तक विभाग स्थापित किये जहाँ सूचीकरण की परम्परा अपनी तरह से चलती रही।

सूचीकरण की इस प्रविधि से पृथक भारत में कुछ ऐसे प्राचीन सूचीपत्रों की जानकारी भी मिलती है, जो तत्कालीन ग्रंथागारों के अपने निजी सूचीपत्र

(Catalogue) थे, जिनके माध्यम से ग्रंथागार में आने वाले सुधीजन वांछित पोथी के संदर्भ में सहजता से प्राथमिक जानकारी जुटा पाते थे। किन्हीं अज्ञात जैन मुनि के द्वारा 14वीं शताब्दी में तैयार किया गया, सूचीपत्र 'वृहत्पर्णिका' हो या मुगल बादशाह शाहजहाँ के समय विद्यमान कवीन्द्राचार्य के ग्रंथागार का सूचीपत्र, ये भारत में इस परम्परा का महत्त्व प्रकट करने वाले सन्दर्भ हैं। सन् 1919 ई० में ऑल इण्डिया ऑरियण्टल कांफ्रेन्स के दौरान पूना (महाराष्ट्र) में जब कवीन्द्राचार्य के सूचीपत्र पर केन्द्रित शोधपत्र सर्वविदित हुआ तो पाण्डुलिपि अध्ययन की परम्परा में इसे एक बड़ी उपलब्धि माना गया। इसके बाद एक लम्बी अवधि तक किसी नये सूचीपत्र की खोज की दिशा में कोई जानकारी नहीं मिलती है। आलोच्य विषय इसी दिशा में एक नई उपलब्धि है, जिस पर अब तक अध्येताओं का ध्यान ही नहीं गया। वृन्दावन शोध संस्थान में विद्यमान गौड़ीय वैष्णव साधकों का यह सूचीपत्र इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि यह कवीन्द्राचार्य से भी अधिक प्राचीन अकबर के काल का है।

वृन्दावन के राधादामोदर मंदिर में विद्यमान गौड़ीय वैष्णवों की 'पुस्तक ठौर' (ग्रंथागार) एक जमाने में जीव गोस्वामी का अपना कार्यालय भी था। जहाँ पाण्डुलिपियों के साथ ही उनका तत्कालीन राजकीय पत्राचार भी संरक्षित था। आमेर जयपुर रियासत से जुड़े विभिन्न दस्तावेजों के साथ ही अकबर के शाही फरमान भी यहाँ संरक्षित रहे। कालांतर में इस मंदिर का संग्रह वृन्दावन शोध संस्थान को प्राप्त होने से यह दुर्लभ सामग्री भी संस्थान के ग्रंथागार में आ गई। उल्लेखनीय है कि गौड़ीय वैष्णवों ने अपनी समृद्ध 'पुस्तक ठौर' का सूचीपत्र भी बनाया हुआ था जिससे ज्ञात होता है कि यह ग्रंथागार पुराण, दर्शन, व्याकरण, उपनिषद्, निज ग्रंथ, काव्य एवं नाटक आदि शीर्षकों की पाण्डुलिपियों में विभक्त था। ये ग्रंथ शीर्षक के अनुरूप अलग-अलग कोथलियों में रखे जाते थे। इतना ही नहीं यह 'पुस्तक ठौर' एक उत्तराधिकारी से दूसरे उत्तराधिकारी के मध्य हस्तांतरित भी होती थी। जिससे जुड़े कई दस्तावेजों का संयोजन प्रस्तुत कार्य अन्तर्गत यथास्थान किया गया है।

वृन्दावन शोध संस्थान के ग्रंथागार में 30,000 से अधिक पाण्डुलिपियों के साथ ही प्राचीन ऐतिहासिक दस्तावेजों का विपुल संग्रह है। संस्कृत, हिन्दी

एवं बंगला की एक्सेशन की गई 23993 पाण्डुलिपियों के सूचीकरण कार्य के सर्वेक्षण के साथ ही ग्रंथागार में उपलब्ध 223 दस्तावेजों का सर्वेक्षण कार्य करने के उपरान्त मेरे द्वारा विषय सम्मत सामग्री का चयन किया गया। पुस्तक आठ अध्यायों में विभाजित है। जिन्हें क्रमानुसार विषय के **महत्त्व और उपयोगिता, भारत में सूचीकरण की परम्परा का क्रमिक विकास, गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर और ऐतिहासिक सन्दर्भ, पुस्तक ठौर का सूचीपत्रः एक दृष्टि, संवर्द्धक आचार्य एवं उनकी रचनायें, ब्रज की ग्रंथागार संस्कृति एवं कुछ अप्रकाशित सूची पत्र, पुस्तक ठौर का सूचीपत्र एवं छायाचित्र** आदि शीर्षकों के अंतर्गत विभक्त किया गया है।

"**ब्रज की सांझीकला के दुर्लभ ऐतिहासिक संदर्भ**" विषयक अपने कार्य के दौरान संस्थान में विद्यमान इन संदर्भों ने मुझे इस कार्य के लिये प्रेरित किया। हस्तलिखित पाण्डुलिपियों से संदर्भ संकलन समय साध्य कार्य है। संस्थान के निदेशक श्री सतीशचन्द्र दीक्षित एवं ग्रंथागार प्रभारी डॉ० ब्रजभूषण चतुर्वेदी जी ने मनोयोग से इस कार्य में मेरी सहायता की है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ०कृष्णचन्द्र गोस्वामी, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान के सचिव लक्ष्मीनारायण तिवारी, वरिष्ठ पाण्डुलिपिविद् पं०उदयशंकर दुबे, आचार्य श्रीदामा किंकर एवं विभुकृष्ण भट्ट के विषय सम्मत सुझावों से ही यह पुस्तक इस कलेवर को प्राप्त कर सकी है। सहधर्मी डॉ०राजेश शर्मा ने विषय केन्द्रित सन्दर्भ सामग्री संकलन में मेरे ही समान श्रम किया है। पुस्तक के टंकण में श्री कृष्ण कुमार मिश्रा का सहयोग सराहनीय है। पाण्डुलिपियों एवं दस्तावेजों का वृहद् सर्वेक्षण, ग्रंथागार के ग्रंथ सेवी अशोक दीक्षित के सहयोग के बिना इतने कम समय में सम्भव ही न था। इसी के साथ संस्थान के छायाकार श्री उमाशंकर पुरोहित, जुगल शर्मा, श्रीकृष्ण गौतम एवं करवेन्द्र सिंह ने भी इस कार्य के निमित्त उदार मन से बहु विधि सहयोग किया है। एतदर्थ सभी का आभार।

प्रगति शर्मा
नृसिंह मंदिर के सामने, अठखम्भा, वृन्दावन

अनुक्रम

ब्रज की अकबरकालीन पुस्तक ठौर
और
उसका सूची पत्र (Catalogue)
[एक अध्ययन]

महत्त्व एवं उपयोगिता –

भारत में ग्रंथागारों की परम्परा काफी प्राचीन एवं समृद्ध रही है। प्राचीन भारत में नालंदा, तक्षशिला एवं जैन ग्रंथागारों के साथ ही विभिन्न रजवाड़ों के ग्रंथागारों की दीर्घ परम्परा देखी जा सकती है। आक्रांताओं के हमले, कीटभक्षण, समयचक्र के प्रभाव एवं अन्य-अन्य कारणों से यह बहुमूल्य सम्पदा नष्ट भी हुई लेकिन इसका महत्त्व समझने वाले सुधीजनों के सद्प्रयासों से समय-समय पर यह धरोहर संरक्षित भी होती रही जिसके प्रमाण आज भारत के विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथागारों में विद्यमान पाण्डुलिपि सम्पदा के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

किसी भी व्यवस्थित ग्रंथागार की कुञ्जी उसका सूचीपत्र (Catalogue) होता है। जिसके माध्यम से पुस्तकालय में आने वाले सुधीजन वांछित पुस्तक तक अपनी पहुँच सहजता से बना पाते हैं। यही बात अगर उस परिदृश्य पर केन्द्रित की जाय जब मुद्रण तकनीकी अस्तित्व में नहीं थी। सरकण्डे अथवा नेजे की कलम से पारम्परिक विधि द्वारा तैयार स्याही से खुले पत्रों के रूप में पाण्डुलिपि को तैयार किया जाता था, तथा स्याही सूखने तक इन पत्रों को अलग ही रखते थे। यद्यपि उस दौरान पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपियाँ करने वाला वर्ग भी विद्यमान था, जो लिखिया अथवा सुलेखक कहलाते थे। फिर भी ऐसी कष्टसाध्य प्रक्रिया से जब एक पोथी तैयार करना ही मुश्किल कार्य था उस दौरान पुस्तकालय की स्थापना किसी आश्चर्य से कम नहीं और इससे

भी आश्चर्यकारी बात वर्तमान में ऐसे प्राचीन पोथीखानों के सूचीपत्रों (Catalogue) की उपलब्धि है।

अंग्रेजीराज के साथ ही भारत में पाण्डुलिपि ग्रंथागारों के संरक्षण एवं इनके सूचीकरण की दिशा में चेतना आई, जिसमें यूरोपियन विद्वानों के साथ ही भारतीय विद्वानों ने भी इस क्षेत्र में सार्थक कार्य किये। परिणामस्वरूप न केवल भारत बल्कि यूरोप से भी उस दौरान प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीकरण कार्य प्रकाशित हुए जिसकी परम्परा अद्यतन देखी जा सकती है। किन्हीं अज्ञात जैन मुनि के द्वारा चौदहवीं शताब्दी में तैयार किया गया सूचीपत्र 'वृहत्त्पणिका' हो या मुगल बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में विद्यमान कवीन्द्राचार्य के बनारस में स्थित पोथीखाने का सूचीपत्र सभी अपने जमाने की बौद्धिक परिस्थितियों का बोध कराने वाले हैं। सूचीपत्रों (Catalogue) के रूप में प्राप्त पाण्डुलिपियां सहजता से दर्शित नहीं होती। सन् 1919 ई. में पूना (महाराष्ट्र) में आल इण्डिया ओरियंटल कांफ्रेन्स के दौरान जब पहली बार आर.ए.शास्त्री के शोधपत्र के माध्यम से कवीन्द्राचार्य के ग्रंथागार का सूचीपत्र (Catalogue) प्रकाश में आया तो इसे Indology से जुड़े एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ के रूप में देखा गया। उस जमाने में इसके महत्त्व को समझते हुए गायकवाड़ ओरियंटल सीरिज में इसे प्रकाशित भी किया गया।

यद्यपि कवीन्द्राचार्य के सूचीपत्र के बाद वर्ष 2016 तक 97 वर्षों की लम्बी अवधि के दौरान इस सन्दर्भ में कोई चर्चा नहीं मिलती तथापि ऐसा नहीं कि प्राचीन सूचीपत्रों के रूप में उपलब्ध पाण्डुलिपियां आज बिल्कुल उपलब्ध ही नहीं। प्रस्तुत कार्य इस दिशा में एक नई एवं महत्त्वपूर्ण कड़ी है जिसकी ओर अब तक अध्येताओं का ध्यान ही नहीं गया। वृन्दावन शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रंथागार में विद्यमान यह दुर्लभ रत्न सूचीपत्रों के अध्ययन की परम्परा में इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि यह शाहजहाँकालीन कवीन्द्राचार्य सरस्वती के सूचीपत्र से भी अधिक प्राचीन बादशाह अकबर के शासनकाल का है।

महाप्रभु चैतन्य की परम्परा से जुड़े ब्रज-वृन्दावन के गौड़ीय वैष्णव साधक अपने ग्रंथागार को पुस्तक ठौर शीर्षक से सम्बोधित करते थे। उन्होंने वि.सं. 1654 में अपनी इस पुस्तक ठौर का सूचीपत्र तैयार किया था। सन्दर्भों के अनुसार वृन्दावन के इस ग्रंथागार में पोथियों के विस्तार के लिये इन्हें कागज की आपूर्ति भी शाही दरबार से हुई और एक पीढी से दूसरी पीढ़ी के हाथ इसका हस्तांतरण भी होता रहा, इससे जुड़े कई प्राचीन दस्तावेज संस्थान में विभिन्न क्रमांकों पर विद्यमान है, जिनका संयोजन प्रस्तुत कार्य के अंतर्गत सन्दर्भों के रूप में यथास्थान किया गया है। ब्रज क्षेत्र में भक्ति साहित्य के संवर्द्धन एवं संरक्षण की यह चर्चा इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि उस जमाने में जब सीकरी में स्वयं बादशाह अकबर सत्ता संचालन के साथ ही साहित्यिक गतिविधियों में रूचि ले रहा था, और उसने भी अपना पुस्तकालय स्थापित किया हुआ था। वहीं यहाँ से 60 कि.मी. की दूरी पर वृन्दावन में मधुकरी करके भजन साधना करने वाला यह विरक्त संत समुदाय समर्पण भाव से अपने इस अभिलेखागार को समृद्ध बनाने में व्यस्त था। 15-16 वीं शताब्दी के दौरान श्रीकृष्ण की लीलास्थली ब्रजमण्डल से भक्ति का जो ज्वार उठा, उसने पूरे भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य को गहरे तक प्रभावित किया, ब्रज में संचालित अन्य वैष्णव सम्प्रदायों की भाँति तत्कालीन दौर में यहाँ चैतन्य महाप्रभु की परम्परा से सम्बद्ध उनके शिष्य-प्रशिष्यों ने भक्ति साहित्य को नव आयाम प्रदान किये। रूप, सनातन, रघुनाथदास, रघुनाथ भट्ट, गोपाल भट्ट एवं जीव गोस्वामी जैसे महान साधकों के नाम इस दिशा में अग्रणी हैं।

गौड़ीय सम्प्रदाय के साहित्यिक धरातल को दृढ़ता प्रदान करने एवं विस्तारित करने का श्रेय जीव गोस्वामी को प्राप्त है। भक्तमाल के प्रसिद्ध रचनाकार नाभादास ने भी उनका स्मरण इसी वैशिष्ट्य के साथ किया है। 16वीं शताब्दी में जीव गोस्वामी ने अपने इष्ट विग्रह राधादामोदर की सेवा करते हुए अपनी पुस्तक ठौर (ग्रंथागार) को भी संभाले रखा था। जिसमें उनका तत्त्कालीन राजकीय पत्राचार भी संरक्षित था। अकबरी दरबार में जीव गोस्वामी का प्रभाव

इस बात से प्रमाणित होता है कि बादशाह ने इन्हें जमीन दान देते हुए इनके नाम फरमान भी जारी किया, जिसकी एक प्रति राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली में तथा उस जमाने में की गई फरमान की नकलें एवं विविध प्रकार के पत्राचार वृन्दावन शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रंथागार में संरक्षित हैं। यह जीव गोस्वामी का अपनी पुस्तक ठौर पुस्तकालय के प्रति लगाव ही था कि उन्होंने अपनी संकल्प पत्री (वसीयत) में भी अपनी पुस्तकों के रख-रखाव के लिये आवश्यक निर्देश दिये। इस संकल्प पत्र की मूल प्रति संस्थान में उपलब्ध है जिसे वि.सं. 1663 में गदाधर भट्ट ने लिखा था।

कालांतर में जीव गोस्वामी की साधनास्थली राधादामोदर मंदिर का कुछ संग्रह वृन्दावन शोध संस्थान को प्राप्त हुआ जिससे तत्कालीन मूल्यवान सामग्री भी इस संग्रह के साथ संस्थान को प्राप्त हुई। प्रस्तुत कार्य जीव गोस्वामी के द्वारा वृन्दावन में स्थापित उस अकबर कालीन अभिलेखागार से जुड़े दुर्लभ सूचीपत्र (Catalogue) के अध्ययन पर एकाग्र है, जिसके माध्यम से तत्कालीन दौर में आने वाले सुधीजन इस पुस्तकालय की पाण्डुलिपियों तक अपनी पहुँच बना पाते होंगे। प्रस्तुत कार्य के माध्यम से मेरा उद्देश्य Indology के अध्ययन में ब्रज के बिखरे पड़े इन सन्दर्भों को एक सूत्र में पिरोते हुए इस तरह प्रस्तुत करना है कि सुधीजन ब्रज की ज्ञान परम्परा के तत्त्कालीन महत्व के साथ ही ब्रज संस्कृति के इस उपेक्षित किन्तु मूल्यवान पक्ष से भी साक्षात्कार कर सकें।

भारत में सूचीकरण (Cataloguing) की परम्परा का क्रमिक विकास —

पाण्डुलिपियों के अध्ययन की कई दृष्टियाँ हैं लेकिन किसी भी हस्तलिखित ग्रंथागार के सूचीपत्र के रूप में उपलब्ध पोथी अन्य पाण्डुलिपियों से इतर अपने देशकाल तथा वातावरण से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देती है। वास्तव में सूचीपत्रों के रूप में प्राप्त पाण्डुलिपियों की संख्या आज नगण्य है। जिसका एक कारण यह भी है कि केवल ग्रंथागार के लिये उपयोगी होने के चलते इनकी प्रतिलिपियाँ तैयार नहीं की गई। वास्तव में किसी भी ग्रंथालय का सूचीपत्र वहाँ की पुस्तक तक पहुँचने की वैज्ञानिक प्रविधि है जिसकी परम्परा भारत में काफी पूर्व से मिलती है। हस्तलिखित ग्रंथागारों के प्राप्त सूचीपत्रों की श्रृंखला में "वृहत्तपणिका" का नाम सर्वविदित है जिसे संवत् 1383 में किसी अज्ञात जैन मुनि द्वारा तैयार किया गया था।

इसी क्रम में एक अन्य नाम शाहजहाँ के काल में विद्यमान बनारस के विद्वान कवीन्द्राचार्य का है। इनके ग्रंथागार की 2192 पाण्डुलिपियों के सूचीपत्र की जानकारी नवम्बर 1919 ई. में पूना में आल इण्डिया ओरियंटल कांफ्रेंस के दौरान आर.ए.शास्त्री द्वारा प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से प्रकाश में आई और इसे गायकवाड़ ओरियंटल सीरिज में प्रकाशित भी किया गया। कवीन्द्राचार्य अपने जमाने के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व थे। शाहजहाँ के समय प्रयाग एवं बनारस से धार्मिक कर हटाये जाने की मुहिम भी उनके द्वारा चलाई गई। बादशाह की ओर से उन्हें 'सर्वविद्या निधान' की उपाधि भी प्रदान की गई थी।[1] उस दौरान भारत यात्रा पर आये फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने भी इनके समृद्ध ग्रंथागार का उल्लेख किया है।[2] पाण्डुलिपि जगत से जुड़े अध्येताओं के साथ पुस्तकालय विज्ञान के शोध अध्येताओं के लिये कवीन्द्राचार्य के हस्तलिखित ग्रंथागार का सूचीपत्र

---

1. द कवीन्द्राचार्य लिस्ट – आर.ए.शास्त्री।
2. (क) बर्नियर की भारतयात्रा अनुवादक बाबू गंगा प्रसाद गुप्त, बाबूराम वर्मा, पृ. 236
   (ख) काशी का इतिहास – डॉ. मोतीचन्द, पृ. 315

जिज्ञासा का विषय रहा है, जिससे भारत में तत्कालीन ग्रंथ व्यवस्था एवं विषय वर्गीकरण के साथ ही कई दुर्लभ तथ्य उद्‌घाटित होते हैं।

इसी शृंखला में वृन्दावन के वैष्णव साधकों द्वारा स्थापित प्राचीन पुस्तकालय तथा उसका सूचीपत्र उल्लेखनीय है जिसकी चर्चा साहित्य जगत में नहीं मिलती। 16वीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी साधकों के द्वारा इसे पुस्तक ठौर नाम से सम्बोधित किया गया। वृन्दावन शोध संस्थान में क्र. 5425 पर विद्यमान वि.सं. 1654 का यह सूचीपत्र भारत विद्या (Indology) की महत्त्वपूर्ण निधि है। दुर्भाग्यवश वृन्दावन की अकबरकालीन इस पुस्तक ठौर का सूचीपत्र अब तक सुधीजनों के मध्य प्रकाश में न आ सका। प्रस्तुत कार्य के अन्तर्गत न केवल इस सूचीपत्र को अपितु वृन्दावन में विद्यमान गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर से सम्बन्धित कई ऐसे मूल्यवान सन्दर्भों को भी संयोजित किया गया हैं जो अब तक ब्रज संस्कृति के अध्ययन में उपेक्षित ही रहे हैं। उल्लेखनीय है कि ब्रज क्षेत्र में गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के साथ ही यहाँ स्थापित निम्बार्क, वल्लभ, राधावल्लभ, हरिदासी एवं ललित आदि वैष्णव सम्प्रदायों से संबद्ध देवालयों के अपने समृद्ध ग्रंथागार रहे जहाँ विपुल मात्रा में पांडुलिपियां विद्यमान थीं। कालांतर में विभिन्न कारणों से जहां कुछ संग्रह शाखा-उप-शाखाओं में विभक्त हुआ वहीं कुछ सामग्री देश-विदेश के विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथागारों तक पहुंची।

भारत में अंग्रेजीराज की स्थापना के उपरान्त पाश्चात्य विद्वानों का ध्यान प्राचीन पाण्डुलिपियों तथा इनके सूचीकरण (Cataloguing) की ओर आकृष्ट हुआ और उन्होंने रूचिपूर्वक यहाँ की पाण्डुलिपियों का महत्त्व समझते हुए प्राचीन ग्रंथों का संकलन एवं उनका सूचीकरण आरम्भ किया। सर विलियम जोन्स पहले अंग्रेज थे जिन्होंने यत्नपूर्वक संस्कृत का अध्ययन किया। इन्होंने गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स की सहायता से कलकत्ता (कोलकता) में 15 जनवरी सन् 1784 ई. में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की और इसी के साथ भारत में हस्तलिखित ग्रंथों की खोज के अभियान का शुभारम्भ हुआ। इसी दौरान सर विलियम जोन्स और उनकी पत्नी श्रीमती जोन्स के संयुक्त प्रयासों से एशियाटिक सोसाइटी लंदन के द्वारा संस्कृत के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची का

प्रथम प्रकाशन हुआ। जोन्स साहब के बाद चार्ल्स विलकिन्स ने भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किये। इसी क्रम में हेनरी टामस कोलब्रुक एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के सभापति नियुक्त हुए। इण्डिया ऑफिस लंदन के ग्रंथागार को स्थापित करने और उसका सूचीपत्र तैयार करने का श्रेय हेनरी साहब को है। यह सूचीपत्र कई विद्वानों द्वारा अलग-अलग खण्डों में प्रकाशित होकर सम्पादित हुआ है। भारत से जाने के उपरान्त उन्होंने इंग्लैण्ड में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की, जिससे पाश्चात्य विद्वानों के मध्य संस्कृत एवं ब्रजभाषा का प्रचार-प्रसार हुआ।

मैसूर के टीपू सुल्तान का भी अपना समृद्ध ग्रंथागार था, जिसमें अरबी, फारसी एवं हिन्दुस्तानी भाषा की प्राचीन पोथियां थीं। अंग्रेजों से टीपू की पराजय के चलते शीघ्र ही इसका नियंत्रण अंग्रेजों के हाथ में आ गया। पुस्तकालय की दुर्लभ पांडुलिपियों से प्रभावित होकर जनरल चार्ल्स स्टीवर्ट ने "ए डिस्क्रिप्टिव कैटलॉग आफ द ओरियंटल लाइब्रेरी ऑफ द लेट टीपू सुल्तान आफ मैसूर" कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस से 1809 ईसवी में प्रकाशित कराया इसी तरह देश की अलग-अलग रियासतों के रजवाड़ों तथा अंग्रेज अधिकारियों ने इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किये।

पाण्डुलिपियों की खोज तथा सूचीकरण के इस अभियान में भारत विद्या के प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर के शिष्य डॉ० बूलर का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनके द्वारा बर्लिन विश्वविद्यालय के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची तैयार की गई सन् 1868 ई. में लाहौर के पं० राधाकृष्ण के प्रस्ताव को स्वीकार करके ब्रिटिश सरकार ने संस्कृत पाण्डुलिपियों की खोज के लिये एक स्वतंत्र विभाग की स्थापना की इस विभाग के द्वारा पुरा-ग्रंथों की खोज तथा सूचीकरण की दिशा में व्यापक कार्य हुए। सन् 1869 में डॉ० आफ्रेट ने कैम्ब्रिज विवि. के संग्रह का विवरणात्मक सूचीकरण कार्य सम्पन्न किया तथा 1895 ई० में डॉ० बूलर की खोज विवरणिका प्रकाशित हुई। सूचीकरण की इस प्रक्रिया में डॉ० राजेन्द्रलाल मिश्र और डॉ० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा सन् 1871-1890 के मध्य

11 खण्डों में प्रकाशित "नोटिसेज ऑफ संस्कृत मैन्युस्क्रिप्ट्स" अपना विशेष स्थान रखती है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक भारत में जितनी सूचियाँ तैयार थी, डॉ॰ आफ्रेट ने उन्हें दो भागों में विभक्त करते हुए वृहत् ग्रंथ सूची तैयार की जो वास्तव में '**सूची ग्रंथों की सूची**' थी और इसे कैटलॉग्स कैटलागारम नाम से सम्बोधित किया गया। इसी का परिवर्द्धित संस्करण डॉ॰ सी॰ कुन्हनराजा और डॉ॰ वी॰ राघवन के संयुक्त प्रयास से न्यू कैटलाग्स कैटलागारम नाम से मद्रास वि.वि. से प्रकाशित हुआ। इसी के साथ म्योनोर बैस्टर मैन द्वारा चार जिल्दों में तैयार की गई "ए वर्ल्ड बिब्लिओग्राफी आफ बिब्लोग्राफीज" ग्रंथ भी काफी महत्त्वपूर्ण है। वर्ष 1891 में कलकत्ता में इम्पीरियल रिकार्ड की स्थापना भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास रहा। जब कलकत्ते से राजधानी दिल्ली आयी तो यह अभिलेखागार भी यहाँ स्थानांतरित हुआ जो आज राष्ट्रीय अभिलेखागार के रूप में कार्यरत है। जौलाई 1893 में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना के साथ ही भारत में पाण्डुलिपियों की खोज तथा इनके सूचीकरण का कार्य तीव्रता से हुआ। पुराग्रंथों की खोज तथा इस दिशा में वृहद सूचीकरण के लिए मुनि पुण्यह्लविजय का योगदान भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। 1960 ईसवीं के दौरान राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना इस दिशा में सकारात्मक प्रयास था, जिसका राजस्थान में बिखरी पड़ीं बहुमूल्य ग्रंथ सम्पदा के संरक्षण में विशिष्ट योगदान है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के द्वारा भी इस दिशा में समय-समय पर सार्थक प्रयास किये गये।

इसी दौरान उत्तर भारत के ब्रज क्षेत्र में पांडुलिपियों के संरक्षण प्रकाशन एवं सूचीकरण की दिशा में वृन्दावन शोध संस्थान के संस्थापक डॉ.रामदास गुप्त का नाम अविस्मरणीय है। लंदन में प्राच्यविद्या के प्रोफेसर रहे डॉ.गुप्त ने सन् 1968 में अपनी वृन्दावन में स्थित पुश्तैनी धर्मशाला में इस संस्थान की आधारशिला रखी और ब्रज क्षेत्र में मुहिम चलाकर नष्ट होती पाण्डुलिपि सम्पदा को संरक्षित करने का बीड़ा उठाया लगभग 30,000 से अधिक पाण्डुलिपियों के संग्रह वाले इस संस्थान के द्वारा न केवल हिन्दी-संस्कृत बल्कि गुरूमुखी एवं बंगला लिपि के कैटलाग भी प्रकाशित कराये गये हैं। संस्थान का पहला कैटलाग सन् 1976 में प्रकाशित हुआ।

गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर और ऐतिहासिक सन्दर्भ—

ब्रजभाषा में ठौर शब्द का अभिप्राय स्थान से है। इस तरह पुस्तक ठौर का अर्थ है वह स्थान जहाँ पुस्तकों का संग्रह हो। 16वीं शताब्दी में चैतन्य महाप्रभु की प्रेमपरक शिक्षाओं से प्रेरित जिन साधकों ने ब्रज को अपनी साधनास्थली बनाया उनमें सनातन गोस्वामी, रूप गोस्वामी, रघुनाथ भट्ट, रघुनाथदास गोस्वामी एवं जीव गोस्वामी के साथ ही इस परम्परा से सम्बद्ध ऐसे अनेक साधकों के नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने यहाँ साधनारत रहते हुए पूजन–आराधन के साथ ही भक्ति साहित्य को एक नई दिशा दी। कालांतर में वृन्दावन का राधादामोदर मंदिर गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र बना। जिसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी षड गोस्वामियों में एक जीव गोस्वामी ने यहीं भजन साधना करते हुए एक जमाने में गोविन्द देव तथा मदनमोहन जैसे भव्य देवालयों का प्रभार इस देवालय से संभाले रखा था। जीव गोस्वामी ने यहीं अनेक ग्रंथों की रचना करते हुए एक भव्य पुस्तकालय भी स्थापित किया हुआ था। जिसे ये लोग पुस्तक ठौर कहते थे।[3] **(चित्र–5, पृ॰ 111)** इस पुस्तक ठौर में अनेक पुराण एवं विभिन्न विषयों की पोथियों के साथ ही रूप एवं सनातन गोस्वामी जैसे दिग्गज साधकों की पोथियाँ भी संरक्षित थीं। इतना ही नहीं अपने इस समृद्ध ग्रंथागार को इन साधकों ने सुव्यवस्थित करते हुए यहाँ की पाण्डुलिपियों को पुराण, दर्शन, व्याकरण एवं निज ग्रंथ[4] जैसे शीर्षकों से वर्गीकृत भी कर रखा था।

3. वृन्दावन में गौड़ीय वैष्णवों के ग्रंथागार में पुस्तकों की विद्यमानता के संकेत कई प्राचीन दस्तावेजों से मिलते हैं, जिसमें पुस्तक, पुथी पत्रा एवं पोथी संग्रह शीर्षक से इन्हें सम्बोधित किया गया है। वि.सं. 1694 का एक दस्तावेज तथा जो वृन्दावन शोध संस्थान के द्वारा An early testamentary document in Sanskrit शीर्षक प्रकाशन के अन्तर्गत प्लेट–3 पर प्रकाशित है तथा जिसे ताराचन्द्र मुखर्जी और जे.सी. राइट ने सम्पादित किया है, में इस संग्रह को गौड़ीय वैष्णवों ने पुस्तक ठौर शीर्षक से सम्बोधित करते हुए इस पुस्तक ठौर के हस्तांतरण की परम्परा का भी उल्लेख किया है। चित्र–5
4. स्व–सम्प्रदाय अर्थात् गौड़ीय मान्यता के अनुसार अपने पूर्व आचार्य–संतों के द्वारा सृजित पोथियों को, सूचीपत्र (Catalogue) के अन्तर्गत निज ग्रंथ कहकर सम्बोधित किया गया है।

वास्तव में मुगल बादशाह अकबर की जीव गोस्वामी के प्रति श्रद्धा के प्रतिफल में इस अभिलेखागार को पल्लवित होने का अनुकूल अवसर मिला। बादशाह अकबर की वृन्दावन के गौड़ीय साधकों के प्रति श्रद्धा राजा टोडरमल के कारण थी। यही कारण है कि जीव गोस्वामी के नाम फरमान जारी करते समय टोडरमल का नामोल्लेख भी बादशाह के द्वारा जारी फरमान में मिलता है।[5] **(चित्र-2, पृ॰ 109)** अकबर के दरबार में जीव गोस्वामी के प्रति सम्मान एवं श्रद्धा को दर्शाने वाला एक अन्य सन्दर्भ ब्रजभाषा की रचना ''वैष्णवदास कौ टिप्पण''[6] से देखा जा सकता है। परिचई परम्परा के अन्तर्गत रचित इस भक्तमाल में गौड़ीय साधक वैष्णव दास, जो नाभादास की भक्तमाल पर भक्तिरस बोधिनी टीका करने वाले प्रियादास के नाती थे, ने लिखा है कि एक बार बादशाह अकबर के दरबार में गंगा और यमुना की श्रेष्ठता को लेकर विवाद हुआ। बहस में कोई निर्णय न बनता देख दरबारियों ने जीव गोस्वामी का नाम सुझाया लेकिन जीव गोस्वामी का यह नियम था कि वे ब्रज-वृन्दावन से बाहर नहीं जाते थे। काफी अनुनय-विनय करने पर वे इस बात पर राजी हुए कि सूर्यास्त से पूर्व वृन्दावन आ जायेंगे। इस शर्त के अनुसार बादशाह की ओर से जीव गोस्वामी के लिये गाड़ी का प्रबन्ध कराया गया और वे शाही दरबार में उपस्थित हुए तथा गंगा एवं यमुना के महत्व को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने शास्त्रोक्त प्रमाण दिये। जीव गोस्वामी के विचारों से बादशाह काफी प्रभावित

---

5. संस्थान में क्र.1 (A) पर संकलित बादशाह अकबर का फरमान।
6. वि.सं. 1650-60 के मध्य रामानन्द सम्प्रदाय के नाभादास जी के द्वारा भक्तमाल की रचना के बाद वि. सं.1769 में इस पर वृन्दावन के गौड़ीय साधक प्रियादास जी द्वारा भक्तिरसबोधिनी टीका लिखी गई। कालांतर में प्रियादास के नाती वैष्णवदास ने अपने बाबा प्रियादास की टीका पर एक उप टीका बनाई जो 'वैष्णवदास कौ टिप्पण' के नाम से जानी गई। वृन्दावन के प्रसिद्ध इतिहासकार गोपालराय ने अपनी अप्रकाशित पाण्डुलिपि वृन्दावनधामानुरागावली में इस टिप्पण का उल्लेख किया है। हालाँकि इसे प्रियादास की टीका की भाँति ख्याति प्राप्त न हो सकी। वर्तमान में इसकी प्रति उपलब्ध नहीं है।

हुआ और उसने कुछ द्रव्य देना चाहा लेकिन जीव गोस्वामी ने मना कर दिया। जब बादशाह ने कुछ दिये जाने के निमित्त पुनः-पुनः आग्रह किया तो जीव गोस्वामी ने कहा अगर कुछ देना चाहते हो तो मुझे बनारस से पुराणों की पोथियाँ मँगाकर दी जाय। उल्लेखनीय है कि जीव गोस्वामी की पुस्तक ठौर के इस सूचीपत्र में भी पुराण प्रचुर मात्रा में दृष्टिगोचर होते हैं।[7]

अकबर की वृन्दावन के इन साधकों के प्रति निष्ठा ने इतिहास रचा। ब्रज संस्कृति के अध्ययन में जिसका अपना एक विशिष्ट स्थान है। बादशाह के शासनकाल के 34वें वर्ष वि.सं. 1647 में अकबर के सेनापति एवं दरबारी नवरत्न मानसिंह के द्वारा यहाँ गोविन्द देव का भव्य मंदिर बनवाया गया[8] तथा बादशाह की ओर से मदनमोहन एवं गोविन्द देव के नाम जमीन दान करते हुए फरमान जारी किये गये। ऐतिहासिक सन्दर्भों से पता चलता है कि मानसिंह के द्वारा खर्च की गई राशि के अलावा मंदिर निर्माण के दौरान बादशाह अकबर की ओर से भी 8-10 लाख रूपये व्यय किये गये।[9] अकबर की इस उदारवादी नीति से जीव गोस्वामी भी प्रभावित थे। जीव गोस्वामी की रचना गोविन्द मंदिर अष्टक में इस बात का उल्लेख मिलता है। मंदिर निर्माण के दौरान इसे गर्भगृह की दाँयीं चौखण्डी पर उत्कीर्ण भी कराया गया। अष्टक के एक श्लोक में जीव गोस्वामी बादशाह को आशीर्वाद देते नजर आते हैं—

श्रीमानकर्वरो यदा भुवमपात् सर्वा विसर्गादसौ।
सर्वसौख्यमवाप सज्जनगणः स्वं धर्मच्चैर्भजन॥
श्रीगोविन्द पदं तदेतदपि तदवासाय सदवैष्णवा।
लम्भं लम्भमहोसुखेन ददते तस्मै सदैवाशिषः॥

---

7. पुस्तक ठौर के इस सूचीपत्र में विभिन्न पत्रकों पर पुराणों की कोथलियों का उल्लेख है।
8. ब्रज के शिलालेख भाग-1, गोविन्ददेव मंदिर का शिलालेख - डॉ.राजेश शर्मा, पृ. 5, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान।
9. ...राजा मानसिंह ने उस सरकार (बयाना सरकार) में जो मंदिर निर्माण कराया है उसमें हमारे पिता के 8-10 लाख रूपये लग गये। हिन्दुओं की उस नगर पर ऐसी श्रद्धा है कि...
—जहाँगीरनामा-बाबू ब्रज रत्नदास (तुजुक-प्रथम जुलूसी वर्ष)

[जब श्रीमान अकबर सहज रूप से (शांतिपूर्वक) समस्त पृथ्वी का भलीभाँति पालन करता था तब अपने-अपने धर्म का स्वतंत्रता से पालन करते हुए सभी सज्जनवृन्द ने सुख का अनुभव किया और भगवान गोविन्द के पद स्थान (वृन्दावन) को निवास योग्य जानकर श्रेष्ठ वैष्णवों ने बार-बार उसको आशीर्वाद दिया।]

बादशाह अकबर के प्रति ब्रज वृन्दावन के वैष्णव साधक के रूप में यह अभिव्यक्ति केवल जीव गोस्वामी की ही नहीं बल्कि अन्य वैष्णव सम्प्रदायों के साहित्य में भी ऐसे सन्दर्भ देखे जा सकते हैं।[10] शिलालेख के रूप में विद्यमान गोविन्द मंदिर अष्टक की पाण्डुलिपि वि.सं.1727 में गौड़ीय संत वैष्णवदास द्वारा कामवन में लिखी गई जो बंगला लिपि में है। वृन्दावन शोध संस्थान में क्र. 6354 पर विद्यमान यह पोथी इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि 'पुरावृत्त संग्रह' विषयक कार्य के दौरान जब हिन्दी के महामनीषी भारतेन्दु बाबू की जानकारी में यह शिलालेख आया और इसका क्षरण तथा इसकी पाण्डुलिपि की जानकारी न होने के कारण वे भी इसका पूर्ण पाठ प्राप्त नहीं कर सके थे।

---

10. (अ) **धर्म रूप अकबर प्रगट, तहाँ न कछु दुराउ।**
बाहर भीतर की लहै, नट नागर कौ भाउ॥
—बिहारिनदास की वाणी पृ.34, हरिदासी सम्प्रदाय

(आ) हरिदासी सम्प्रदाय के अन्य संत भगवत रसिकदेव ने भी अपनी रचना भक्त नामावली में अकबर को एक भक्त के रूप में ही प्रस्तुत कियां है—
...तानसेन अकबर करमैती मीरा करमा बाई।
रत्नावली मीर माधव, रसखानि रीति रस गाई॥ (भगवतरसिक की वाणी)

(इ) **रूप की निकाई भूप 'अकबर' भाई, हिये लिये संग तानसेन देखिबे को आयो है।**
निरखिनि हाल भयो, छबि गिरधारीलाल, पद सुख जाल एक, तब ही चढायो है॥
—प्रियादास कृत भक्ति रस बोधिनी - पृ.121

(ई) **... अकबरशाह करै सनमान**
सब राजन कौं आज्ञा दीनी। देव स्थल की रचना कीनी॥
मंदिर हौन लगे सतपुरी। प्रभु सौं प्रीति सबनि की जुरी॥
(भगवतमुदित कृत रसिक अनन्यमाल, सुन्दरदास कायस्थ की परिचई)

वास्तव में यह पाण्डुलिपि उस जमाने में इस शिलालेख का अभिलेखीकरण [Documention] था जिसे मूर्त रूप दिया वैष्णवदास ने।[11] कालांतर में गौड़ीय साधकों की पुस्तक ठौर का हिस्सा वृन्दावन शोध संस्थान को मिलने पर यह पोथी उस सामग्री के साथ संस्थान के संग्रह में आ गई। जिसमें आज भी इस शिलालेख का पूरा पाठ यथावत विद्यमान है।

जीव गोस्वामी अपने जमाने के न केवल एक श्रेष्ठ साधक बल्कि उच्चकोटि के रचनाकार भी थे। भक्तमाल के अमर रचनाकार नाभादास एवं इस पर भक्तिरस बोधिनी टीका लिखने वाले प्रियादास ने जीव गोस्वामी की इस विशेषता का उल्लेख स्व-रचनाओं में किया है–

श्रीरूप सनातन भक्ति जल श्रीजीव गुसांई सर गंभीर ॥
बेला भजन सुपक्व कषाय न कबहूँ लागी।
वृन्दावन दृढ वास जुगल चरननि अनुरागी॥
पोथी लेखनि पानि अघट अक्षर चित दीनौ।
सद ग्रंथन कौ सार सबै हस्तामल कीनौ॥[12]

वहीं प्रियादास कृत भक्तिरस बोधिनी टीका में यह विवरण कुछ इस प्रकार मिलता है–

किये नाना ग्रंथ, हृदै ग्रन्थि दृढि छेदि डारैं, डारै धन यमुना में आवै चहूँ ओर तें।
कही दास साधु सेवा कीजै कहैं पात्रता न करौं नीके करी, बोल्यो कटु कोप जोर तें॥[13]

---

11. वैष्णवदास की यह पोथी प्रकाशन के अभाव में एक लम्बे समय तक अज्ञात ही बनी रही। मंदिर की चौखण्डी पर उत्कीर्ण शिलालेख का क्षरण काफी पूर्व ही हो चुका था, जिसके चलते भारतेन्दु बाबू की दूरी भी इसके पूर्ण पाठ से बनी रही। बाद में प्रख्यात पाण्डुलिपिविद उदयशंकर शास्त्री जी ने जब इसका पाठ प्रकाशित किया तो वह भी अधूरा ही था। तदोपरान्त जयपुर के विद्वान गुपाल नारायण बहुरा को यह पोथी सुलभ होने पर उन्होंने इसका प्रयोग मान चरितावली में किया है। संस्थान में इसकी एक प्रति बंगला लिपि में क्र. 6354 पर है।

12. भक्तमाल– नारायणदास नाभा, छन्द – 93

13. भक्ति रस बोधिनी – प्रियादास, छन्द – 374

जीव गोस्वामी के इस वैशिष्ट्य का बोध कराने वाले सन्दर्भ परिवर्तीकाल तक देखे जा सकते हैं—

किये लक्ष तिन ग्रंथ अनेकन षट चंपहि बनाए।
हरि नामामृत आदि भक्ति के कीने ग्रंथ सुहाए॥[14]

जीव गोस्वामी अपने जमाने के उदभट् विद्वान थे। उन्होंने भक्ति ज्ञान की परम्परा में स्व-साहित्य सृजन, पाण्डुलिपियों की सुरक्षा-संरक्षा एवं उनके प्रसार की दिशा में जो सार्थक प्रयास किये वह स्वयं में अद्वितीय है।

गोपाल भट्ट के शिष्य श्रीनिवासाचार्य जिन्होंने जीव गोस्वामी की सन्निधि में रहते हुए वैष्णव ग्रन्थों का भली-भाँति अध्ययन किया था, के द्वारा जीव गोस्वामी के आदेश से कई पेटिकाओं में पाण्डुलिपियाँ भरकर वैष्णव धर्म के प्रचारार्थ बंगाल ले जायी गयीं। वास्तव में जीव गोस्वामी के द्वारा प्रेरित श्रीनिवासाचार्य के ग्रन्थ सेवा की मुहिम को '**निवासाचार्य की पाठशाला**' कहा जाय, तो अतिशयोक्ति न होगी। गौड़ीय वैष्णव समाज की भक्ति ज्ञान सम्पदा को संरक्षित एवं प्रसारित करने में इनके शिष्य परिकर के अन्तर्गत गोविन्दादास, मोहनदास, राधावल्लभदास एवं यदुनंदनदास आदि का उल्लेखनीय योगदान हैं। श्रीनिवासाचार्य के इन शिष्यों ने स्व-साहित्य सृजन तो किया ही साथ ही अनेकों पाण्डुलिपियों की दर्जनों प्रतिलिपियाँ तैयार करते हुए इस सामग्री को, प्रसारित भी किया। वृन्दावन शोध संस्थान में **गोविन्ददास** की **अष्ट रस तत्त्व, अष्ट रस निर्णय, पदावलियाँ, चित्रगीता, दण्डात्मिका पदावली, निगम ग्रन्थ एवं वैष्णव महिमा** आदि की 56 पाण्डुलिपियाँ बंगला ग्रन्थ सूची में विभिन्न क्रमांकों पर उपलब्ध हैं— [B-84, 942, 29, 206, 226, 310, 349, 374, 547, 593, 610, 625, 661, 699, 700, 725, 761, 781, 828, 852, 880, 926, 976, 1037, 1084, 1094, 1146, 1179, 1200, 1201, 1210, 1237, 1295, 1296,168, 869, 281, 326, 489,1234,1176, 208, 299,459,678,737, 798, 1007, 1073, 1156, 1162, 1169, 1227, 1016, 1157, 1057]

---

14. वृन्दावन धामानुरागावली गोपाल राय, छन्द – 33, अप्रकाशित पाण्डुलिपि।

इसी क्रम में **यदुनंदनदास** की रचना **राधाकृष्ण लीला रस कदंब** की 14 पाण्डुलिपियाँ [B-26, 126, 147, 158, 200, 298, 345, 469, 472, 494, 664, 684, 1215, 1224] क्रमांकों पर उपलब्ध हैं, वहीं इनके द्वारा **रूप गोस्वामी** की रचना **विदग्धमाधव** के बंगला अनुवाद की 8 प्रतियाँ संस्थान में [B-134, 210, 295, 535, 763, 980, 1011, 1250] क्रमांकों पर उपलब्ध हैं, जो वृन्दावन शोध संस्थान को गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर अर्थात् राधादामोदर मंदिर से प्राप्त हुई हैं। गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर के सम्वर्द्धक अनेक महापुरूषों की सैंकड़ों पोथियां आज भी वृन्दावन शोध संस्थान के ग्रन्थागार में मौजूद हैं, जिसके चलते यह संस्थान न केवल गौड़ीय वैष्णवों बल्कि ज्ञान पिपासु शोधी-खोजी जनों के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है।

श्रीनिवासाचार्य की तरह ही इस दिशा में नरोत्तमदास 'ठाकुर' के उपकारों को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। जीव गोस्वामी के आदेशानुसार वृन्दावन से वैष्णव पाण्डुलिपियों को बंगाल ले जाने वाले महानुभावों में ये भी प्रमुख रूप से थे। **नरोत्तमदास ठाकुर** की रचना **प्रेम भक्ति चन्द्रिका** की 65 पाण्डुलिपियों की जानकारी संस्थान के ग्रंथागार से मिलती हैं– [B-70,130, 152, 164, 171, 185, 201, 213, 224, 354, 362, 370, 372, 382, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 529, 530, 531, 545, 552, 587, 591, 598, 611, 627, 636, 647, 784, 788, 825, 831, 855, 859, 861, 870, 881, 890, 934, 956, 965, 973, 975, 978, 989, 1002, 1022, 1089, 1095, 1119, 1182, 1228, 1246, 1291] वहीं इनके **स्मरण मंगल** की 36 पोथियाँ भी क्रमांक [B-6, 12, 53, 74, 116, 137, 219, 221, 259, 280, 319, 385, 386, 387, 388, 389, 393, 394, 434 (2), 520, 581, 582, 641, 715, 756, 923, 925, 1091, 1105, 1168, 1190, 640, 660, 838, 1057] पर बंगला एवं देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं। प्रेमभक्ति चन्द्रिका की 18वीं शताब्दी में प्रतिलिपित 01 पाण्डुलिपि इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन में क्र०सं० S-2314 पर संरक्षित होने की जानकारी वहाँ के द्वारा प्रकाशित बंगला एवं असमिया पांडुलिपियों के सूचीपत्र से मिलती हैं। यह शोध का विषय है कि नरोत्तमदास जी के स्मरण मंगल की यह पाण्डुलिपियाँ रूप गोस्वामी जी के स्मरण मंगल का अनुवाद हैं या टीका अथवा इनके द्वारा की गई प्रतिलिपियाँ। जो भी हो संस्थान में उपलब्ध यह पवित्र ग्रन्थ निधि

गौड़ीय वैष्णवों के उस पुस्तक ठौर की अनुपम निधि है। जिसके संरक्षण का गौरव वर्तमान में वृन्दावन शोध संस्थान को प्राप्त है।

गौड़ीय वैष्णव समाज उस जमाने में पाण्डुलिपियों के सृजन, संरक्षण, उनके प्रसार एवं महाप्रभु के संदेशों को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने में प्राण-प्रण से जुटा था। ग्रंथों के प्रति सजगता एवं श्रद्धा से जुड़ा एक दुर्लभ उदाहरण यहां इन वैष्णवों के द्वारा निर्मित 'ग्रंथ समाधि', स्मारक के रूप में दृष्टिगोचर होता है। गौड़ीय वैष्णवों में प्रचलित लोकश्रुति के अनुसार आचार्यों के ऐसे पवित्र ग्रन्थ जिनकी व्याख्या निकट भविष्य में कलिकाल के बढ़ते प्रभाव से साधकों के लिए मुश्किल थी, ऐसे ग्रन्थों को उन्होंने प्राचीन मदनमोहन मंदिर के समीप समाधिस्थ करते हुए ग्रंथ समाधि बनवायी जो अद्यतन विद्यमान है। ग्रंथ समाधि को लेकर लोकश्रुति में यह भी प्रचलित है कि जीर्ण एवं खण्डित पाण्डुलिपियाँ जिन्हें तत्कालीन समय में प्रायः यमुना में विसर्जित किये जाने की परंपरा थी। ऐसी पोथियों को गौड़ीय वैष्णवों ने यमुना किनारे प्राचीन मदनमोहन मंदिर के समीप सम्मानपूर्वक समाधिस्थ करके पवित्र स्मारक का रूप दिया। वहीं औरंगजेब के दमनचक्र एवं अब्दाली के ब्रज पर हमले की बात भी इस समाधि से जोड़कर कही जाती है।

निजमत सिद्धान्त शीर्षक पोथी जो वृन्दावन में हरिदासी परम्परा के साधक किशोरदास के द्वारा लिखी गई से ज्ञात होता है कि बादशाह अकबर ने जीव गोस्वामी को ग्रंथ लिखने के लिये कागज भी उपलब्ध कराया-

पादशाह आज्ञा करी, पुस्तक देहु मँगाय।
जिमी काज दसखत किये, कागद दए लिखाय।।[15]

उपरोक्त सन्दर्भ के साथ ही बादशाह अकबर के काल में कागज उत्पादन की एक इकाई स्यालकोट में मानसिंह के द्वारा लगायी जाने की जानकारी डॉ० सत्येन्द्र जी की पुस्तक पाण्डुलिपि विज्ञान के अंतर्गत मिलती है। यहाँ तैयार होने वाला कागज 'मानसिंही कागज' कहलाता था तथा इसका उपयोग शाही दफ्तरों में होता था। मानसिंह के द्वारा वृन्दावन में गोविन्ददेव का भव्य मन्दिर

15. निजमत सिद्धान्त - किशोरदास, मध्य खण्ड, छन्द 210।

बनवाया गया तथा जीव गोस्वामी ने इससे प्रसन्न होकर अपनी रचना गोविन्द मंदिर अष्टक में इसे आशीर्वाद भी दिया है। मानसिंह की जीव गोस्वामी के प्रति श्रद्धा के चलते वृन्दावन के इन गौड़ीय वैष्णवों को मानसिंही कागज की आपूर्ति भी निजमत सिद्धान्तकार के कथन का समर्थन करती है।

उस जमाने में जब कागज की आपूर्ति सहज न थी और यह प्रायः शाही दफ्तरों, रियासतों एवं धनिकों की वस्तु रही, उस जमाने में वृन्दावन में साधनारत इन साधकों को बादशाह की ओर से ग्रंथ लिखने के लिये कागज मिलना इनके उत्कृष्ट व्यक्तित्व का परिचायक है। वृन्दावन की इस तत्कालीन पुस्तक ठौर का वैभव एक जमाने में चरम पर था। इन साधकों ने इसका विधिवत संचालन एवं संरक्षण किया। ब्रज संस्कृति के अध्ययन की परम्परा में भले ही यह विषय उपेक्षित रहा लेकिन जीव गोस्वामी की साधनास्थली राधा दामोदर मंदिर से संस्थान को प्राप्त इस सामग्री के अन्तर्गत ऐसे अनेकों सन्दर्भ इसकी यशगाथा के साक्षी है। जिनसे गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर के रख-रखाव, पोथियों के वर्गीकरण, तत्कालीन विषय, पुस्तक ठौर के हस्तांतरण, पुस्तकालय की पोथी से नई पोथियाँ तैयार किये जाने एवं पाण्डुलिपियों की गणना से जुड़ी कई जानकारियाँ उद्घाटित होती हैं।

गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर से सम्बन्धित वि.सं.1654 के सूचीपत्र के साथ ही अन्य सहयोगी सन्दर्भों के रूप में वि.सं. 1663 में लिखित जीव गोस्वामी का संकल्प पत्र महत्वपूर्ण है जिसे गदाधर भट्ट के द्वारा तैयार किया गया था। जीव गोस्वामी के कथनानुसार इस संकल्प पत्र में मंदिर की सेवा-पूजा, पूजन उपकरण एवं अन्य जिम्मेदारियों के साथ ही पोथियों की सुरक्षा-संरक्षण के लिये भी आवश्यक निर्देश अंकित मिलते है-

संवत 1663 वर्षे मार्गशीर्ष मासि कृष्ण द्वितीया सुगृहीत नाम ध्येय श्रीश्री रूप सनातनाख्यं महामहिम चरण कमलानुचरस्य श्री वृन्दावनस्थस्य जीवनाम्ना संकल्पत्रीयं.. .तदातिन श्रीविलासदासेन स्वयमस्मै सेवौपकरणानि सेव्य श्रीराधाकृष्ण सहितानि स्थानानि पुस्तक पर्य्यंतानि सर्वाणि मदीयानि संकल्पपूर्वक दातव्यानि...[16] (चित्र-3, पृ०110)

16. जीव गोस्वामी का संकल्प पत्र, वृन्दावन शोध संस्थान, दस्तावेज क्र० 79।

संस्थान के ग्रंथागार में एक दस्तावेज कृष्णदास का मिलता है जो जीव गोस्वामी की परम्परा में ही हुए। वि.सं. 1673 के इस जीर्ण दस्तावेज में मंदिर से जुड़ी सम्पत्ति के साथ ही पुस्तकों के हस्तांतरण का उल्लेख भी मिलता है। दस्तावेज से ज्ञात होता है कि जीव गोस्वामी की परम्परा के इस साधक के अधिकार में यह पुस्तक ठौर रही थी—

संवत 1673 वर्षे शुभ दिने...कविराज श्रीरूप गुसांई के स्थान जीव गुसांई कृष्णदास ब्राह्मण को दिए है संकल्प करि सकृत पुस्तक समेत...[17] (चित्र-4, पृ॰110)

इसी से संबंधित वि.सं.1694 का एक अन्य दस्तावेज दृष्टिगोचर होता है जिसमें गौड़ीय संत महानुभावों के द्वारा एक पीढी से दूसरी पीढी को पुस्तक ठौर के हस्तांतरण की बात स्पष्ट रूप से कही गयी है—

श्री कृष्ण चैतन्य सनातन रूपक गोपाल रघुनाथाप्रव्रज जीवक पाहिमां। संवत 1694 वर्षे वैशाख सुदि 3 शुभ दिने सुगृहीनाम धेय श्री जीवाख्य महामहिम चरणानुचर कृष्णदास आगे श्री रूप सनातन रघुनाथ गुसाईं आपनौ पुस्तक ठौर श्री वृन्दावन के श्रीकुण्ड के कागतु पत्र सब श्री जीव गुसांई के दिये तिन दिये विलास दास वे दिये हम कौं बड़ेनु की आज्ञा ते.......[18] (चित्र—5, पृ॰111)

इसी क्रम में यहाँ एक दस्तावेज वि.सं.1746 का प्राप्त होता है। जो मंदिर की जमीन-जायदाद के झगड़े से सम्बन्धित है। इबारत में गोस्वामी गोपीरमण जी ने पंचों को बुलाकर पंचायत में अपनी लिखित विज्ञप्ति प्रस्तुत की है जिसमें उन्होंने अपनी पूर्व परम्पराओं तथा आचार्यों का उल्लेख भी किया है। इस दस्तावेज में भी पुस्तक संग्रह की परम्परा को दुहराते हुए अपने समय तक इनकी विद्यमानता का उल्लेख किया गया है—

आगे श्री गोपीरमन गोसांइ जीउ हाम सबन को बोलाय के कहे तोम सब पंचन को हाम विज्ञप्ति करत हैं देखो अन्याय बहुत होने लाग्यौ। हाम अकिंचन हैं हमारे परम्परा सौं तोम सब जानत हो। सो सब श्री जीउ की ओर देख के यथार्थ सो पूर्व भये हैं सो अब

---

17. दस्तावेज वृन्दावन शोध संस्थान, क्र.183

18. An early testamentary document in Sanskrit by Tarapada Mukherjee and J.C.Wright, Published by Vrindavan Research Institute.

होते हैं। कृपा करके तोम सब हाम को लिख देओ तो हामारे भाग्य में महाराजाधिराज जीउ सो समझें इह सब यव गोसांइ मजकुर ने कहे। तब पंच मिल के हाम एकत्र होय के सो पूर्व सुने हैं सो पर देखत हैं सो लिखत हैं। श्री श्री वृन्दावन विखे श्रीश्री सनातन रूप गोस्वामी जीउ स्वप्न द्वारा साक्षात श्रीश्री जीउ प्रकट प्राप्ति भये तदनंतर पुजारि सेवा के परिचारक सब ओर नियुक्त किये। दोनो गोसांइ को भक्ति के प्राकाष्ठा विस्तार भयोहो ताके पश्चात श्री जीव गोसांइ जीउ को कृपा करके समस्त पुस्तकादि एवं श्रीश्री (मदनमोहन) जीउ को एवं श्री (गोविन्ददेव) जीउ के सेवादि सब समर्पण किये तब पृथ्वीपति महाराजा जीउ गोसांइ के साक्षात योग्य सेवक श्रीकृष्णदास गोसांई जीउ के सब श्री जीव गोसांई ने अंत्य समये सेवास्थान पुस्तकादि सब समर्पण किये। तब श्री कृष्णदास गोसांई ने....मिति संवत 1746 आघन वदी त्रयोदशी।[19] (चित्र-6 पृ॰111)

संस्थान के ग्रंथागार में इसी दस्तावेज के लगभग समानान्तर एक अन्य दस्तावेज वि.सं. 1796 का प्राप्त है जो इसी इबारत की पुनरावृत्ति है। प्रथम दृष्टया यह वि.सं. 1746 वाले उपरोक्त दस्तावेज की नकल प्रतीत होती है

---

19. (क) दस्तावेज, वृन्दावन शोध संस्थान, क्र. 32
(ख) राधादामोदर की सेवा प्रणाली में गो॰ गोपीनाथ जी और ब्रजलाल जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है जिनकी आरम्भिक परम्परा में सनातन गोस्वामी, रूप गोस्वामी एवं जीव गोस्वामी जैसे विरक्त साधक हुए बाद में यह परम्परा गृहस्थ में चली जिसके झगड़ों से सम्बन्धित यह दस्तावेज हैं। वृन्दावन में 19वीं शताब्दी में विद्यमान भक्त इतिहासकार गोपाल राय ने अपनी अप्रकाशित पाण्डुलिपि वृन्दावन धामानुरागावली में 'राधादामोदर परनाली' के अन्तर्गत इस परम्परा से जुड़े गोपीरमण गोस्वामी का उल्लेख किया है–

सिरी कृष्ण चैतन्य महाप्रभु सिष्य सनातन जानौ।
दूजे सिष्य रूप गोस्वामी गुरु भैया दुहू मानौ॥
तिनि सिष्य जीव गुंसाई साखा तीनि कहाई।
जगन्नाथ में नागा विरकत यक साखाय कहाई॥
कुंमरपोरा में हरिप्रिया विरक्तन की इक गादी।
स्यामानंदहि की साखा तिहिं आदी गिनत जु गादी॥
कृष्णदास गोस्वामी जिनके तिन इह वंस चलाये।
ताकी साख एक भई यह गोस्वामी सु कहाये॥
तिनके वृन्दावन गोस्वामी ब्रजकुमार पुनि जानौ।
तिनके गोपीरमन गुसांईं पुनि ब्रजलाल समानौ॥

—छन्द 53-57, एकादश अध्याय

लेकिन अकबरी दरबार के नवरत्नों में एक राजा मानसिंह का नाम एवं कुछ भाषागत अन्तर के चलते यह दस्तावेज उससे अलग है जिसे याद्दाश्ती अभिलेख के रूप में भी समझा जा सकता है।[20] इस दस्तावेज की तत्कालीन नकल भी संस्थान में उपलब्ध है।[21]

यह महत्त्वपूर्ण बात है कि इन वैष्णव साधकों की परम्परा जब विरक्त से गृहस्थ उत्तराधिकारियों की ओर चली और जमीन जायदाद के मालिकाना हक को लेकर विवाद उपजे, जिसके प्रमाण तत्कालीन दस्तावेजों से भी दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसे में इन लोगों के द्वारा अपनी साहित्यिक धरोहर को भी महत्त्व दिया गया। वि.सं. 1763 में राजीनामा का एक दस्तावेज जो संस्थान में क्र. 51 पर विद्यमान है, से ज्ञात होता है कि कुंज, हवेली, बाग-बगीचों, एवं जमीन के साथ ही ये लोग पुथी-पत्रा (दस्तावेज एवं पाण्डुलिपियों) के प्रति सजग रहे—

लिषितं राजिनामा श्री कृष्ण प्रिया गुसांइ ब्रज कुमार जी की स्त्री आगें वृन्दावन में श्री जीव गुसांई की कुंज, हवेली ओर 12 वार कुंज और वाग और पूर्व पछिम उत्तर दक्षिण को जमि जो कछु ओर श्रीराधादामोदर ठाकुर ओर अधिकार पुथी पत्रा को ओर राधाकुण्ड की जमी कुंज को ओर चक्रतीर्थ की कोठि ओर कामवन की हवेली नंदीसर की कोठी ओर भुजिगाम जमी को ओर कुवा को सिष सेवग सब ओर श्रीजी व गुसांई जी कौ जो कछु अधिकार हमारे हो तो सब अधिकार हम श्री गोपीरमण गोसांई दामोदर सुत श्री गुसांइ ब्रज कुमार जी के भतीजा ताको ए सब अधिकार कर दिये.... संवत 1763 कार्तिक वदि 13 बुधवार [22] (चित्र-7, पृ॰112)

अकबर के शासनकाल में आमेर के राजा मानसिंह के द्वारा वृन्दावन में गोविन्ददेव का मंदिर बनवाये जाने के उपरान्त इन वैष्णव साधकों से राजपरिवार के अच्छे सम्बन्ध रहे थे जो परिवर्ती पीढियों के मध्य भी बदस्तूर जारी रहे उत्तर मध्यकाल में सल्तनत की ओर से ब्रज का सूबा सवाई जयसिंह के अधीन रहा। जयपुर को बसाये जाने का श्रेय भी इन्हीं को प्राप्त है। औरंगजेब के दमन चक्र के दौरान उसने वृन्दावन के गौड़ीय साधकों एवं देव विग्रहों को ससम्मान स्थान

---

20. दस्तावेज, वृन्दावन शोध संस्थान, क्र. 52
21. दस्तावेज, वृन्दावन शोध संस्थान, क्र. 196
22. दस्तावेज, वृन्दावन शोध संस्थान, क्र. 51

दिया। जीव गोस्वामी की जमीन-जायदाद एवं उत्तराधिकार से जुड़े विवादों की सुनवाई भी उसके द्वारा की जाती थी। संस्थान में संरक्षित राजस्थानी गद्य का तत्त्कालीन पत्र जो वि.सं. 1774 में सवाई जयसिंह के दीवान द्वारा गुसांई गोपीरमण के द्वारा लिखा गया से ज्ञात होता है कि विवाद के निपटारे के लिये राजदरबार में जीव गोस्वामी की कुंज से जुड़े शाही फरमान के साथ ही विषय सम्मत प्रमाण प्रस्तुत करने वाली पोथी (पाण्डुलिपियाँ) भी मँगायी गई थीं-

सिधि श्री राजि जैयस्यंघ जी साह सोभाचन्द जी जोग्य लिषतं राजि श्री दीपस्यंघजी दीवान ताराचन्द केनि [राम राम] वंच्या अैग का समाचार भला है थारा सदा भला चाहिजे अप्रंच गुसांइ गोपीरमण श्री वीदरावण जी के जाहर करी जो जीवु गुसांई का कुंज का पोथी वा फरमान पातीसाही रहस्यौ म्हानै देन्ही सो थांने लीषा छो। ..... मिति सावण सुदि 2 संवत 1774। [23] **(चित्र-8, पृ॰112)**

उपरोक्त दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि गौड़ीय वैष्णव समाज ने अपनी पोथियों का यत्नपूर्वक संरक्षण किया। जमीन-जायदाद के बँटवारे हों या श्रीविग्रह की सेवा पूजा के अधिकार इन सभी के एक पीढी से दूसरी पीढी के मध्य उत्तराधिकार सम्बन्धी विवरण दर्ज करते समय पोथियों को भी महत्त्व प्रदान करना इनके पुस्तक प्रेम तथा आचार्य ग्रंथों के प्रति श्रद्धा का परिचायक है। इस ग्रंथागार का उद्देश्य केवल गौड़ीय समाज को लाभान्वित करना नहीं था बल्कि यह तत्त्कालीन दौर में भक्ति ज्ञान परम्परा के संरक्षण का महत्त्वपूर्ण प्रयास था जिसका लाभ अन्य वैष्णव सम्प्रदाय से जुड़े साधकों को भी मिला।

चाचा हित वृन्दावनदास [24] जो राधावल्लभ सम्प्रदाय के श्रेष्ठ वाणीकार

---

23. दस्तावेज, वृन्दावन शोध संस्थान, क्र. 39

24. 18-19 वीं शताब्दी में विद्यमान चाचा वृन्दावन दास रचना परिमाण की दृष्टि से ब्रजभाषा के भक्त कवियों में शिखर पर हैं। इनके समकालीन एवं परिवर्ती रचनाकारों ने लिखा है **'सवा लक्ष्य वाणी तिन कृत्य...'** वृन्दावन में युगल सरकार की रास स्थली सेवाकुञ्ज पर साधना करते हुए इन्होंने कई रचनायें की जहाँ इनका स्मारक अद्यतन विद्यमान है।

थे, के द्वारा एक स्थान पर यह उल्लेख किया गया है कि उनके द्वारा अपने ग्रंथ "विवाह मंगल बेली" को जीव गोस्वामी कृत पद्म पुराण की कथा तथा हरिविलास लीलामृत तंत्र आदि के सहयोग से पूर्ण किया गया है–

... भयौ है विदित व्याह ग्रंथन में गायौ है।
पदम पुराण कथा लिखी है गुसाँई जीव,
हरि लीला विलास तंत्र में हू सुनि पायौ है॥
वृन्दावन हित रूप राधा-लाल आज्ञा पाइ,
जथामति चरित कछु मोपै कहि आयौ है॥ [25]

चाचा हित वृन्दावन दास इस पुस्तक ठौर (राधादामोदर मंदिर) के समीप ही सेवाकुंज में भजन, साधना एवं वाणी रचना करते थे तथा इनकी रचनाओं को इनके शिष्य केलिदास ने पांडुलिपियों का रूप प्रदान किया। प्राचीन गौड़ीय दस्तावेजों में उत्तराधिकार पत्रों के अंतर्गत जमीन आदि के बँटवारे के दौरान कई स्थलों पर समीपस्थ सेवाकुंज को 'राधावल्लभीन की कुंज' कहकर सम्बोधित किया गया है। सेवाकुंज में रहकर चाचा हित वृन्दावन दास के द्वारा विपुल साहित्य सृजित किया गया। राधा के विवाह से जुड़े पौराणिक आख्यानों के आधार पर जीव गोस्वामी ने स्व-रचनायें पूर्व में कीं थी। कालांतर में चाचा वृन्दावन दास ने अपने ग्रंथ 'विवाह मंगल बेली' की रचना करते समय जीव गोस्वामी के ग्रंथों का सहयोग लिया। इस बात को उन्होंने अपनी रचना के दौरान लिखा है। गौड़ीय वैष्णवों की इस पुस्तक ठौर की तत्कालीन लोकप्रियता तथा इससे ज्ञान लाभ लेने वाले साधकों के ऐसे न जाने कितने विवरण अभी शोध के गर्भ में है।

25. विवाह मंगल बेली छन्द 209-10

पुस्तक ठौर का सूचीपत्रः एक दृष्टि–

गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर का वि.सं. 1654 में तैयार यह सूचीपत्र सामान्य पोथियों से पृथक अपने युग की ज्ञान परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है जिससे ब्रज की तत्त्कालीन साहित्यिक परिस्थितियों के साथ ही ब्रज-वृन्दावन के इन वैष्णवों साधकों की उच्चस्तरीय भक्ति साधना से जुड़ी लिखित परम्परा का बोध होना स्वाभाविक है। समग्र सूची दर्शन, व्याकरण, पुराण, उपनिषद, ज्योतिष, वैद्यक, संगीत, काव्य एवं निज ग्रंथ नाटक आदि श्रेणियों में विभक्त है। आरम्भ में सूची को वर्गीकृत करते हुए ऊपर की ओर उपरोक्त श्रेणियों के अनुसार शीर्षक लिखे गये हैं तथा पोथियां भी इसके अनुसार मिलती हैं लेकिन कालांतर में प्रविष्टि करने वाले महानुभावों के द्वारा इस बात का ध्यान नहीं रखा गया है कि पोथी किस श्रेणी की है। जगह की रिक्तता के दृष्टिगत मनवांछित स्थान पर नई प्रविष्टियाँ भी हुई हैं जिनसे विषय विभाजन का क्रम भंग होना स्वाभाविक है। बंगला भाषी होने के कारण सूचीकार के द्वारा स्व-उच्चारण के आधार पर ग्रंथों के नाम अंकित किये गये जिससे वर्तनी की समस्या देखी जा सकती है। यद्यपि सर्वत्र ऐसा नहीं तथापि सूचीपत्र में कई जगहों पर यह समस्या उपजी है। पूरी सूची में नागरी लिपि के 51 पत्रक हैं। पत्रकों की जीर्णता, कालक्रम के प्रभाव, हरताल के प्रयोग तथा पुनः उसी पर अस्पष्ट लिखावट के चलते और कई स्थानों पर नागरी के साथ ही बंगाक्षरों के कारण ग्रंथों के नाम समझ पाना चुनौतीपूर्ण है।

खुले पत्रकों के रूप में उपलब्ध इस सूचीपत्र के कई पत्रकों पर क्रम संख्या भी अंकित की गई है ताकि ग्रंथागार में उपलब्ध पोथियों का आंकलन किया जा सके लेकिन सभी पत्रकों में इसका पालन नहीं किया गया तथापि हमारे द्वारा किये गये अंकन के आधार पर इस ग्रंथागार में उपलब्ध पोथियों की संख्या 966 है। जिसमें बंगला लिपि में अंकित 15 पत्रकों को सम्मिलित नहीं किया है। प्रस्तुत कार्य के अंतर्गत बंगला लिपि के प्रथम एवं आखिरी पत्रक

परिशिष्ट के रूप में संलग्न हैं। **(चित्र- 16-17, पृ०116)** सूचीपत्र से ज्ञात होता है कि इस संग्रह में ताड़पत्र की पाण्डुलिपियाँ भी संरक्षित थी। ऐसी पोथियों के शीर्षक के साथ ताड़ पत्रीय शब्द अंकित किया गया है।

ब्रज संस्कृति के अध्ययन की परम्परा में अब तक उपेक्षित किन्तु महत्त्वपूर्ण इस पुस्तक ठौर को लेकर भले ही आज प्रकाशित सन्दर्भ अर्थात् पुस्तकें मौन हों लेकिन तत्कालीन अनेक दस्तावेज एवं इस पारम्परिक ग्रंथागार के सूचीपत्र में (Catalogue) में अंकित विवरण स्वयं में अद्भुत है। सूचीपत्र में अंकित 19 क्रमांक की कोथली (वेष्ठन) से ज्ञात होता है कि **स्वयं चैतन्य महाप्रभु के द्वारा रघुनाथ भट्ट गोस्वामी को दी गई श्रीमद्भागवत की पोथी भी यहाँ संरक्षित रही। (चित्र-9)** वर्तमान में अठखम्भा स्थित रघुनाथ भट्ट गोस्वामी पीठ में विद्यमान ब्रज की इस सांस्कृतिक निधि का अपना एक महत्त्व है। रघुनाथ भट्ट गोस्वामी जी के शिष्य गदाधर भट्ट जी के द्वारा सेवित मदनमोहन जी के इस मंदिर में वर्ष में 05 दिन इस पवित्र पोथी के दर्शन जनसामान्य को आज भी सुलभ हैं। गौड़ीय वैष्णवों की इस पारम्परिक पुस्तक ठौर में इस पवित्र निधि के आने तथा गदाधर भट्ट को इसे प्राप्त होने का अपना संक्षिप्त इतिहास है। गदाधर भट्ट गोस्वामी के गुरु रघुनाथ भट्ट जी के हृदय में श्रीमद्भागवत के प्रति प्रेम तथा श्रद्धा रूपी बीज का वपन स्वयं चैतन्य महाप्रभु ने ही किया था। चैतन्य चरितामृत में उल्लिखित है नीलांचल में आठ माह रहने के उपरान्त महाप्रभु ने रघुनाथ भट्ट को विदा किया और इनसे कहा, रघुनाथ तुम विवाह नहीं करना, तुम्हारे माता-पिता वृद्ध हैं उनकी सेवा करना और किसी वैष्णव से श्रीमद्भागवत का अध्ययन करना–

...वृद्ध माता-पिता जाइ करह सेवन। वैष्णव पाश भागवत करि अध्ययन॥ [26]

रघुनाथ भट्टजी ने काशी में आकर चार वर्ष तक माता-पिता की सेवा की और महाप्रभु की आज्ञा के अनुसार श्रीमद्भागवत का अध्ययन किया। माता-पिता के परलोक गमन करने पर उन्होंने विरक्त होकर पुनः नीलांचल की

26. चैतन्य चरितामृत- कृष्णदास कविराज अन्त्यलीला त्रयोदश परिच्छेद पयार -112

राह पकड़ी। यहाँ वे पूर्व की भाँति पुनः आठ माह महाप्रभु के सान्निध्य में रहे। इस दौरान महाप्रभु ने उन्हें आज्ञा दी, रघुनाथ! मेरी आज्ञा मानकर तुम वृन्दावन चले जाओ वहाँ रूप-सनातन के पास रहते हुए श्रीमद्‌भागवत की सेवा करना। यह कहकर महाप्रभु ने उनका आलिंगन किया और चौदह हाथ लम्बी एक तुलसी की माला एवं एक छुठा पान (एक विशेष प्रकार का पान) जो जगन्नाथ के पुजारी ने उन्हें दिया था, रघुनाथ भट्ट को दिये। महाप्रभु की आज्ञा के अनुसार उन्होंने वृन्दावन आकर रूप गोस्वामी की सभा के मध्य श्रीमद्‌भागवत का प्रचार-प्रसार किया।

चौद्दह हाथेर जगन्नाथेर तुलसी माला। छुटा पान बिड़ा महोत्सवे पाञा छिला॥
प्रभु ठाञि आज्ञा लञा आइला वृन्दावन। आश्रय करिल असि रूप-सनातन॥
रूप गोसाञिर सभा ते करे भागवत पठन। भागवत पढ़िते प्रेमे आडोलाय तार मन॥[27]

यद्यपि कविराज के द्वारा चैतन्य चरितामृत में यह उल्लिखित नहीं है कि 14 हाथ लम्बी तुलसी की माला तथा पान के साथ उन्हें भागवत की कोई पोथी भी वृन्दावन जाते समय दी गई तथापि गौड़ीय वैष्णव लोकमान्यता में यह प्रचलित है कि उस दौरान महाप्रभु की आज्ञा से श्रीमद्‌भागवत की पोथी को भी रघुनाथ भट्ट वृन्दावन लाये थे और सनातन एवं रूप से मिलने पर उन्होंने इसे भी वहीं उन्हीं के पास रखा। कालांतर में जीव गोस्वामी जी के द्वारा इस पोथी को रूप एवं सनातन जैसे आचार्य की पोथियों के साथ ही ससम्मान स्थान दिया गया जिसका उल्लेख सूचीपत्र में **चैतन्यदत्त भागवत** प्रविष्टि से क्र.19 कोथली पर मिलता है। **(चित्र-9, पृ.113)** रघुनाथ भट्ट गोस्वामी जी के एकमात्र शिष्य गदाधर भट्ट थे जिन्हें जीव गोस्वामी ने ही रघुनाथ भट्ट जी से दीक्षा दिलवायी। गुरु शरणागत होने पर यह भी भागवत के परम विद्वान हुए। नाभादास जी ने भी इनकी इस विशेषता को अपनी प्रसिद्ध रचना भक्तमाल में रेखांकित किया है—

... भागवत सुधा वरषै वदन, काहू कौ नाहिन दुखद।
गुन निकर गदाधर भट्ट अति सबहिन कौ लागै सुखद॥[28]

---

27. चैतन्य चरितामृत- कृष्णदास कविराज अन्त्यलीला त्रयोदश परिच्छेद पयार -122-25
28. भक्तमाल- नाभादास, गदाधर भट्ट की परचई।

गदाधर भट्ट जीव गोस्वामी के विशेष कृपापात्र थे। वृन्दावन में गदाधर भट्ट का आगमन तथा जीव गोस्वामी की वृद्धावस्था होने पर उनकी आज्ञा के अनुसार गदाधर भट्ट के द्वारा जीव गोस्वामी का संकल्प पत्र (उत्तराधिकार पत्र) तैयार किया जाना दोनों के परस्पर आजीवन अभिन्न सम्बन्धों के द्योतक हैं। जीव गोस्वामी के द्वारा रघुनाथ भट्ट जी की निधि जो उन्हें महाप्रभु की कृपा से प्राप्त, भागवत की पोथी थी, गदाधर भट्ट को प्रदान की गई जो आज भी उनके वंशजों के पास हैं। इस पोथी से संचरित ऊर्जा का प्रभाव ही था गदाधर भट्टजी की परिवर्ती पीढ़ी में एक से बढकर एक भागवत के प्रखर वक्ता उस जमाने में हुए जब यहाँ भागवत का आज जैसा प्रचार-प्रसार न था। इनके इस वैशिष्ट्य के चलते वृन्दावन के इस भट्ट घराने को वृन्दावन के प्राचीन देवालयों में भागवत-प्रवचन आदि के पारम्परिक अधिकार मिले।

सुधीजनों के पठनार्थ अथवा ग्रंथागार की पोथियों से नई पोथी तैयार किये जाने के निमित्त यहाँ की पाण्डुलिपियाँ अन्य वैष्णव साधकों के पास भी गई। सूची पत्र में एक स्थान पर अंकित याद्दाश्ती से ज्ञात होता है कि शक संवत 1619 में इस संग्रह की 12 पांडुलिपियाँ राधाकुण्ड में वृन्दावनदास पुजारी को दी गई–

सा. श्रीराधाकुण्ड में श्रीराधादामोदर जी के मंदिर में पुजारी वृन्दावनदास के माः पुस्तक रहे संवत् 1619 चैत सुदी 4 गुरूवार (चित्र-10, पृ०113)

1) कृष्ण मंगल नागर

2) विदग्ध माधव भाषा रस कदंब प्रस्थर नागर बंगला

1) मुक्ताचरित भाषा बंगला

1) गीत गोविन्द भाषा गौड 1

1) जगन्नाथ वल्लभ नाटक भाषा गौड 1

1) चैतन्य चरितामृत श्लोकावली गौड 1

1) चैतन्य चरितामृत गौड जीव लीला

1) गोविन्द लीलामृत

1) भाषा राय शेखरे

1) पदावली

1) पदकल्पतरु गौड 1

कालांतर में यह पुस्तकालय पारम्परिक ढंग से चलता रहा जिसमें महाप्रभु के अनुयायी तत्त्कालीन वैष्णव साधकों का समान अधिकार था। ग्रंथागार में आने-जाने वाली पुस्तकों के प्रति ढुल-मुल रवैया तथा सख्त अनुशासन के अभाव में यहाँ पोथियों की संख्या घटती गई। वि॰सं॰ 1722, शक्1587 के माघ माह में किसी वैष्णव के द्वारा जीव गोस्वामी की कुंज में उपस्थित पोथियों की गणना की गई–

श्रीगुरवे नमः ॥

पुस्तक संख्या श्री गुंसाइ जू की संवत् 1722 माघ सुदी

2 शाके 1587 मुकाम श्री वृन्दावन श्री गुंसाइ जू ही की कुंज...[29] (चित्र-11, पृ॰114)

गणना के दौरान प्रत्येक पाण्डुलिपि का शीर्षक लिखते हुए उनकी प्रतियों की संख्या लिखी गई है तथा इन पत्रकों में कई जगह नीचे की ओर इसका योग भी लगाया गया है। पाण्डुलिपि का शीर्षक लिखने से पूर्व गणनाकार के द्वारा क्रमांकन नहीं किया गया है जिससे तत्कालीन पांडुलिपियों का वास्तविक आंकलन नहीं किया जा सकता है लेकिन संस्थान में उपलब्ध इस सूची के पत्रकों के आधार पर वि.सं.1722 में इस पुस्तक ठौर जिसे गणनाकार द्वारा श्री गुसांई जू की कुंज कहकर सम्बोधित किया गया है, में पाण्डुलिपियों की संख्या 195 निर्धारित है। यद्यपि यह गणनाकार द्वारा उस अवधि में वहाँ उपलब्ध रही पोथियों की संख्या है जो वर्तमान में संस्थान में उपलब्ध पत्रकों के आधार पर है चूँकि पत्रकों में कहीं-कहीं नीचे की ओर योग तो किया गया है लेकिन महायोग की सूचना नहीं है। अतः बीच के पत्रकों के नष्ट होने, क्षरित होने, कीटभक्षण अथवा संस्थान में आने की अवधि तक यह कम हुए हों तो इस आधार पर वास्तविक संख्या का आंकलन मुश्किल है। इस पुस्तक ठौर में उपलब्ध पांडुलिपियों की वास्तविक संख्या की गणना किया जाना दुष्कर कार्य है चूंकि संस्थान में उपलब्ध सूचीपत्र के अंतर्गत जहाँ याद्दाश्ती के तौर पर पांडुलिपियाँ

---

29. सूचीपत्र के पत्रक संख्या 102 से 109 देखें पुस्तक ठौर का सूचीपत्र।

निर्गत किये जाने का उल्लेख हैं वहीं एक-दो पत्रकों पर काली स्याही से दीर्घ अक्षरों में जमा शब्द भी उल्लखित है [30] जबकि इसके आस-पास ग्रंथागार में जमा की गई पांडुलिपियों की सूचना उस ढंग से दर्शित नहीं होती जैसे कि राधाकुण्ड के पुजारी को ग्रंथ दिये जाने का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया गया है। सूचीपत्र में भारत शीर्षक से कोथलियों का उल्लेख मिलता हैं जिसमें महाभारत के विभिन्न सर्गों की पांडुलिपियाँ विद्यमान थीं। सूचीपत्र में महाभारत के लिए अंकित 'भारत' शब्द तत्कालीन परिवेश का वैशिष्ट्य है। प्राचीन काल में श्लोकों की संख्या के आधार पर 'भारत' तथा 'महाभारत' का अलग-अलग अस्तित्व बना रहा। पाणिनी की अष्टाध्यायी में दोनों का अलग-अलग नामोल्लेख हुआ है (6/2/38)। उससे भी कुछ पूर्व आश्वलायन गृह्यसूत्र (3/4) में श्राद्ध में वन्दनीय आचार्यों का परिगणन करते हुए वैदिक ऋषियों के अतिरिक्त सुमन्तु, जैमिनि, वैशम्पायन, पैल इन चार व्यास-शिष्यों के साथ भारताचार्य और महाभारताचार्य का भी नाम आता है। कुछ कालोपरान्त सम्भवतः शुंगकाल में पृथक् भारत ग्रन्थ अपने बृहत्तर रूप महाभारत में अन्तर्लीन हो गया। इसी स्थिति का परिचायक महाभारत का यह श्लोक है–

इदं शतसहस्त्रं तु श्लोकानां पुण्यकर्मणाम्।
उपाख्यानैः सह ज्ञेयमाद्यं भारतमुत्तमम्॥ [31]

भारतविद्या के महान अध्येता पं.वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक भारत सावित्री में लिखा भी है– 'उपाख्यानोंसे रहित चौबीस सहस्त्र श्लोकों की चतुर्विंशतिसाहस्त्री संहिता 'भारत' नाम से प्रसिद्ध थी। वही अनेक उपाख्यानों को आत्मसात् करके लक्ष श्लोकात्मक महाभारत की शतसाहस्त्री संहिता बन गई।'

30. सूचीपत्र का पत्रक संख्या 66
31. भारत सावित्री – वासुदेव शरण अग्रवाल पृ. स. 35

पुस्तक ठौर के संवर्द्धक आचार्य एवं उनकी रचनायें–

सनातन गोस्वामी–

सम्प्रदाय के परिवर्ती अभिलेखों में इनका नाम सन्तोष बताया जाता है। ये दाक्षिणात्य यजुर्वेदी भारद्वाज गोत्री ब्राह्मण थे। इनकी प्रतिभा, विद्वता एवं कार्यकौशल के आधार पर गौड़ देश के तत्त्कालीन नवाब हुसैन शाह ने इन्हें प्रधानमंत्री के पद पर सुशोभित करते हुए 'दबिर खास' की उपाधि प्रदान की। इनकी उपाधि के आधार पर कुछ विद्वानों ने इन्हें मुसलमान समझने की भूल भी की है।[32]

सनातन गोस्वामी के द्वारा सृजित वैष्णव तोषिणी रचना से ज्ञात होता है कि आपने सार्वभौम भट्टाचार्य के अनुज मधुसूदन विद्या वाचस्पति से भागवत आदि शास्त्रों का अध्ययन किया था। उस दौरान सनातन जब ये बंगाल के रामकेलि ग्राम में रहते थे, चैतन्य महाप्रभु से इनकी भेंट यहीं हुई थी। सनातन दो माह तक काशी में- महाप्रभु के साथ रहे थे और उनसे धर्म तत्व की व्याख्या सुनी थी। इनके द्वारा रचित ग्रंथ– **वृहत्भागवतामृत** (दिग्दर्शिनी टीका सहित), **हरिभक्ति विलास लीला स्तव** (दशम चरित), और **वैष्णव तोषिणी** (भागवत टीका) हैं। इनके ग्रंथ पांडुलिपियों के रूप में वृन्दावन शोध संस्थान में विद्यमान हैं। महाप्रभु के आदेश से ब्रज के लुप्त तीर्थों के उद्धार हेतु आप ब्रज में आये। वृन्दावन में आपके आराध्य मदनमोहन जी का भव्य मंदिर अकबर के काल में रामदास कपूर नामक व्यापारी के द्वारा बनवाया गया जो वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन है। इस मंदिर के पास ही सनातन गोस्वामी जी की समाधि मौजूद है। वर्तमान में मदन मोहन जी का श्रीविग्रह करौली (राजस्थान) में विद्यमान है।

---

32. A History of Indian Philosophy, S.N.Das Gupta P-394

रूप गोस्वामी—

रूप गोस्वामी जी आयु में सनातन प्रभु से दो वर्ष छोटे थे किन्तु चैतन्य महाप्रभु के प्रथम कृपा पात्र होने के कारण वैष्णव समाज में ये ज्येष्ठ समझे जाते हैं। गौड़ीय वैष्णव समाज में रूप गोस्वामी जी को भक्तिशास्त्र और रस ग्रंथों का प्रमुख आचार्य माना जाता है। इनका हस्तलेख काफी सुन्दर था। कृष्णदास कविराज द्वारा रचित चैतन्य चरितामृत में उल्लिखित है कि इनकी लिखावट मोतियों की लड़ी की भाँति थी—

श्री रूपेर अक्षर जेन मुक्तार पाँति...

(अन्त्य लीला प्रथम परिच्छेद, छन्द 87)

महाप्रभु के कृपापात्रों में रूप एवं सनातन दोनों अभिन्न है। न केवल गौड़ीय वैष्णव साहित्य बल्कि अन्य वैष्णव सम्प्रदायी वाणीकारों ने भी रूप एवं सनातन गोस्वामी का नाम साथ ही लिया है—

ब्रज भूमि रहस्य राधाकृष्ण भक्त तोष उद्धार कियौ।
संसार स्वाद सुख बांत ज्यों, दुहुँ 'रूप' सनातन' त्यागि दियौ॥[33]
रूप सनातन बिनु को, वृन्दाविपिन-माधुरी पावै।...[34]
श्रीवृन्दावन की सहज माधुरी, रोम-रोम सुख गातन।
सब तजि कुंज-केलि भज अह निसि, अति अनुराग सदा तन॥ [35]

रूप गोस्वामी के सेव्य विग्रह गोविन्ददेव जी हैं जिनका प्राकट्य गोमा टीले से हुआ था। कालांतर में गोविन्ददेव जी का भव्य मंदिर आमेर के राजा मानसिंह के द्वारा बनवाया गया। यह मंदिर भी मदनमोहन मंदिर की भाँति भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन है। औरंगजेब के दमन चक्र के दौरान गोविन्ददेव जी का श्रीविग्रह जयपुर पहुँचा जहाँ ये अद्यावधि विराजमान हैं। रूप गोस्वामी जी के द्वारा रचित ग्रंथ **भक्तिरसामृतसिन्धु, उज्ज्वलनीलमणि, विदग्धमाधव**

---

33. भक्तमाल (नाभादास), पृ. 591, रूपकला संस्मरण
34. भक्त-कवि व्यास जी, वासुदेव गोस्वामी, पद सं० 26
35. भक्त-कवि व्यास जी, वासुदेव गोस्वामी, पद सं० 27

(नाटक), **ललितमाधव** (नाटक), **लघुभागवतामृत, नाटक-चन्द्रिका, पद्यावली, मथुरा महिमा, निकुंजरहस्यस्तव, स्मरणमंगलस्तोत्र, वैष्णवपूजाविधि, सामान्य विरुदावली लक्षण, स्तव-माला, दानकेलिकौमुदी, हंसदूत, उद्धव संदेश** एवं **राधाकृष्णगणोद्देशदीपिका** हैं। संस्थान के द्वारा प्रकाशित संस्कृत कैटलॉगों में इन पांडुलिपियों की सूचनायें उपलब्ध हैं।

रघुनाथदास गोस्वामी–

ये गौड़ीय वैष्णव समाज में 'दास गुसाईं' के नाम से प्रसिद्ध हैं। गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर को सुगठित करने में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान है। उत्तराधिकार विषयक प्राचीन दस्तावेजों के अंतर्गत रूप एवं सनातन के साथ रघुनाथदास गोस्वामी का नाम भी मिलता है, जो तत्कालीन दौर में इनके महत्त्व का प्रतिपादन करने वाला है। [36] ये हुगली जनपद के धनिक कायस्थ जमींदार के एकमात्र पुत्र थे। इनका जन्म सं॰ 1551 माना जाता है। शैशव से ही इनके हृदय में धार्मिक संस्कार थे। चैतन्य देव के सम्पर्क में आते ही ये परम विरक्त हो गए। महाप्रभु इनकी विरक्ति से बड़े प्रभावित थे। उन्होंने अपने अन्तरंग स्वरूप दामोदर की देखरेख में इन्हें रख दिया। इनकी सेवा एवं भक्ति को देखकर वैष्णवगण विस्मित हो जाते थे। वि॰सं॰ 1590 में ये वृन्दावन आ गए थे। रूप-सनातन को ये चैतन्य देव की दिव्य लीलाएँ सुनाया करते थे। कविराज इनके प्रिय शिष्य थे जिन्होंने इनसे प्रोत्साहित होकर वृद्धावस्था में अथक श्रम कर 'चैतन्य चरितामृत' का प्रणयन किया।

राधाकुण्ड में इन्होंने साधनापूर्वक जीवन व्यतीत किया। कहा जाता है कि ये केवल दो-तीन पल तक्र लेते थे और साढ़े-सात प्रहर भजन करते थे। ध्रुवदास हित ने इनके विषय में लिखा है–

भजन रासि रघुनाथजी राधाकुण्ड स्थान।
लोन तक्र को लयो परस्यो नहिं कछु आन॥

---

36. देखें सन्दर्भ संख्या 18, चित्र- 3

बन्दन करिकै चिन्तवन गौर स्याम अभिराम।
सोवत हू रसना रटै राधा-कृष्ण सु नाम॥[37]

इन्होंने लगभग 49 वर्ष पर्यन्त ब्रजवास किया। इनका नित्यलीला प्रवेश वि॰सं॰ 1640 माना जाता है। राधाकुण्ड पर इनकी समाधि स्थित है।[38]

इनकी रचनाएँ स्तोत्र रूप में ही मिलती हैं। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ **स्तवावली** (29 स्तव), **मुक्ताचरित एवं दानकेलि-चिन्तामणि हैं।**

रघुनाथ भट्ट—

ये तपन मिश्र के पुत्र थे। जब चैतन्य देव वि॰ सं॰ 1572 में नीलाचल से वृन्दावन-यात्रा पर गए थे तब 2 माह वे तपन मिश्र के घर रहे थे। बालक रघुनाथ के अन्तःकरण में श्रीचैतन्य देव की सेवा से भक्ति-संस्कार उदित हुए थे। ये पुरी में 8 माह उनके निकट रहे। माता-पिता के देहावसान के तुरन्त बाद ये पुनः पुरी चले गए। चैतन्य देव के आदेश से ही ये वृन्दावन चले आए थे। जन-साधारण में भागवत-कथा से ये भक्ति की प्रतिष्ठा और महाप्रभु के संदेशों का प्रचार करने लगे। महाप्रभु से प्रसादी तुलसी माला एवं भागवत की पोथी भी आपको प्राप्त हुई थी। इनकी समाधि पर प्रतिवर्ष महोत्सव मनाया जाता है। रघुनाथ भट्ट द्वारा प्रणीत कोई ग्रन्थ अद्यावधि देखने में नहीं आया। भले ही इन्होंने कोई ग्रन्थ न लिखा हो किन्तु ब्रज के जनमानस में अपनी भागवत कथा द्वारा वैष्णव धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार किया, इसी कारण ये षड् गोस्वामियों में प्रतिष्ठित हुए। चैतन्य सम्प्रदायी गदाधर भट्ट इन्हीं के शिष्य थे।

गोपाल भट्ट—

वृन्दावन के षड्गोस्वामियों में व्यंकट भट्टजी के सुपुत्र गोपाल भट्टजी का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। अपनी दक्षिण-यात्रा के समय चैतन्य देव ने चातुर्मास्य इन्हीं

37. भक्त नामावली- ध्रुवदास (राधावल्लभ सम्प्रदाय), दो॰ सं॰ 23-24, पृ॰ 3।
38. यहाँ प्रतिवत्सर जाह्नवादेवी का उत्सव सम्पन्न होता है, जिसमें समाज आदि के आयोजन भी होते हैं। (चैतन्य सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्यः डॉ॰ नरेशचन्द्र बंसल)

के घर पर किया था। वि॰सं॰ 1582 में सब कुछ परित्यक्त कर ये वृन्दावन आ गए थे। इन्हें भी अन्य गोस्वामियों की भाँति चैतन्य देव ने बैठने का आसन और डोरी प्रदान की थी। इनके पास शालिग्राम शिला थी जिसकी वे वृन्दावन में सेवा-पूजा किया करते थे। वैष्णव समाज में विश्रुत है कि गोपाल भट्ट की इच्छापूर्ति स्वरूप श्रीराधारमणजी शालिग्राम शिला से प्रकट हुए थे। मान्यतानुसार स्थानीय गौड़ीय सप्त देवालयों के तीन विग्रहों की अपनी-अपनी विशिष्टता है, जिसमें रूप गोस्वामी के सेव्य गोविन्ददेव का मुखमंडल, मधु पंडितजी के गोपीनाथजी का वक्षस्थल एवं सनातन गोस्वामी के सेव्य मदनमोहन के श्रीचरणों के दर्शन का विशेष माहात्म्य है। लोकमान्यता में श्रीगोपाल भट्ट द्वारा सेवित राधारमण के श्रीविग्रह का दर्शन उन सभी अनुभूतियों को साकार करने वाला है—

गोविन्द देव कौ सौ मुख, गोपीनाथ कौ सौ हिय,
मदन मुहन के से राजत चरन हैं।...

— वृन्दावन धामानुरागावली- गोपाल राय (राधारमण सरूप वर्णन)

गोपाल भट्ट वैष्णव शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित थे। इनकी समाधि श्रीराधारमणजी के घेरे में स्थित है। इनके द्वारा विरचित 'हरिभक्ति-विलास' ग्रंथ को वैष्णवों में काफी आदर प्राप्त है।

जीव गोस्वामी—

ये रूप गोस्वामी के अनुज अनुपम (वल्लभ) के पुत्र थे। इन्होंने सार्वभौम भट्टाचार्य के अनुज मधुसूदन वाचस्पति से वेदान्त शास्त्र का अनुशीलन किया था। अपनी प्रतिभा के बल पर ये शीघ्र शास्त्र-निष्णात हो गए। 24-25 वर्ष की आयु में ही ये विरक्त होकर ब्रज में आ गए थे। नित्यानन्दजी की आज्ञा से वृन्दावन आकर रूप गोस्वामी से इन्होंने मंत्र-दीक्षा ली और शास्त्र-मन्थन किया। भजन और भक्ति-ग्रन्थों का सृजन ही इनका एकमात्र अनुष्ठान था। चैतन्य मत को दार्शनिक सिद्धान्तों पर प्रतिष्ठित करने का पाण्डित्यपूर्ण कार्य इन्हीं का था। ये अपने युग के अप्रतिम टीकाकार थे। श्रीनिवासाचार्य, नरोत्तम

ठाकुर और श्यामानन्दजी ने इनसे शास्त्राभ्यास किया था। इन्होंने श्रीनिवास को 'आचार्य' की, और श्री नरोत्तमदास को 'ठाकुर' की उपाधि प्रदान की। नाभादासजी ने 'भक्तमाल' में इनके व्यक्तित्व के सन्दर्भ में सही लिखा है–

बेला भजन सुपक्व, कषाय न कबहूँ लागी।
वृन्दावन दृढ़बास, जुगल चरननि अनुरागी॥
पोथी लेखन पान, अघट अक्षर चित दीनौ।
सदग्रन्थनि कौ सार, सबै हस्तामल कीनौ॥
सन्देह ग्रन्थ छेदन समर्थ, रस रास उपासक परम धीर।
श्रीरूप सनातन भक्ति जल, जीव गुसाईं सर गँभीर॥[39]

वहीं भक्तमाल की प्रियादास कृत भक्तिरसबोधिनी टीका में यह विवरण कुछ इस प्रकार मिलता है–

किये नाना ग्रन्थ, हृदै ग्रन्थि दृढ़ छेदि डारैं, डारै धन यमुना में आवै चहूँओर तें।
कही दास 'साधु सेवा की जै' कहैं पात्रता न करों नीके करी, बोल्यौ कटु कोप जोर तें॥[40]

अप्रकाशित पाण्डुलिपि वृन्दावन धामानुरागावली से भी जीव गोस्वामी जी की भक्ति रचनाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रकट होती हैं–

लेखनि करत सदा निजकर करि अघटक्षर चित दीनौं।
सद ग्रंथन कौ सार सकल लै हस्तामल में कीनौं॥
किए लक्ष तिन ग्रंथ अनेकन षट चंपहि बनाए।
हरि नामामृत आदि भक्ति के कीने ग्रन्थ सुहाए॥[41]

गौड़ीय सम्प्रदाय के षड्गोस्वामियों में एक जीव गोस्वामी जी की रचनाएँ उनके जीवनकाल में ही लोकप्रिय हो चली थीं। इस कार्य के दौरान हमें जीव गोस्वामी जी की प्रसिद्ध रचना माधव महोत्सव की एक प्राचीन प्रतिलिपि मिली जिसे किसी गोकुलेश्वरदास नामक वैष्णव ने वि.सं. 1634 में वृन्दावन में स्व–पठनार्थ प्रतिलिपित किया था–

---

39. नाभादास कृत भक्तमाल, पृ० 610

40. भक्तिरसबोधिनी टीका, छन्द–374

41. वृन्दावन धामानुरागावली, गोपालराय, [illegible]ध्याय, छन्द– 21, 23

श्रीराधागिरधराभ्यां नमः। गुरुभ्यो नमः॥ संवत् 1634 समये आश्विन वदि 5 भौमे श्रीवृन्दावन शुभ स्थाने श्री श्रोत्री आनन्दरामस्तस्यात्मजेन गोकुलेश्वरदासेन लिखितं मिदं पुस्तकं आत्म पठनार्थम् शुभस्तु॥ मंगलं भवतु सर्वदा॥ श्रीश्रीराधारमणो जयति॥[42]

राधादामोदर इनके सेव्य विग्रह थे। श्रीगोविन्ददेवजी का भव्य मन्दिर वि॰सं॰ 1647 में इनकी विद्यमानता में पूर्ण हुआ—

मुनिवेदर्तु चन्द्राख्य संवत् मंदिर सम्भवम्।
उपश्लोक यतोऽप्यस्य श्रीगोविन्दः प्रसीदतु॥[43]

(मुनि=7, वेद=4, ऋतु=6, चन्द्र=1 अर्थात् वि.सं.1647 में यह मंदिर बना। इसकी स्तुति करने वाले से भी श्री गोविन्द प्रसन्न हों। उल्लेखनीय है कि गोविन्द मंदिर के शिलालेख में इसे बादशाह अकबर के शासनकाल के 34वें वर्ष में निर्मित बताया गया है।)

इनका देहावसान वि॰सं॰ 1671 के लगभग वृन्दावन में ही हुआ।[44] इनकी समाधि श्रीराधादामोदर की दक्षिण दिशा में स्थित है। इनकी परिक्रमा-शिला भी इसी मन्दिर में स्थित है। कहा जाता है कि किसी दिग्विजयी संन्यासी को इन्होंने शास्त्रार्थ में परास्त कर उसका शास्त्र मद विचूर्ण किया था। वैष्णवों में प्रचलित मान्यता के अनुसार एक बार रूप गोस्वामी के पास कोई दिगविजयी पंडित अपने साथियों के साथ आया और उसने रूप गोस्वामी जी को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी। रूप गोस्वामी जी ने कहा— हम तो संसार से विरक्त होकर यहाँ अपनी भजन-साधना कर रहे हैं। ये सांसारिक प्रपंच हमारे आचरण से परे है। पंडित एवं उसके साथी ब्राह्मणों के बार-बार चुनौती देने पर भी रूप गोस्वामी जी शांत भाव से अपने भजन में रत रहे। रूप गोस्वामी के इस व्यवहार से वह दिगविजयी ब्राह्मण और अधिक बौखला गया। उसने कहा— हमसे शास्त्रार्थ नहीं करना है तो अपना हार पत्र हमें लिखकर दे दो। यह सुनकर रूप गोस्वामी जी ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें हार पत्र देते हुए विदा किया और पुनः एकाग्र

---

42. संस्कृत कैटलॉग - 3 पृ. 447 वृन्दावन शोध संस्थान
43. गोविन्द मंदिर अष्टक - जीव गोस्वामी, छन्द-9
44. वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन में संग्रहीत अभिलेखों के आधार पर गोस्वामी जीव का निधन काल यही प्रामाणिक ठहरता है।

होकर भजन में लीन हो गये। वह ब्राह्मण प्रसन्नतापूर्वक रूप गोस्वामी जी से हार पत्र लेकर जा ही रहा था, कि जीव गोस्वामी जो उस दौरान यमुना स्नान हेतु गये हुए थे, उन्हें यह समाचार मिला। उन्होंने ब्राह्मण तथा उसके साथियों को स्वयं से शास्त्रार्थ के लिए रास्ते में ही रोक लिया।

परिचर्चा में जीव गोस्वामी उससे विजयी हुए और जीव उन्होंने अपना जीत पत्र तथा रूप गोस्वामी जी का दिया हुआ हार पत्र उस दिगविजयी ब्राह्मण से प्राप्त किया। गौड़ीय सम्प्रदाय पर केन्द्रित कई ग्रन्थों के रचनाकार वृन्दावन निवासी गोपाल राय ने इस घटना को अप्रकाशित पाण्डुलिपि वृन्दावनधामानुरागावली में रेखांकित किया है।[45] श्री रूप गोस्वामी को इनका यह व्यवहार सहन न हुआ और उन्होंने अपने पास से इन्हें पृथक् कर दिया। जीव गुरु आज्ञा से चले तो गए किन्तु उस दुःख के कारण यमुना-जल में चून घोलकर (मधुकरी से प्राप्त आटा) सेवन करते हुए दो मास तक रहे–

चून घोरि पीयो कोई दिन, कोई दिन ब्रजरज ही खाई।
यह विधि वास कियौ तह रहिं, कछु और वस्तु नहि पाई॥[46]

सनातन गोस्वामी ने इन पर कृपा कर बड़ी युक्ति से इन्हें क्षमा दिलाई। बादशाह अकबर के अनुनय-विनय पर ये आगरा भी गए थे किन्तु रातों-रात

---

45. **पुनि दिगविजै करत पंडित इक वृंदावन में आयौ।**
रूप गुंसाई सौं चरच हित संग पंडितन लायौ॥
कही रूप गोस्वामी सौं कछु चरचा मोसौं कीजै।
इनन कही हम तौ विरक्त तौ हार पत्र लिखि दीजै॥
हार पत्र लिषि दियौ जवै तव है प्रसन्न उठि चाले।
आपुस में मग मांझ कही, तुम पंडित द्रगननि हारे॥
जीव गुसांई न्हान गये मग सुनि यह तिनहि पचारे।
जीव गुसांई चरचा करिकै वाद सु यनसौं कीनौ॥
तह चरचा में जीति तिनें निज हार पत्र लै लीनो।
गुरन सुनी यह बात जबै तब मन में अति दुष पायौ॥
हैं विरक्त दिग विजई सौं क्यों जीत पत्र लै आयौ।... दसमोध्याय छन्द – 4, 5, 6, 7, 8

46. वृन्दावन धामानुरागावली– गोपाल राय, दसमोध्याय छन्द – 12, अप्रकाशित पाण्डुलिपि।

वृन्दावन लौट आए थे।[47] कहते हैं कि अकबर ने इन्हें ग्रन्थ-लेखन के लिए आगरे से कागज भिजवाया था।[48]

इनके द्वारा रचित ग्रन्थ **हरिनामामृत व्याकरण, गोपालचम्पू, माधव-महोत्सव, गोपाल विरुदावली, रसामृत शेष, दुर्गम संगमिनी** (टीका), **लोचन रोचनी** (टीका), **गोपालतापनी उपनिषद्** (टीका), **ब्रह्मसंहिता दिग्दर्शिनी** (टीका), **क्रम संदर्भ** (श्रीमद्भागवत पर टीका), **वैष्णवतोषिणी, भागवत सन्दर्भ,** (षट सन्दर्भ: तत्व, भागवत, परमात्म, कृष्ण, भक्ति और प्रीति) **सर्व संवादिनी** एवं **श्रीराधाकृष्णार्चन दीपिका** आदि हैं। जीव गोस्वामी कृत कई ग्रंथ पांडुलिपियों के रूप में संस्थान के ग्रंथागार में उपलब्ध हैं।

गदाधर भट्ट—

गौड़ीय वैष्णव समाज में गदाधर भट्ट जी का नाम श्रद्धापूर्वक लिया जाता है आप रघुनाथ भट्ट जी के एकमात्र शिष्य थे। ये दाक्षिणात्य तैलंग ब्राह्मण थे। पूर्व संस्कारों एवं युगल सरकार (राधाकृष्ण) की कृपा से आपका मन कृष्ण भक्ति की ओर आकर्षित हुआ। भगवद्कृपा से सर्वप्रथम आपसे एक अद्‌भुत पद '**सखी हौं स्यामा रँग रँगी...**' की रचना हुई जिसकी ख्याति तत्कालीन समय में सर्वत्र हुई। वृन्दावन में किसी साधु के मुख से इस पद को सुनकर श्रीजीव गोस्वामी पाद ऐसे चकित हुए कि आपने गदाधर भट्ट जी के पास एक पत्र में रघुनाथदास गोस्वामी द्वारा रचित श्लोक लिखकर कुछ साधुओं के हाथ इनके पास भेजा—

अनाराध्यराधापदाम्भोजरेणु,
मनाश्रित्य वृन्दाटवीं तत्पदाङ्काम्।
असम्भभाष्य तद्भावगम्भीर चित्तानु,
कुतः श्यामसिन्धोः रसस्यावगाः॥

---

47. देखें पूर्व अध्याय—(पृ०10) गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर और ऐतिहासिक सन्दर्भ।

48. देखें पूर्व अध्याय— (पृ० 16) गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर और ऐतिहासिक सन्दर्भ।

(अर्थात् जिसने श्रीराधा के चरण कमल रज की आराधना नहीं की तथा जो राधाचरण कमलांकित श्री वृन्दावन के आश्रित नहीं हुआ और जिसने राधा भाव से गम्भीर चित्त वाले रसिकों का संग नहीं किया वह कैसे श्रीश्याम रस रूप के महासमुद्र में गोता लगा सकता है)

इस पत्र को लेकर जब साधुगण गदाधर भट्ट के पास पहुँचे तो वे प्रात: काल कुएँ के समीप बैठे दाँतुन कर रहे थे। जीव गोस्वामी के द्वारा भेजे गये पत्र को पढते ही वे बाह्य दशा शून्य हो गये और बिना कुछ सोचे समझे वहाँ से सीधे वृन्दावन की ओर चल दिये। वृन्दावन आकर आपने जीव गोस्वामी जी का सानिध्य प्राप्त किया। गदाधर भट्टजी के सेव्य निधि मदनमोहन जी हैं जो उन्हें माघ शुक्ल पंचमी (बसंत पंचमी) को यमुनाजी की रेणुका से प्राप्त हुए थे। जीव गोस्वामी जी के वृद्ध होने पर इनका संकल्प पत्र जिसमें श्रीविग्रह राधादामोदर की सेवा-पूजा, पूजनोपकरण एवं पाण्डुलिपियों के उत्तराधिकार तथा रख-रखाव का उल्लेख हैं, गदाधर भट्टजी के द्वारा तैयार किया गया था। **(चित्र-3, पृ०110)** आपकी रचनाओं में योगपीठ वर्णन, यमुना स्तव एवं ब्रजभाषा के फुटकर पद उपलब्ध हैं। गदाधर भट्टजी के जीवन चरित्र का सुन्दर एवं सूक्ष्म चित्रण नाभादास ने अपनी शब्द तूलिका से किया है–

सज्जन, सुहृद, सुशील वचन आरज प्रतिपालय।
निर्मत्सर निहकाम कृपा करूणा के आलय॥
अनन्य भजन दृढ करनि धर्यौ वपु भक्तनि काजै।
परम धाम कौ सेतु विदित वृन्दावन गाजै॥
भागवत सुधा वरषै वदन, काहू कौ नाहिन दुखद।
गुन निकट गदाधर भट्ट, अति सबहिन को लागै सुखद॥[49]

प्रबोधानन्द सरस्वती–

ये महाप्रभु चैतन्य के अनुगत परम विद्वान् संन्यासी थे। सार्वभौम भट्टाचार्य की भाँति इनका हृदय-परिवर्तन हुआ था तथा आन्ध्र प्रदेश के वेलङ्गगुरी

49. नाभादास कृत भक्तमाल।

के रहने वाले थे। नरहरि चक्रवर्ती ने 'भक्तिरत्नाकर' नामक बंगला ग्रन्थ में इन्हें गौरचन्द्र-प्राणधन बताया है।[50] स्वामी मनोहरदास कृत 'अनुरागवल्ली' से ज्ञात होता है कि ये गृहस्थ थे।[51] 'चैतन्य चन्द्रामृतम्' की 'रसास्वादिनी टीका' में इन्हें वेदान्त, सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा, आगमशास्त्र, महापुराण, इतिहास, पञ्चरात्र, अलंकार, काव्य, नाटकादि सिद्धान्तों में निपुण बताया गया है।[52] **'वृन्दावनमहिमामृतम्', 'संगीतमाधवम्', 'रासप्रबन्ध'** के सहस्राधिक श्लोक इनकी भाषा और छन्द पाण्डित्य के मूर्ति प्रतीक है। गोपालतापनी की **'कृष्णवल्लभा टीका'** दर्शनशास्त्र पर इनके सूक्ष्म अधिकार को व्यक्त करती है। काशीस्थ 'बिन्दुमाधव मन्दिर' के निकट एक मठ में वास करते हुए ये सहस्रों शिष्यों को वेदान्त का उपदेश दिया करते थे। वृन्दावन आकर इन्होंने भक्ति-ग्रन्थों का प्रणयन किया। महाप्रभु की कृपा से ये प्रकाशानन्द से प्रबोधानन्द बन गये। इनकी समाधि वृन्दावन के कालियदह घाट पर स्थित है। भक्तमाल के प्राचीन टीकाकार प्रियादास ने इनके विषय में लिखा है –

श्री प्रबोधानन्द बड़े रसिक आनन्दकन्द,
श्री चैतन्यचन्द्रजू के पारषद प्यारे॥
राधाकृष्ण कुंज केलि निपट नबेलि कही,
झेलि रसरूप दोऊ किए दृगतारे है॥[53]

कृष्णदास –

ये जीव गोस्वामी जी के शिष्य थे। वृन्दावन शोध संस्थान में संरक्षित दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि जीव गोस्वामी के उपरान्त उनका अभिलेखागार इनके संरक्षण में रहा **(चित्र-3, पृ॰110)** इन्होंने गौर नाम रस चम्पू तथा लघु गोपाल चम्पू भाषा में अपने सन्दर्भ में लिखा है–

50. त्रिमिल्ल बैंकट और प्रबोधानन्द– भक्ति रत्नाकर, पृ॰ 605
51. अनुरागवल्ली, पृ॰7
52. मैन्यूस्क्रिप्ट्स कैटलोग, इण्डिया आफिस लाइब्रेरी, भाग-7, 2963, पृ॰ 1504
53. प्रियादास कृत भक्तिरसबोधिनी टीका, छं॰ सं॰ 612

श्री जीव जीवन मेरौ उन्हीं कौ मैं हूँ चेरौं,

जाके राधादामोदर वृन्दावन गाजे हैं।[54]

श्री जुत जीव गुसाईं ध्याऊँ। नित बदन करि कृपा मनाऊँ॥[55]

जीव गोस्वामी का उपस्थिति काल वि०सं० 1568 से 1671 के लगभग है।[56] अतः ये जीव गोस्वामी के शिष्य वि० सं० 1671 के पूर्व हुए होंगे और उनकी आयु उस समय 40 के लगभग रही होगी। इस प्रकार इनका उपस्थिति काल वि०सं० 1660 से 1690 के आसपास माना जा सकता है और इनका रचनाकाल वि०सं०1660 के पूर्व। श्रीराधादामोदर इनके आराध्य थे। गौरनामरस चम्पू में इन्होंने अपने ब्रजवास और ग्रन्थ का नामोल्लेख इस प्रकार मिलता है–

कृष्णदास ब्रजबास रचत नाम-विलास,

गौर नाम रस चम्पू जामै रस भ्राजे हैं।[57]

इनकी रचनाओं में कृष्णदास तथा कृष्ण कवि दोनों की ही छाप मिलती हैं। कदाचित कृष्ण कवि इनका उपनाम हो। 'लघुगोपाल चम्पू' जीव गोस्वामी के 'गोपाल चम्पू' का अति संक्षिप्त ब्रजभाषा पद्यानुवाद है। गोपाल चम्पू जैसे प्रकाण्ड पाण्डित्य पूर्ण संस्कृत ग्रन्थ का काव्यमय संक्षिप्त अनुवाद उनके पाण्डित्य का द्योतक है।

नारायण भट्ट–

ब्रज का पुनरोद्धार करने वाले रूप एवं सनातन की तरह ही नारायण भट्टजी का इस कड़ी में महत्वपूर्ण स्थान है। दक्षिण भारत के मदुरा नगर में जन्मे नारायण भट्टजी ने अल्पायु में ही विद्या अध्ययन कर लिया था। लगभग 12 वर्षों तक राधाकुण्ड में रहने के बाद ये ब्रज के 'ऊँचा गांव' में रहने लगे। रासलीलानुकरण के आरम्भ कर्ताओं में भट्टजी का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके

54. गौरनामरस चम्पू, प्रथम अंक, मंगलाचरण, पृ० 3
55. लघु गोपाल चम्पू भाषा, प्रकाशक बाबा कृष्णदास जी।
56. चैतन्य सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य-डॉ०नरेशचन्द्र बंसल, पृ.274
57. गौरनामरस चम्पू, प्रथम अंक, मंगलाचरण, पृ० 3

द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ— **ब्रज भक्ति विलास, ब्रजोत्सवचन्द्रिका, ब्रजोत्सव आह्लादिनी, वृहद् ब्रजगुणोत्सव** (अप्राप्य), **भक्तिविवेक, भक्तिरस तरंगिणी, प्रेमांकुर नाटक** (अप्राप्य), **भागवत की रसिकाह्लादिनी टीका, भक्तिभूषण सन्दर्भ, साधन दीपिका, ब्रजमहोदधि** (अप्राप्य)।

गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के ग्रंथ रत्नों की श्रीवृद्धि में योगदान देने वाले सुधीजनों में विश्वनाथ चक्रवर्ती, कृष्णदास कविराज, बल्देवविद्याभूषण, भगवतमुदित एवं सूरदास मदनमोहन के साथ ही परिवर्ती भक्त सुकवियों में वल्लभरसिक, किशोरीदास, सुबलश्याम, वैष्णवदास रसजानि साधुचरण, वृन्दावनदास ललित किशोरी एवं ललित माधुरी आदि के साथ अनेक नाम उल्लेखनीय हैं।

ब्रज की ग्रंथागार संस्कृति एवं कुछ अप्रकाशित सूची पत्र (Catalogue)-

किसी भी अंचल की संस्कृति वहाँ के सैंकड़ों वर्षों की परम्पराओं एवं विचारों का परिष्कृत स्वरूप होती है। भारत की प्रत्येक आंचलिक संस्कृति की अपनी-अपनी विशिष्टतायें हैं। आंचलिक संस्कृतियों के इस क्रम में ब्रज का महत्त्वपूर्ण स्थान होने का एक प्रमुख कारण यह भी है कि कृष्ण भक्ति से जुड़ा प्रमुख केन्द्र होने के कारण यहाँ निम्बार्क, वल्लभ, गौड़ीय, राधाबल्लभ, हरिदासी एवं ललित आदि वैष्णव सम्प्रदायों ने अलग-अलग कालक्रमों में विस्तार ग्रहण करते हुए यहाँ भक्ति के साथ देवालयी संस्कृति को भी जन्म दिया जिसने साहित्य, संगीत एवं कला के क्षेत्र में एक नई छाप छोड़ी। ब्रज की इसी देवालयी संस्कृति के अन्तर्गत भारत की आंचलिक संस्कृतियों का समन्वय भी इसकी अपनी बड़ी विशेषता रही है। इसी के साथ यहाँ जनमानस में प्रचलित लोक परम्पराओं ने भी सतत् श्रृंखला चलाये रखी फलतः लोक एवं देवालयी दोनों संस्कृतियों के परस्पर सामंजस्य से ब्रज संस्कृति ने स्वयं को भारत की आंचलिक संस्कृतियों में शीर्ष पर स्थापित किया।

वास्तव में अगर देखा जाय तो यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि एक जमाने में ब्रज की वैष्णव सम्प्रदायों से सम्बद्ध प्राचीन मंदिर-देवालयों ने ज्ञान संरक्षण की दिशा में पारम्परिक विश्वविद्यालयों की भाँति कार्य किया जिसमें न केवल साहित्य और संगीत को प्रश्रय मिला बल्कि यहाँ खान-पान की परम्पराओं के रूप में प्रचलित मनोरथों तथा कला-परम्पराओं के रूप में ब्रज संस्कृति ने अपने अनूठे वैविध्य के साथ क्रमिक विकास किया। दर्शन/प्रदर्शन के साथ ही लिखित परम्परा के अन्तर्गत भी इन मनोरथों से जुड़ी प्राचीन पाण्डुलिपियाँ देवालयी संस्कृति की अपनी विशेषता है।

ब्रज में विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों से जुड़े मंदिर-देवालय जिन्हें यहाँ कुञ्ज और हवेली कहकर भी सम्बोधित किया गया, के अन्तर्गत आज के विश्वविद्यालयों की तरह ही विभाग स्थापित थे, जो देवालय प्रबन्ध की अपनी

पारम्परिक विशिष्टता थी। जिसके अन्तर्गत भण्डार, दूधघर, रसोई, फूलघर एवं खिरक आदि के साथ ही साहित्य के सृजन और संरक्षण के लिये स्वतंत्र विभाग स्थापित था। ब्रज की विभिन्न वैष्णव सम्प्रदायों के अन्तर्गत पिछले 450-500 वर्षों में अथाह साहित्य सृजित एवं प्रतिलिपित हुआ। संस्कृत, ब्रजभाषा, बंगला, उड़िया एवं गुरुमुखी में रची गयी इस साहित्य सम्पदा ने सुधीजनों के सहयोग से न केवल अखिल भारतीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक ख्याति अर्जित की। जिसके प्रमाण भारत के विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथागारों के साथ ही यूरोप में भारत विद्या के विभिन्न केन्द्रों में रखी पाण्डुलिपियों के रूप में देखे जा सकते हैं। इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन के साथ ही भारतविद्या (Indology) से जुड़े विदेशी हस्तलिखित ग्रंथागारों के सूचीपत्र (Catalogue) इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है।

वैष्णव ज्ञान सम्पदा की पोथियों के सृजन, पल्लवन एवं इसकी विकास यात्रा में ब्रज की देवालयी संस्कृति का महत्त्वपूर्ण योगदान है। जिसमें गौड़ीय वैष्णवों के द्वारा वृन्दावन में स्थापित पुस्तक ठौर का अपना महत्व है। उल्लेखनीय है कि तत्कालीन दौर में ब्रज में स्थापित हर वैष्णव सम्प्रदाय अपनी-अपनी तरह से पोथियों के सृजन एवं विस्तार में संलग्न था, उस जमाने में न केवल गौड़ीय वैष्णव बल्कि निम्बार्क, वल्लभ, राधावल्लभ, हरिदासी एवं ललित आदि सम्प्रदाय भी अपने-अपने आध्यात्मिक संविधान के अनुसार पोथी सृजन एवं उनकी प्रतिलिपियाँ तैयार करते हुए ब्रज के तत्कालीन भक्ति ज्ञान परिदृश्य को स्थापित करने में अपना सक्रिय योगदान दे रहे थे। जिसे संक्षेप में निम्नानुसार समझा जा सकता है।

वल्लभ सम्प्रदाय—

ब्रज संस्कृति को एक बड़े फलक पर स्थापित करने में वल्लभ कुल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। महाप्रभु वल्लभाचार्य इस वैष्णव सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य थे। जिनके बाद बिठ्ठलनाथ जी ने इस सम्प्रदाय को सुगठित करते हुए

यहाँ अष्टछाप की स्थापना की। आरम्भ में इस सम्प्रदाय के प्रमुख केन्द्र गोवर्धन एवं गोकुल रहे। काफी समय तक यहाँ सेवित रहने के उपरान्त उत्तर मध्यकाल में श्रीनाथ जी का विग्रह नाथद्वारा ले जाया गया जहाँ अद्यतन यह विराजमान हैं। कालांतर में इस वैष्णव सम्प्रदाय ने अखिल भारतीय विस्तार पाया। विठ्ठलनाथ जी के अपने सात पुत्रों को अलग-अलग श्रीविग्रह प्रदान करते हुए उन्हें वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न स्थानों पर भेजा। इसी दौरान उन्होंने अपने परम प्रिय कृपा पात्र लाल जी (तुलसीदास) जिनका पालन उन्होंने पुत्रवत ही किया था, को सिंध क्षेत्र में भेजा जहाँ डेरागाजी खाँ (वर्तमान पाकिस्तान) में उन्होंने वैष्णव धर्म की पताका फहराई। शनै-शनै इन आठ गद्दियों ने शाखा-उपशाखाओं के रूप में विस्तार ग्रहण किया और इसी के साथ इनकी अभिलेखीय सम्पदा भी विस्तार पाती रही।

ऐतिहासिक संदर्भों से ज्ञात होता है कि स्वयं बादशाह अकबर विठ्ठलनाथ जी से खासा प्रभावित था। न केवल अकबर के द्वारा इन्हें गोकुल की जमीन दान में दी गई बल्कि उस दौरान उस परिक्षेत्र में लगने वाली प्रसिद्ध मण्डी के कर का अधिकार भी वल्लभ कुल के इन गोस्वामियों को दिया गया जिससे सम्बन्धित शाही दस्तावेज आज भी इन गोस्वामियों के निजी संग्रहों सहित राष्ट्रीय अभिलेखागार एवं राज्य अभिलेखागारों से देखे जा सकते हैं। इस वैष्णव सम्प्रदाय में वैसे तो एक से बढ़कर एक कई महान साधक हुए जिन्होंने सैंकड़ों रचनायें की लेकिन प्राचीन ब्रजभाषा गद्य के रूप में इनका वार्ता साहित्य स्वयं में अद्भुत है। इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित विभिन्न देवालयों जो कामवन, जतीपुरा, गोवर्धन, श्रीनाथद्वारा एवं मध्यप्रदेश तथा गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित हैं, के अन्तर्गत इनके हस्तलिखित ग्रंथागार दर्शित होते हैं लेकिन एक जमाने में गोकुल में इनका विशाल अभिलेखागार था। आजादी के बाद डेरागाजी खाँ में स्थित मंदिर भी वृन्दावन स्थानान्तरित हुआ जिनके साथ सैंकड़ों पाण्डुलिपियाँ भी यहाँ आ गईं। इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित अष्टम गद्दी की कुछ पाण्डुलिपियाँ वृन्दावन शोध संस्थान को भी प्राप्त हुई हैं।

निम्बार्क सम्प्रदाय–

ब्रजमण्डल के अन्तर्गत अपने आरम्भिक समय में इस वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र गोवर्धन (नींवगाँव) एवं मथुरा रहा लेकिन वृन्दावन इस सम्प्रदाय से जुड़े साधकों की प्राचीन साधनास्थली रहा है। कालांतर में निम्बार्काचार्यों की प्रमुख गद्दी वर्तमान अजमेर (राजस्थान) के समीप सलेमाबाद में स्थापित हुई। ब्रज की उपासना परम्परा से सम्बद्ध इस सम्प्रदाय के अनेक मंदिर देवालय ब्रज के गोवर्धन, मथुरा, राधाकुण्ड, वृन्दावन के साथ ही भारत के विभिन्न राज्यों एवं नेपाल तक स्थापित है। वृन्दावन में स्थित श्रीजी कुञ्ज तथा पड़रौना कुंज में इस सम्प्रदाय का पारम्परिक अभिलेखागार स्थापित रहा जहाँ सम्प्रदाय से सम्बन्धित हस्तलिखित ग्रंथ एवं दस्तावेज विद्यमान थे। निम्बार्क सम्प्रदाय से सम्बन्धित सामग्री वृन्दावन के निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय, यशोदानंदन मंदिर, पड़रौना कुंज एवं टोपीकुंज सहित अन्य पारम्परिक स्थलों पर दर्शित है जिनमें विभिन्न साधकों की वाणियों सहित महत्वपूर्ण दस्तावेजों को प्रमुखता से समझा जा सकता है। वृन्दावन शोध संस्थान के द्वारा श्रीजी की कुंज के उस अभिलेखागार की कुछ पाण्डुलिपियों का डिजिटाइजेशन भी किया गया है जो पूर्व में निम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय को दे दी गई थी। जिसका सूचीपत्र (कैटलॉग) भी संस्थान के रिपोग्राफी अनुभाग में संरक्षित है।

राधावल्लभ सम्प्रदाय–

इस वैष्णव सम्प्रदाय का प्रधान केन्द्र वृन्दावन रहा है। 15–16वीं शताब्दी में गो॰हित हरिवंश महाप्रभु द्वारा प्रकटित इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत प्रचुर साहित्य सृजित एवं पल्लवित हुआ जिसकी हजारों पाण्डुलिपियाँ विभिन्न सार्वजनिक एवं निजी ग्रंथागारों में देखी जा सकती हैं। अन्य वैष्णव सम्प्रदायों की तरह ही यहाँ आचार्य ग्रंथों को वाणी भी कहा गया तथा वाणी के सृजन एवं श्रवण के साथ ही वाणी लेखन को भी भक्ति के एक अंग के रूप में स्वीकार करना इस वैष्णव सम्प्रदाय का अपना वैशिष्ट्य है। सम्प्रदाय में प्रचलित ध्येय

वाक्य '**नाम वाणी निकट, श्यामा श्याम प्रकट। नाम वाणी जहाँ श्यामा श्याम तहाँ**'[58] की सार्थकता यहाँ अलग-अलग कालक्रम में रचित ग्रंथ शृंखलाओं से देखी जा सकती है। इस सम्प्रदाय का अपना अभिलेखागार तो प्रधान मंदिर में रहा ही लेकिन यहाँ बिन्दु कुल (गो.हित हरिवंश महाप्रभु से सम्बन्धित गोस्वामीजनों) तथा नाद कुल (गो.हित हरिवंश महाप्रभु से जुड़ी विरक्त परंपरा) से सम्बद्ध महानुभावों के स्थानों पर भी प्राचीन ग्रंथ सम्पदा दृष्टिगोचर होती है।

सन्दर्भों से ज्ञात होता है कि सम्प्रदाय से जुड़े किसी भी रचनाकार के द्वारा नई रचना किये जाने पर यहाँ उस रचना की कम से कम तीन अथवा अधिकतम 10 प्रतियाँ तैयार होती थी जिसमें से एक प्रति श्रीविग्रह के समक्ष अर्पित किये जाने की परम्परा थी, जो सम्प्रदाय के अभिलेखागार में जमा हो जाती थी।[59] उत्तर मध्यकाल में औरंगजेब के दमन चक्र के दौरान जब वृन्दावन से देव विग्रह अन्य-अन्य स्थानों पर गये उस समय राधावल्लभ जी का श्रीविग्रह कामवन (राजस्थान) में विराजित हुआ। कामवन जाने तक जहाँ-जहाँ मार्ग में पड़ाव हुए अन्य आवश्यक सामग्री के साथ ग्रंथ निधि भी डोले के साथ-साथ चलती रही। वर्तमान में राधावल्लभ सम्प्रदाय पर केन्द्रित विपुल साहित्य मंदिर के सेवायत अधिकारी श्रीहित राधेशलाल जी गोस्वामी, श्रीहित आनन्दलाल गोस्वामी के साथ ही अनेक गोस्वामी परिवारों के यहाँ एवं रसभारती संस्थान में संरक्षित है। इस सम्प्रदाय से जुड़े साधकों ने ग्रंथ रचना और इसकी प्रतिलिपियाँ

---

58. सेवकवाणी– सेवकजी (दामोदरदास, राधावल्लभ सम्प्रदाय)
59. भगवतमुदित कृत अनन्य रसिक माल में राधावल्लभ सम्प्रदाय के 17वीं शताब्दी के संत दामोदरस्वामी की परिचई से ज्ञात होता है कि उनके द्वारा श्रीमद्‌भागवत की 10 पोथियाँ तैयार करके वितरित की गईं तथा उन्होंने कुछ प्रतियाँ मंदिर के अभिलेखागार (गुरुकुल) में भी दी थीं–

    लिखि-लिखि दस भागौत पुरान। दस पुस्तक सुन्दर लिपि वान॥
    गुरुकुल में पधराई तथा। पात्र विचारि और ठां जथा॥

करने को भक्ति का अभिनव अंग माना [60] और वाणी अक्षरों को श्याम-श्यामा का भाव प्रदान करते हुए वाणियों के श्रवण, लेखन एवं प्रतिलिपिकरण के कार्य को ही भक्ति का उत्कृष्ट अंग स्वीकारते हुए पीढी दर पीढी वाणी लेखन में लगे रहे।

हरिदासी सम्प्रदाय—

वृन्दावन के प्रसिद्ध देवविग्रह ठा.श्रीबाँके बिहारीजी के प्राकट्यकर्ता स्वामी हरिदास जी इस वैष्णव सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य हैं। वृन्दावन की रस उपासना को उद्घाटित करने वाली हरित्रयी (गो.हित हरिवंश महाप्रभु, स्वामी श्री हरिदास एवं संत प्रवर हरिराम व्यास) में स्वामी जी का अपना विशिष्ट स्थान है। वृन्दावन के निधुवन में निवास करते हुए स्वामी जी ने अपनी संगीत साधना से इष्टाराध्य बाँके बिहारी की सेवा की। इनकी रचनाओं का संकलन 'केलिमाल' नाम से विख्यात है। कालांतर में इस सम्प्रदाय से सम्बद्ध अष्टाचार्यों की वाणियों के साथ ही अनेक वाणीकारों ने विपुल साहित्य रचा जिनकी हजारों पाण्डुलिपियाँ विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथागारों में अद्यावधि विद्यमान हैं। हरिदासी

---

60. 19 वीं शताब्दी में विद्यमान वृन्दावन के ख्याति प्राप्त सुकवि गोपालराय ने अपनी ऐतिहासिक रचना वृन्दावन धामानुरागावली में तत्कालीन सम्प्रदायाचार्य गोस्वामी श्रीहित आनन्दलाल अधिकारी जी के ग्रंथागार के सन्दर्भ में सूचना देते हुए बताया है कि उस ग्रंथागार को उनके पिता खड्गराय प्रवीन के द्वारा सुव्यवस्थित किया गया था—

आनंदलाल जहाँ अधिकारी अति गुनन्य उपकारी।
राधाबल्लभ कौ अधिकार जु तिन कौ अब तह ठारी॥
कविता में कोविद रू रसिक गुन गाहक धीरज मानां।
हित कुल मंडन भाविक अति सबकौ राखत मानां॥
नये पुराने ग्रंथ जिते कविता के संग्रह कीने।
तिनके अर्थ चोज समझन में जाहर परम प्रवीने॥
तिन मम पितु प्रवीन कवि सौं अति धरम सनेह बढायों।
ग्रंथ सार संग्रह हज्जारन कवि कौ सु करवायौ॥

(वृन्दावन के वैष्णव लिपिकार: एक अज्ञात परम्परा की खोज, डॉ॰ राजेश शर्मा, पृ॰ 75)

सम्प्रदाय से सम्बन्धित प्राचीन पांडुलिपियाँ रसिक बिहारी मंदिर टटिया स्थान, गोरीलाल कुंज एवं गोस्वामी घरों में देखी जा सकती हैं।

ललित एवं चरणदासी (शुक) सम्प्रदाय—

उत्तर मध्यकाल में स्थापित इस वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य वंशी अलि थे। सेवा परम्परा में राधा की प्रधानता इस वैष्णव सम्प्रदाय की अपनी विशिष्टता है। वृन्दावन इस वैष्णव सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र रहा है। इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित शाहजहाँपुरवाले मंदिर में आज भी प्राचीन पोथियाँ विद्यमान हैं। कालांतर में इसकी शाखायें जयपुर एवं दिल्ली में भी स्थापित हुईं। ब्रज की साँझी कला को इस वैष्णव सम्प्रदाय के वाणीकारों ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। पूर्व में इस वैष्णव सम्प्रदाय का स्थान चीरघाट स्थित रासमंडल के समीप भी रहा है। खेमराम नाम के किसी प्रतिलिपिकार के द्वारा ललित सम्प्रदाय के आचार्य किशोरी अलि की वाणी को पुस्तकाकार (पाण्डुलिपि) स्वरूप प्रदान करने का वर्णन एक पोथी में मिलता है। ग्रंथ की पुष्पिका में लिपिकार ने लिखा है कि अलि जी के द्वारा खर्रों पर रचित पदों को मैंने पाण्डुलिपि का रूप प्रदान किया है—

खररा जे पद के भये ते राखे हैं डारि।
खेमचंद पोथी करी लीने सबै उतारि॥

इति श्री किशोरी अलि कृत वाणी संपूर्ण॥शुभं भूयात॥ श्रीराधाकृष्णौ जयति॥ संवत्1834 कार्तिक कृष्ण पक्ष 7 सप्तम्यां गुरु वासरे॥ दोहा॥ बानी रस सांनी सरस प्रगटी रसिकन हेत। अली किशोरी कृपा ते खेमराम लिख देत॥1॥ पठनार्थ सूरति रामजी [61]

चरणदासी सम्प्रदाय से जुड़ी कुछ पोथियाँ भी ब्रजमण्डल सहित अन्य पाण्डुलिपि ग्रंथागारों में देखने को मिलती हैं। वृन्दावन में इस परम्परा में जुड़े साधकों की भजन स्थलियों के उल्लेख मिलते है। चरणदासजी से जुड़े कई चमत्कारिक प्रसंगों की जानकारी विभिन्न पाण्डुलिपियों के साथ ही प्रकाशित

61. ललित सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य — डॉ. बाबूलाल गोस्वामी।

पुस्तकों में भी उपलब्ध है। वर्तमान में इस सम्प्रदाय के साधक नवलमाधुरी जी सम्प्रदाय पर केन्द्रित प्राचीन वाणियों के प्रकाशन की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

ब्रज की ग्रंथागार संस्कृति की परिचायक उपरोक्त वैष्णव सम्प्रदायों से जुड़ी पोथियाँ ब्रजक्षेत्र के विभिन्न निजी संग्रहों सहित अनेक सार्वजनिक हस्तलिखित ग्रंथागारों में आज भी देखी जा सकती हैं। यद्यपि विभिन्न कारणों से इसका एक बड़ा भाग नष्ट हुआ तथापि अवशेष के रूप में विद्यमान विवरण भारतविद्या (Indology) के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ हैं। प्रस्तुत कार्य के दौरान आलोच्य सूचीपत्र के जैसा कोई विस्तृत सूचीपत्र (Catalogue) नहीं मिला तथापि कुछ निजी संग्रहों के संक्षिप्त सूचीपत्र प्राप्त हुए हैं जिन्हें निम्नानुसार समझा जा सकता है—

उपनिषदों का सूचीपत्र—

वृन्दावन के ब्रज संस्कृति शोध संस्थान के दस्तावेज संग्रह के अंतर्गत उपनिषदों का एक हस्तलिखित सूचीपत्र (Catalogue) संरक्षित है सूचीपत्र के आरम्भ में ऐसी कोई सूचना अंकित नहीं है जिससे यह ज्ञात हो सके कि यह सूचीपत्र कब, किसके द्वारा एवं किस प्रयोजन के निमित्त तैयार किया गया था। यह किसी अज्ञात महानुभाव के ग्रंथागार में संरक्षित हस्तलिखित उपनिषदों की सूची है अथवा याद्दाश्श्ती के तौर पर तैयार किये गये पत्रक; कहा नहीं जा सकता। तथापि यह महत्वपूर्ण बात है कि इस सूचीपत्र में एक साथ 108 उपनिषदों के नाम अंकित है जो स्वयं में मूल्यवान जानकारी है।

मूल उपनिषद कितने थे इसका ठीक से पता नहीं चलता। वेदान्त के प्रमुख भाष्यकार शंकर, वाचस्पति मिश्र (9वीं शताब्दी) एवं रामानुज (12वीं शताब्दी) तक इनकी संख्या 30 थी जिनकी प्रसिद्धि वेदशाखाओं के नाम से थी। सुप्रसिद्ध दीपिकाकार शंकरानंद और नारायण के समय (12-14वीं शताब्दी तक) यह संख्या लगभग दुगनी हो गई। वास्तव में यह समय धार्मिक

प्रतिस्पर्धा या सैद्धान्तिक प्रतिष्ठा का संघर्षमय दौर था। अनेक धार्मिक सम्प्रदाय अपनी-अपनी लोक विश्रुति में लगे हुए थे। जिनमें शैव, वैष्णव एवं शाक्त प्रमुख थे। इन सम्प्रदायों ने अपने-अपने सिद्धान्तों के प्रचारार्थ एवं मान वृद्धि हेतु अनेक उपनिषद ग्रंथों की रचना की जिससे यह निरन्तर वृद्धि पाते रहे। वैसे तो प्रमुख उपनिषद 12 हैं। जिनके नाम हैं– ईशावास्य, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, कौषीत और श्वेतासुर। इन सभी पर शंकराचार्य का प्रामाणिक भाष्य है। बाद में शांकर मतानुयायियों ने उन पर टीकायें लिखी हैं शंकराचार्य के अतिरिक्त रामानुज, निम्बार्क, वल्लभ, मध्व आदि जितने भी सम्प्रदाय प्रर्वतक शीर्षस्थ आचार्य हुए उन सभी ने द्वादश उपनिषद ग्रंथों पर भाष्य और टीकायें लिखी।

इन 12 उपनिषदों के अतिरिक्त भी बहुत सारे उपनिषद हैं जिनकी ठीक संख्या ज्ञात नहीं। मुक्तिकोपनिषद में 108 उपनिषद ग्रंथों का नामोल्लेख है। जो सभी गुटकाकार रूप में निर्णय सागर प्रेस बंबई से प्रकाशित हैं।[62] गुजराती प्रिंटिग प्रेस बम्बई से प्रकाशित उपनिषद वाक्य महाकोश में 223 उपनिषद ग्रंथों की नामावली भी दृष्टिगोचर होती है। मुगलकाल के साथ ही ब्रिटिशकाल में भी उपनिषदों को लेकर कई कार्य हुए। अकबर के पौत्र दाराशिकोह की उपनिषदों के प्रति जिज्ञासा सर्वविदित है। उपनिषदों के फारसी भाषांतर जैसे कार्यों ने उसे भारतीय साहित्य में अमर बना दिया।

सन् 1640 ई० में काश्मीर में रहकर दाराशिकोह ने काशी, काश्मीर जैसी तत्कालीन ज्ञानकेन्द्र महानगरियों से ऐसे सैंकड़ों वेदान्तियों और सूफी सन्तों को आमंत्रित किया, जो संस्कृत एवं फारसी के जानकार थे। उन विद्वानों से उसने पहले 6 माह तक उपनिषदों का श्रवण किया। काफी दृव्य व्यय करके दाराशिकोह ने रमजान हिजरी 1007 (1656) में भाषान्तर का कार्य समाप्त किया। दारा ने उस महाग्रंथ को स्वयं सम्पादित किया और उसका नाम रखा 'सिर्रे अकबर' अर्थात् महारहस्य इस महाग्रंथ में 50 उपनिषद अनूदित करके

62. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला।

संकलित किये गये इसके रचनाकाल के 64 वें वर्ष 1720 ई॰ में इसका एक अनुवाद उपनिषद भाष्य के नाम से हिन्दी में हुआ। इसके बाद विदेशी लोगों ने भी इसमें काफी रूचि दिखाई जिनमें एन्क्यूटिंल ड्युपरोन आथमर फ्रांक, मैक्समूलर, एफ॰ मिशल, ओ॰ बोटलिंक एवं पाल ड्यूशन के नाम प्रमुख हैं। इस दिशा में भारत से पहला अंग्रेजी अनुवाद राजा राममोहन राय का है। ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन में संरक्षित 108 उपनिषदों की सूची का पाठ इस प्रकार है— **(चित्र-12, पृ॰114)**

108 उपनिषदांसूचि:

		पृष्ठ			
1	ईशावास्य	1	20	अमृतबिंदूप॰	130
2	केन	2	21	अमृतनादोप॰	131
3	कठ	3	22	अथर्वशिरउप॰	132
4	प्रश्न	8	23	अथर्वशिखोप॰	135
5	मुण्डक	12	24	मैत्रायण्युप॰	136
6	मांडूक्य	15	25	कौषीतक्युप॰	140
7	तैत्तिरीय	24	26	बृहज्जाबालोप॰	149
8	ऐतरेय	29	27	नृसिंहपूर्वोत्तरतापनी	157
9	छांदोग्य	38	28	कालाग्निरुद्रो॰	172
10	बृहदारण्य	74	29	मैत्रेय्युपनि॰	172
11	ब्रह्मोपनिषत्	117	30	सुबालापनि॰	176
12	कैवल्योपनिषत्	118	31	क्षुरिकोपनि॰	181
13	जाबालोपनि॰	119	32	मंत्रिकोप॰	183
14	श्वेताश्वतरोप॰	120	33	सर्वसारोप॰	184
15	हंसोपनि॰	125	34	निरालबोप॰	186
16	आरूणिकोप॰	126	35	शुकरहस्योप॰	187
17	गर्भोपनि॰	127	36	वज्रसूच्युप॰	191
18	नारायणोप॰	128	37	तेजोबिंदूप॰	192
19	परमहंसोप॰	129	38	नादबिंदूप॰	208

39	ध्यानबिंदूप॰	210	69	एकाक्षरोप॰	366
40	ब्रह्मविद्योप॰	215	70	अन्नपूर्णोप॰	367
41	योगतत्त्वोप॰	219	71	सूर्योपनिष॰	371
42	आत्मप्रबाधोप॰	223	72	अक्ष्युपनि॰	380
43	नारदपरिव्राजको॰	225	73	अध्यात्मोप॰	382
44	त्रिशिखीब्राह्मणोप॰	243	74	कुंडिकोप॰	385
45	सीतोपनि॰	249	75	सावित्र्युप॰	386
46	योगचूड़ामण्युप॰	251	76	आत्मोपनि॰	387
47	निर्वाणोप॰	256	77	पाशुपतब्रह्मोप॰	389
48	मंडलब्राह्मणोप॰	257	78	परब्रह्मो॰	391
49	दक्षिणामूर्त्युप॰	261	79	अवधूतोप॰	393
50	शरभोपनि॰	262	80	त्रिपुरातपनो॰	395
51	स्कंदोपनि॰	264	81	श्रीदेव्युपनि॰	403
52	त्रिपान्महानारायणो॰	265	82	त्रिपुरोपनि॰	404
53	अद्वयतारकोप॰	286	83	कठोप॰	405
54	रामरहस्यो॰	288	84	भावनोप॰	407
55	रामपूर्वोत्तरतापनी॰	295	85	रुद्रहृदयो॰	408
56	वासुदेवोप॰	303	86	योगकुंडल्युप॰	410
57	मुद्गलोपनि॰	305	87	भस्मजाबालोप॰	416
58	शांडिल्योप॰	306	88	रुद्राक्षजाबालोप॰	421
59	पैंगलोपनि॰	314	89	गणपत्युप॰	423
60	भिक्षुकोपनि॰	319	90	दर्शनोपनि॰	424
61	महोपनिष॰	320	91	तारसारोप॰	432
62	शारीरकोप॰	339	92	महावाक्योप॰	433
63	योगशिखोप॰	340	93	परब्रह्मो॰	434
64	तुरीयातीतावधूतोप॰	353	94	प्राणाग्निहोत्रो॰	435
65	संन्यासोप॰	354	95	गोपालतापनीयो॰	437
66	परमहंसपरिव्राजको॰	359	96	कृष्णोप॰	439
67	अक्षमालिकोप॰	362	97	याज्ञवल्क्यो॰	444
68	अव्यक्तनृसिंहो॰	364	98	वराहोप॰	446

99	शाट्यायनीयो०	456	104	जाबाल्युप०	464
100	हयग्रीवो०	458	105	सौभाग्यलक्ष्म्यु०	465
101	श्रीदत्तात्रेयो०	459	106	सरस्वतीरहस्यो	468
102	गारुडोप०	462	107	बह्वचोप०	470
103	कलिसंतरणो०	464	108	मुक्तिकोपनिषत्	471

याद्दाश्ती सूचीपत्र—

ब्रज संस्कृति शोध संस्थान के दस्तावेज संग्रह में याद्दाश्ती अभिलेख के रूप में एक सूचीपत्र विद्यमान है। वि० सं० 1947 शक् 1812 में तैयार किये गये इस सूचीपत्र में ग्रंथ संग्राहक ने किन्हीं गंगा महाराज को अपनी दी हुई पुस्तकों के संदर्भ में इसे तैयार किया है— **(चित्र-13)**

श्री

कार्तिक सु...3 संवत 1947 सके 1812 नंबर प्रत पुस्तक गंगा महाराज दी लहे स्मरणार्थ

	अंक	पत्रे
यातिसंध्या	1	6
तैतिरीय भृगुपनिषद	1	3
विष्णुसहस्त्रनाम	1	7
भगवदगीता	1	34
आ.पुर्व शांतिः	1	3
केनोपनिष (द)	1	21
इ.शा.	1	1
वा.लयु	1	6
प्रीपमांडूकय	1	9
शीक्षा (शिक्षा)	1	4
ब्रह्मचिंतका संग्रह	1	8
ब्रह्मवि...	1	4
ब्रह्मसुत्रपातंजलयोग	1	1
पंचिकरण	1	12
ब्रहदारण्य	1	82

हरिप्रियादास का सूचीपत्र—

वृन्दावन के पुराना शहर स्थित राधामोहन मंदिर में संरक्षित इस सूचीपत्र को वि॰सं॰ 1955 में हरिप्रियादास ने संशोधित किया है। किन्हीं रामलाल शर्मा के ग्रंथागार में विद्यमान पाण्डुलिपियों का यह सूचीपत्र 'वैष्णव धर्म मंजूषा' शीर्षक से संज्ञित है। सूचीपत्र को लिपिकर्ता हरिप्रियादास ने तीन कोष्ठों में विभक्त किया है। सूचीपत्र में 46 पांडुलिपियों के विवरण उपलब्ध हैं।जिसे निम्नानुसार समझा जा सकता है—

श्रीराधागोपालविजयतेतरां

अथ वैष्णव धर्म मंजूषा यह सूचीपत्रानुक्रमणिका संशोधिता हरिप्रियादासेन रामलाल सर्मणः गुरुणा श्री मद्राधागोपाल प्रितये लिपि कृतम् सं॰ 1955 (चित्र-14, पृ॰115)

		पत्र	पंक्ति
1	ग्रंथ कर्तु मंगलाचर्णा	1	1
2	पिता पुत्र संवादेन मोक्ष धर्म	2	10
3	अध्यात्म योग्य लक्षणं	2	14
4	अथें दानि भक्ति निर्णायति	3	8
5	अथ सामान्यतो भक्ति...	3	14
6	अथ भक्ति महिमा	4	10
7	अथ याम निर्णायति तत्र प्रतिमा	4	14
8	राधिकाया अति प्रतिमा	5	8
9	अथ स्वयं व्यक्त	5	5
10	अथ पूजांते चर्णामृतम् बंगलाक्षरम्	5	14
11	अथ संगमा वि...करोति	6	2
12	अथ एकादश्युपवास	7	3
13	अथैकादशी महिमा	7	12
14	अथ...अकर्णोप्रत्य	7	12
15	अथाष्ट महाद्वादश्यः	13	2

16	अथ जयाविजयादि लक्षणं	13	11
17	अथ पारयण निर्णय:	14	1
18	अथैकादशी नियमा	15	10
19	अथैकादशी कृत्यं	15	2
20	अथैकादशी कृत्यं	16	4
21	इति वैष्णव धर्म मंजूषायां प्रथम कोष्ट:	16	11
22	कथा श्रवणार्मांविष्कुर्म:	16	13
23	अथ नामोच्चरणामाविष्कर्म	16	2
24	अथ नामार्थवाद कल्पना...	17	3
25	...विष्णु कर्म	17	7
26	अथ त...फलं	17	8
★	तद्रा...अंगुली	18	12
27	अथ तदन धारणो प्रत्य...	17	11
28	मालां निर्णयाम्	18	13
29	अथ मंत्र तंत्र संप्रदायो प...म्	20	2
30	अष्टादशाक्षर मंत्र महात्म्यं	22	8
31	अथ निम्बार्कस्यप्रादुर्भावं निर्णयाम्	23	2
32	अथ चक्रादि धारणं	25	6
33	इति द्वितीय कोष्टकं 2	31	5
34	अथ तृतीय कोष्टां तत्र गुरु सेवा प्रयोजन माह	31	8
35	आदौ गुरु लक्षणा माह	31	2
36	इति गुरु लक्षणानि	36	17
37	अथ शिष्य लक्षणा माह	39	10
38	अथ...नारभे मासादि	37	2
39	दिक्षायां वर्णाधिकार	37	14
40	अथ शिष्य कर्तव्यता	37	5

41	इति गोप...कर्णाविधि	38
42	इत्यात्मसात्कर्णा विधि	39
43	अथ द्वादशां गेषुति...कं	39
	....	
44	अथ भगवदर्यार्थ श्रीविग्रहं	40
45	अथ गुरु दीक्षा...	40
46	इति तृती कोष्टिका	41

पं० मणिराम का सूचीपत्र—

यह संक्षिप्त सूचीपत्र ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन के दस्तावेज संग्रह में विद्यमान है जो किन्हीं पं० मणिराम के द्वारा तैयार किया गया। सूचीपत्र में कालक्रम अज्ञात है तथा संग्रहकर्ता द्वारा संभवत: इसे याद्दाश्ती के रूप में लिखा गया है। इस प्राचीन सूचीपत्र में पोथियों के नाम के आगे उन लोगों के नाम भी अंकित है जिन्हें पोथियां दी गई है। सूचीपत्र में गौड़ीय आचार्यों के द्वारा रचित ग्रंथों का उल्लेख इस सूचीपत्र का अपना वैशिष्ट्य है— **(चित्र–15, पृ०115)**

पंडित मणिरामजी

अमरू शत घर...विदन्मोद
तरंगीणी...सटीक 3
गंगा प्रसाद लघु कौमुदी – 1
हरे कृष्ण जी गोविन्द विरुदावली
सटीक –1
गणेश शास्त्री न्याय प्रकाश
कार्तिक वैशाख माहात्म्य – 2
....
हरील ... गुसा...गोपी लीला–1
निम्बार्क तत्व निर्णय...

....
जुगल माघ काव्य
नवनीत बंग पुस्तक सार...
...रामायण – 3

देवालयी परम्पराओं से पृथक निजी संग्रहों से सम्बन्धित यह सूचीपत्र इस बात के साक्षी है कि यहाँ आमजन में भी पाण्डुलिपियों के प्रति गहरा अनुराग रहा तथा ज्ञान सम्पदा के संरक्षण एवं प्रसार में उस दौरान लोक में प्रचलित निजी ग्रंथागार भी अपना योगदान दे रहे थे। कर्मकाण्ड, व्याकरण, पुराण एवं लोकमानस के अनुकूल विविध विषयों की पोथियां ऐसे संग्रहों में प्रमुखता से विद्यमान थीं। कुल मिलाकर ब्रजमंडल की लोक एवं देवालयी दोनों संस्कृतियों ने ब्रज की ज्ञान संपदा का संवर्द्धन करने में अतुलनीय योगदान दिया जो श्रीकृष्ण की इस लीला भूमि का अपना वैशिष्ट्य है।

वृन्दावन शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रंथागार में क्र॰5425 पर संरक्षित गौड़ीय वैष्णव साधकों के ग्रंथागार का सूचीपत्र आज न केवल ब्रजमण्डल बल्कि भारतीय साहित्यिक जगत की मूल्यवान निधि है। वि॰सं॰1654 (सन्1597 ई॰) के इस सूचीपत्र में पाठ निर्धारण की समस्या तब और अधिक बढ़ जाती है, जब विभिन्न स्थानों पर बंगला भाषी साधकों के द्वारा नागरी लिपि में प्रविष्टियाँ की गई हैं। पाठ सम्पादन के दौरान इस बात का ध्यान रखा गया है कि सम्पादन से मूल पाठ प्रभावित न हो, संभवतः यह सूचीपत्र उन महान् साधकों का याद्दाश्ती अभिलेख ही रहा होगा जिसका उपयोग वे स्वयं करते थे तथा इसे देखकर सुधीजनों को पोथियाँ देते होंगे, यही कारण है कि कई स्थानों पर नागरी लिपि के साथ मध्य में बंगाक्षर भी दर्शित होते हैं। जिसे वे आसानी से समझ पाते होंगे। सूचीपत्र का यथासम्भव पाठ दृष्टव्य हैं—
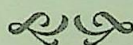
वृन्दावन शोध संस्थान में संरक्षित गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर का सूचीपत्र (Catalogue)

संवत्-1654 पुस्तक संख्या

1-कोथरी

[1] श्रीभागवत नागर
[2] अध्यायानुक्रमणिका
[3] मधुसूदन कृत जन्माधस्य टीका
[4] जन्माधेस्य परिचारिका
[16] उपेन्द्राश्रमघ्तलोकद वायेत्यस्य टीका
एतान्ये कस्मिन् वस्त्रे रचीया

2-कोथरी

[5] वैष्णव तोषणी नागर

3-कोथरी

[6] संदर्भ नागर (द्वय)
[7] विष्णु पुराणीय ब्रह्म रस्त्र
व टीका नागर
[17] तदनु व्याख्या नागर द्वयं
[18] चतुःश्लोकी व्याख्या

4-कोथरी

[8] श्रीभागवत गौड 4

5-कोथरी

[9] विष्णु पुराण हरिवंश सटीका द्वय
द्वय सहित 4

6-कोथरी

[10] श्रीभागवतामृत सटीक गौड
[19] वैष्णव तोषणी गौड

7-कोथरी भारत (देवदत्त)

[11] (उद्योग पर्व नागर
[20] सभा पर्व नागर)
[12] शान्ति पर्व च किंचित किंचित नागर

8-कोथरी पुराण

[13] (समास खण्ड नागर)

[14] सौमारसी हितेन्द्र प्रख्य महात्म्य गौड

[15] गरूड पुराण नागर

[21] साम्य पुराण नागर गौड मिश्र

[22] हरिभक्ति सुद्योदय गौड

[23] जालन्धरो पाख्यान नागर द्वय

[24] इंद्र द्रयेम क वस्त्रे

9-कोथरी श्री भागवत संबंधित

[25] द्रुमा कल्प सटीका द्वय
प्रथमांक गौड 1

[26] भक्ति रत्नावली द्वय गौड 2

[27] तत्वरादि श्रीम्रथासटीक गौड 3

[28] नाम कौमुदी गौड 4

[29] श्री भागवत तल्पय्य गौड

[30] भक्तिमञ्ज्यादि तुलात

[34] (भक्ति रत्नावली द्वय 2)

[35] हरि लीला गौड 6

[36] वासना भाष्यण 7

[37] त्रवतुष्टय नाग

[38] दशम रितु सटीका गौड 8

[39] रामानन्दीय भक्ति स्तव व्याख्या
गौड नागर 9

— गौ० तथा दशम व्याख्या 10

[40] भक्ति चिन्तामणि ताडि पत्रीय 11

[41] यात्राव्रत् 12

10-कोथरी

[31] भक्ति विलास नागर 2

[32] अथ हेमा ऋतु सृत
वामन द्वादशी निर्णम

[33] हरिवल्लभ सुद्यादय वाक्यानि च्

[42] तट्टीका गौड

[43] निर्णयामृत वाक्यानि

श्रीकृष्ण जय

पुस्तक संख्या

11-कोथरी दर्शन

तत्र पृथक पृथक

[44] न्यायामृत नागर
[45] शारीरिक भाष्य गौड
[46] रामानुज भाष्य टीका
[47] ताल पत्रीय द्रविडादार
[62] न्यायामृत टीका नागर
[63] रामानुज सिद्धान्त ताडि पत्रीय गौड
[64] मधुसूदन कृत सिद्यान्त विन्दु गौड

अथैक वस्त्र स्थितानि

[48] किं विट्टीका सहित
रामानुज भाष्य नागर 1
[49] रातदूषणीना 2
[50] मध्व भाष्य गौड
[51] याहुना वार्च्य स्त्रोत गौड 4
[52] विष्णु स्वामी प्रसंग गौड 5
[53] द्रव्य किरणावली नागर 6
[54] माया वादस्य किंचित्
किंचित् नागर 7
[55] प्रबोध कृत भागवत रसस्य नागर 8
[56] अधिकरण मालाथं रादि गौड 9
[57] भास्कर भाष्य संग्रह नागर 10
[58] तर्क भाषा सहस्त्राणि नागर 11
[59] वेदान्त सार नागर 12
[60] पातञ्जल सूत्र नागर 13
[61] विष्णुतत्व निर्णय टीका संग्रह
नागर 14
[65] प्रबोध सिद्यान्त नागर 15
[66] सारस्वत दर्शन नागर 16
[67] तर्क भाषा टीका नागर 17
[68] सिद्यान्त बिन्दु 18
[69] सांख्यस्य किंचित् वल्लभ
महस्याक बिन्दु 19
[70] हयशीर्षा वाराह 20
[71] कृतिर्लिंग व्याख्या 21

श्रीकृष्ण जय

पुस्तक संख्या

12-कोथरी श्री हस्त पुस्तक

तत्र श्री गोस्वामी कृतानि एकत्र वस्त्रे

[72] संक्षेप भाग वतामृत गौ॰ -1

[73] स्तवमाला नाग -2

[74] मथुरा स्तव गौ॰ - 3

[75] दान केलि चिन्तामणि विंशखा नन्द स्तव 4 दत्रं

[76] .....

[77] (व्रभोष्टकं नागर - 5)

[78] (व्रज विलास)

[79] (स्तवः प्रेम सुधा सत्रं कार्य राधय)

[80] श्रिकांचर नागर - 6 दत्रं

[81] केशवाष्टक - गौ॰ - 7

[82] प्रेमेन्दु सागर गौ॰ - 8 दत्रं

[83] (प्रेम सुधा सत्र गौ॰ - 9 दत्र)

[84] राधाष्टक गौ॰ - 10 वेदत्रं

[85] राधाष्टक विशेष - गौ. 11 वेदत्रं

[86] (कपिण्यण त्रिकापुनश्च गौ.- 12 दत्र)

[87] ललिताष्टक गौ - 13 दत्रं

[88] त्रकलिका वल्लरी- गौ. 14

[89] स्फुटित श्लोकाः गौ. 15

[90] नाना छन्दांसि गौ॰ - 16

[91] अलंकार प्रक्रिया गौ. 17

[92] मथुरा महात्म्य संग्रह गौ. 18

[93] प्रातर्नमस्काराः गौ. 19

[94] श्रीकृष्ण जन्म तिथी विधि गौड 20

[95] श्रीकृष्ण पूजा विधि गौ. 21

[96] भक्त तारतम्य नागर (द्वय) 22

[97] भक्त तार तारतम्य नागर (द्वय) 23

[98] सखी नाम कृष्ण एकं दत्रं 24

[99] ...भालोद्देश दीपिका गौ.

[100] रसामृत सिन्धु गौ. 25

[101] उज्जवल नीलमणिः गौ. 26

श्रीकृष्ण जय
पुस्तक संख्या
12-कोथरी गत श्री हस्त पुस्तक एव
श्री गोस्वामी कृतानि पूर्व त्रैव वस्त्रे स्थितानि

[102] नाटक चंद्रिका गौड. 27
[103] शक्ति विवेकादि गौड. नागर 28
[104] विदग्ध माधव गौ. 29
[105] ललित माधव नागर 30
[106] हंसदूत द्रुमरुद्धव संदेशराश्र गौ. 31
[107] दानकेलि कौमुदी गौडीय 32
[108] मुक्ताचरितं स्वत्वं गौ.
[109] वृहतनाग - 33
[110] गोविन्द विरूदावली - 34 षुंगी माह
[111] अष्टादश छन्दांसि विरूदावली
लक्षणं गौ. 35
[112] पत्री श्लोका: गौड 36
[113] श्रीदास गोस्वामितः स्तवा: गौ. 37
[114] चित्रकवित्वादि गौ. 38
[115] पद्यावली गौ. 39

वस्त्रान्तरे पूर्ववत्

[116] श्री गोस्वामि कृत गीतानि गौ. 1

[117] श्रीदास गोस्वामि स्तवाः गौ. ना. 2

[118] (विरूदावलि गौड 3 दत्र)

[119] ललिताष्टक गौ. 4

[120] (गणोद्देश दीपिका 5 दत्रं गौ.)

[121] नाना छन्दांसि गौ. 6

[122] विदग्ध माधव

[123] श्लोकाः गौ. 7 दत्रं

12-कोथरी गत श्री हस्त पुस्तक एवं पुस्तक संख्या

त्रार्ष प्रायाति............तत्रै कत्रै व वस्त्रे स्थितानि (एतानि व पूर्व वदान्या)

[124] श्रीकृष्ण सत्या संवादीय
[125] कार्तिक महात्म्य गौ. 1
[126] दशाध्यायी कार्तिक
महात्म्य नागर (दत्रं 2)
[127] नाम मालिका नागर 3
[128] आदि पुराणीय गोपी महात्म्य गौ. 4
[129] गरूड पुराणीय विष्णु महात्म्य ना. 5
[130] श्रीकृष्ण लीला दिन संख्या ना. 6
[131] ... 7
[132] भविष्यस्थ दामोदर लीला गौ. 8
[133] पाद्म निर्माण खण्डस्य वृहद्विषु
पुराणस्य वाकं बिर ना. 9
[134] श्रीराधाख्यान ना. 10
[135] सटीक गीता गौ. 11
[136] तुलसी काष्ठ महात्म्य गौ. 12
[137] वृहद्वामन पुराणीय ना. 13
[138] वाम पादोदक महात्म्य गौ. 14
[139] महापुरूष महात्म्य गौ. 15
[140] जलसेतु महिमा गौ. 16
[141] द्रोण पर्व गत श्रीकृष्ण महिमा गौ. 17
[142] हरि स्त्रोत गौ. 18
[143] स्कन्द द्वारिका महात्म्य टीका
[144] श्रीकृष्ण संवाद गौ. 19
[145] तुलसी स्तव नागर 20
[146] अवन्ती खण्डे सांदीपनी कथाना 21
[147] नारायण बाबू हस्तवः गौ. 22
[148] स्वायंभुवागम गौ. 23
[149] संमोहन तंत्र गौ. 24 दत्रं
[150] गौतमीय गौ. 25
[151] मास्य यमुना महात्म्य ना. 26

श्रीकृष्ण जय

पुस्तक संख्या

12-कोथरी गत श्री हस्त पुस्तक एवं तत्र वार्ष प्रायेषु पूर्व वस्त्र स्थितान्येव

[152] स्कान्द चातुर्मास्य गतं किंचित् गौ. 27

[153] कृष्ण कवचादि गौ. 28

[154] मल्ल द्वादशी गौ. 29

[155] शंकर कृत गोविन्दाष्टक द्वयं पुस्तक प्रयागं यमुनाष्टकं तथा पूर्ण प्रज्ञं विरचित श्रीकृष्ण दशकं श्री मदीरपुरी कृत नुकरणीय त्रिकाच गौ. 30

[156] ब्रह्म पुराणस्य भगवद्भक्ति महिमा गौ. 31

[157] शंकर कृत पादादिकेशान्त स्तव गौ. 32

[158] प्रेमामृत रसायनं गौ. 33

[159] आयुकाल ज्ञान गौ. 34

[160] वृह्दगौतमी यदि पत्राणिना 35

[161] निर्माण खण्डाध्याय गौ. 36

[162] स्मार्त जन्माष्टम्ये कादश्यादि गौ. 37

[163] ... गौ. 38

[164] पाञ्चरात्रिक विजयाख्यादि गौ. 39

[165] विष्णुधर्मान्तर पद्यानि गौ. 40

[166] स्कन्द शलाका विधि 41

[167] ब्रह्मवैवर्त्रीय काम कलोपाख्यानादि ना.42

[168] स्कन्दादि वाक्यानि गौ./ना. 43,44,45

[169] श्रीकृष्णराधिका प्रतिमा विधि ना. 46

[170] कूर्म पुराणस्य पुराणानां संख्या

[171] वैष्णवशैवाधाश्रमाः नागर 47

[172] जन्माष्टमी विधि संक्षेप गौ. 48

[173] माष्योक्त यमुने महात्म्य गौ. 49

[174] नृसिंह चतुर्दशी गौ. 50

[175] मायासर महात्म्य गौ. 51

[176] संमोहन तंत्रस्य मारिकाम्बुधो श्रीराधामंत्रः गौ 52

[177] श्रीकृष्णसहस्त्रनाम गौ. 53

[178] मधूसूदन कृत अज्ञोपिसन्नधया

[179] लेत्पस्य टीका 54

[180] वृहद्वामन पुराणीय गौ 55

[181] विष्णु धर्म पद्याति 56

[182] वायु पुराण विशेष पत्राणि ना. 57

[183] अग्नि पुराण स्तव ना. 58

[184] कृल्पतस्वार्ण व वचनानि ना. 59

[185] अकप्य हारक गौ. 60

[186] गोवर्धन परिक्रमा ना. 61

[198] मीना टीकाँ रामानुजी 62

[199] कर्णाम्बु गौ. 63

[200] नान द्वयं च रात्रि पत्र 64

[201] अग्नि पुराण मत्स्य पुराण
पद्म पुराण 65

[202] वामन पुराण पत्राणि पत्रमेव पत्र
मेकं च ब्रह्मवैवर्त पत्राणि च
मुक्तक श्लोका: 66

[203] अमर नागर

वस्त्रान्तरे कोषव्याकरणनि

[187] प्राकृतमनोरमाष्टत्रि ना. 1

[188] कवि कल्पद्रुम गौ. 2

[189] कलाप धातु गण गौ. 3

[190] प्रयुक्ताख्यात चन्द्रिका 4

[191] विश्व प्रकाश ना. 5

[192] त्रिकाणु शेष ना. 6

[193] (क्षीर स्वामी मागा: ना. 7)

[194] (पाणिनी सूत्र गौ. 8)

[195] प्रक्रिया संक्षेपः
खलित सूत्राणि च 9

[196] स्त्रमन ना. 10

[197] द्रव्य मार्थना 11

13-कोथरी व्याकरण पाणिनी एकत्र वस्त्रे

पृथक पृथक

[204] (कर्शिकाल्लवो)
नूतन नीत ना. संबन्धित अध्याय दश
छान्दस्य सूत्र ना.
[205] त्रत्रमद्चन्द्रिका च किंचित् 1
[206] वीय सप्रभाष्टमाध्यायौ ना.1
[207] (राघवेन्द्र संबन्धि प्रसाद) 1
[208] युक्ति रत्नावली ना.
[209] वाल बोधनी
[210] पूर्वार्द्ध महाभाष्य
[224] प्रक्रिया गौ. 1
[225] पाणिनी संस्तृता 2
[226] ....गणना 3
[227] ताडि पत्रीय भाषावृति संभाग द्वय।

पुनः 13-कोथरी द्वितिया कलायादि

[211] कातत्रविस्तरस्त्रन्स्तत्रंचना
[212] सुयंभतपुराणादि गौ.
[213] रसवधाकरणं कलापवृत्रि च ना.1
[214] ताडि पत्रीय भाषा वृत्ति भाग द्वय 1
[228] सुमरस्यकारक समासौ
कलाप परिशिष्टस्य
[229] षषलण सवप्रकरणं तालपत्रीय।
[230] समूल क्षीर स्वामी हलायुध
[231] को राश्र ना. 2
[232] वज्जना 1
[233] मनोरमावृति द्वय

14-कोथरी काव्य नाटकादि एकत्रैव वस्त्रे

[215] गोपाल विलास गौ. 1
[216] चैतन्यामृत गौ. 2
[217] कन्दर्पम स्वरी ना. 3
[218] वीर माधव गौ. 4
[219] कर्पूर कृत नाटका ना. 5
[220] रामानन्द राय नाटक भाग गौ. 6
[221] जयदेव द्वय गौ. 7
[222] ... टीका गौ. 8
[223] ... पुरी 9
[234] मुकुन्दमाला गौ. 10 दत्रं
[235] (आल मन्दार गौ. 11)
[236] मुकुन्दमाला
[237] आल मन्दार
[238] कर्णामृत वृहद्यानानि गौ. 12
[239] भर्तहरि श्लोकाः
[240] अन्यत्र कर्णामृतं
[241] वृहद्नातं विल्वमंगलश्च गौ. 13
[242] विष्णु सहस्रनाम

कोथरी पूर्व च

[243] ...च
[244] ...गौ. 14 पुनः
[245] अत्ररचरित ना. 15
[246] भ्युरामायण ना. 16
[247] प्रबोधचंद्रोदयांत गौ. 17
[254] विष्णुपुरी प्रबन्ध गौ. 18
[255] दण्डक गौ. 19
[256] ...
[257] प्राकृत श्लोकाः 20
[258] (काव्यदर्पण गौ. 21)

14-कोथरी चम्पू

[248] पूर्व चम्पू द्वय 1
[249] उत्तर चम्पू द्वय दत्रं
[259] उत्तर चम्पूत्तर भाग द्वय ना.
[260] प्रथम भाग 1 गौ. द्वय
[261] माधव महोत्सव त्रय ना.

6-कोथरी ज्योतिष

[250] दीपिकादि मुख्य विवरणं
द्वादशस्य पत्रस्य
[251] अद्भुत सागरश्च

17-कोथरी हरिनामामृत
एकादादि कमुपरि
तत्र पृथक ...
विस्तरकृत्यर्य्यन्त्रनाँगर - पुनः कृत्यर्य्यन्त्रँ विस्तर गौ.
अथैक वस्त्रे

दत्रं
[252] हरिनामामृत सार द्वय ना. 1
[253] शेष द्वय नागर गौड 2
[262] धातुगणः ना. 3
[263] सूचनान्मा
[264] संक्षेप मनोनमा नाग

जय कृष्ण
पुस्तक संख्या 8
16 अलंकार संगीत छन्दांसि
त्तत्रैक वस्त्र स्थितानि

एक दत्रं

[300] छन्दो मंजरी (द्वय) गौ. 1
[301] दश रूपक ना. 2
[302] भरत ना. 3
[303] संगीत संग्रह गौ. 4
[304] वाद्ययलंकार ना. 5
[305] ध्रुवादिगीतललक्षण ना. 6
[306] वृत्त रत्नाकर ना. 7
[307] हस्तक लक्षणम् गौ. 8
[315] वेणु लक्षण गौ. 9
[316] काव्य दर्पण गौ. 10
[317] काव्या रस्र वर्णस्य फलसि ना. 11
[318] (वैद्य विद्या विनोद) अलंकार शेखर 12
[319] वर्णनापिकाल सा...13

अथ पृथक

[308] पिङ्गलवृति
[309] काव्य प्रकाश ताल पत्रीय 1
[320] साहित्य दर्पण कल्पलता
[321] काव्य प्रकाश टीका द्वय मन्थद...

19-कोथरी नाना पुस्तक
तत्रैक वस्त्रे.....

[310] वृहत्सहस्त्रनामना 1 दत्रं
[311] वृहत्सहस्त्रनामना 2 दत्रं
[312] ब्रह्माणु पुराणस्य किंचित् किंचित् वा 3
[313] ययाति चरित ना. 4
[314] कौर्मस्य श्रीकृष्ण ...रोवर्णणं साम्बाप्य 5
[322] भूमि खण्डस्य नवमाध्यायः (सटीक गौ.) 6
[323] गीता सार गौ. 7
[324] जितंते स्त्रोत ना. 8 दत्रं
[325] चराचयि क्राध्याय ना. 9
[326] श्रीकृष्ण नामामृत वाराह सहस्त्रनामनी गौ. 10

जय कृष्ण

पुस्तक संख्या

नाना पुस्तक

19-कोथल्यामेव पूर्व वस्त्र एव च

सार-2

[327] स्कान्दादिश्लोकां गौ. 44

[328] श्रीकृष्णामृतँस्तोत्रगंङ्गास्तोत्रं च ना. गौ. 45

[329] नाम स्तवराजः ना. 46

[330] वृहन्नारदीयस्य किंचित् किंचित् गौ. 47

[338] वैशाख माहात्म्य गौ. 48

[339] वैष्णव गरूड श्लोकाः गौ. द्विितिय 48

[340] पापप्रशमनस्तोत्रं गौ. 49

[341] नारायण सूक्तव 50

अथ पृथक पृथक मोक्ष धर्म उंछ वृत्यु पाख्यान

[331] नारायणीयोपाख्यान सटीक गौ. 5

[332] वृहद्गीता माहात्म्य ना. 1

[333] गीता भाष्य ताडि पत्रीय 1

[342] मधुसूदनीय गीता टीका संग्रह ना. 1

[343] सहस्त्रनाम भाष्य ना. उत्तर खण्ड गौ. 1

20-कोथरी नाना पुराण

एक वस्त्र एव

[334] सौपर्णीयं स्कान्दीयं व द्वारका माहात्म्य ना.1

[335] स्कन्दीयं व प्रकारान्तर द्वारका माहात्म्य ना. 2

[336] तदेव तृतीय प्रकारं ना. 3

[337] स्कान्द चार्तुमास्य माहात्म्य ना. 4

[344] माघ माहात्म्य ना. 5

[345] ब्रह्मवैवर्त्रीय शुकदेव जन्म गौ. 6

[346] यमुना माहात्म्य ना. 7

[347] गंगा माहात्म्य ना. 8

[348] अयोध्या माहात्म्य गौ. 9

[349] ग्रोणचारण माहात्म्य मल्ल द्वादशी प्रसंग गौ. 10

[350] अमृत सारोद्वार ना. 11

[351] कार्तिक माहात्म्य दशाध्यायी ना० 12

21-कोथरी आगमादि

तत्र स्मृतिः

एक वस्त्र एव

[352] हेमाद्रिः कालनिर्णय ना॰ 1
[353] तोंडर प्रकाश 2
[354] दान खण्डीय पुराण दानं ना. 3
[355] विष्णु भक्ति चन्द्रोदय गौ. 4
[366] नृसिंह परिचर्य्या गौ. 5
[367] तत्व वादा चार गौ. 6
[368] श्रीरामजन्म नवमी गौ. 7
[369] तान्त्रिक संध्या 8

त्रणमो वस्त्रान्तरे

[356] क्रमदीपिका गौ. 1
[357] तट्टीकार्दाच् गोविन्द
महावार्य्यस्य नागर 2
[358] उत्तरार्द्धं माघ व भट्टस्य गौ. 3
[359] स्वायंभुवागमना 4 दत्र)
[360] (गौतमीय कल्प वेदत्रं
स्यादि पटल त्रयी गौ. 5)
[361] (गौतमीय पञ्च पञ्चा रात्रम
षद्द श्रारात्रम पटलौ प्रबोधात्
प्राप्तौ ना. 6)
[362] रूद्रयामलस्य शौरितन्द्रं गौ. 7
[363] हयशीर्ष गौ. 8
[364] श्रीरामार्चन पटल गौ. 9
[365] (सनत्कुमार कल्पस्य गोपाल
वेदत्रं पटलः गौ. 10
ग्रन्थावरी च यत्र व तत्र)
[370] दशाक्षर पद्धीतः गौ. 11
[371] त्रैलोका संमोहनस्य पत्रैक
रहितः पटल गौ. 12
[372] घृत्पर्ण पद्धतिः गौ. 13
[373] षडसरय दुतिना 14
[374] मन्त्रमाला ना 15
[375] नारदय पञ्चरात्र संग्रह गौ. 16
[376] पुरश्चरण विधि ना. 17
[377] जितंतेस्त्रोत ना. 18
[378] रामकवचं लक्ष्मी नृसिंह
स्तवश्चः ना. 19
[379] होडाचक्र गौ. 20
[380] सिद्धसाध्य शोधनादि गौ. 21
[381] वृहद्गौतमीय तमीय संग्रहौ ना.
22
[382] सर्व विधाना ना. 23

जय कृष्ण 10
आगम एव
पृथक पृथक

[383] सनत्कुमार कल्प 1

[384] नारद पञ्चरात्रं...1

[385] सटीक व्रह्म संहिता व ना. 1

[386] ताल पत्रीय गौतमीय प्रथम भाग: 1

[387] ताडिपत्रीयोनारदकल्पस्य
गोपाल मंत्रोद्धार

[388] गौतमीयतन्त्रस्यपटल त्रयं 1
सनत्कुमार कल्प

[389] त्रैलोक संमोहन तंत्र

[390] गौतमी...1

[396] वृहद गौतमीय ना. 1

[397] ताल पत्रीय
गौतमीयोत्तर भाग: 1

[398] ताडि पत्रमय नारदीय
गोपाल कल्प: 1

[399] ताडिपत्रमयमेवदशादीय...
पटलादि 1

[400] वृहद गौतमी 1 च

उपनिषद:
एकत्रै वस्त्रे पूर्वक

[391] नृसिंह तापनी रामतापनी च ना. 1

[392] वासुदेवोपनिषद् ना. 2

[393] वस्जसनेयोपनिषद्गौ. 3

[394] अथर्वोपनिषद्
गर्भोपनिषत्
तैत्तिरीयेनारायणीयोपनिषद् गौ. 4

[395](ताँबास्तूनि.......द्वय सटीकं एवा एत)

[401] मुण्डकोपनिषद्
तैत्तिरीय उपनिषद् गौ. 5

[402] ताँबा स्तूनि...एव ववृधि
एत द्वयं सटीक ना. 6

[403] शानीनोयनिषत् 1

[404] आर्धराद्रिधूम मार्गोवि ना. 7

[405] श्वोताश्वतरोपनिसत् ना. 8

[406] द्वयावर्द्र...9

[407] प्रक्षोपनिषत् ना. 10

[408] चरणोनिषत् महोपनिषत् ना. 11

[409] सटीका गोपाल पूर्वोत्तर तापनी ना. 12

[410] गोपाल तापत्य गौ. 13

एकादत्रा=

[411] छान्दोग्योपनिषद् 19

[412] केनोपनिषद् सटीक 20

[413] ब्रह्म संहिता सटीक ...योग्य 22

[414] ...21

[415] सामवासुदेवोपनिषत्। यत्र देवकीनन्दन नेति नाम ना. 14

[416] नारायणोपनिषत् ना. 15

[417] येते शतं नीलाद्रिनाथोपनित् ना. 16

[418] नामोपनिषद्धो सटीक ना. 17

[419] गर्भोपनिषदन्तरं ना. 18

22 तस्यामेव कोथल्यां
वैधकं पृथक पृथक

[453] वीरसिंहावलोकन 99

[454] नक्षत्र काल ज्ञानं 90

[455] मदन विनोद सारङ्गधर
वीरसिंहावलोकन संग्रह 91

[456] कुष्ठौषध 92

[457] चन्दनादि तैल 93

[458] ज्वरादि हर कूर्णी विनामणिश्च 94

[459] गगनसुन्दररस करनादिलोह
वृहद् शंखवटी शंखवटी 95

[460] अग्नि कुमारादि तालपत्रीय
ढलात पत्रीयंत्र पुस्तक द्वयं—
वासुदेव कविराज लिखितं 96
भूर्य्य पर्त्रिंनि

पृथक कोथली

[461] विनाचिकित्सा

[462] सार सार संग्रह

[463] चक दत्त निदानादि च
वैध विद्या विनोद

[464] ...

अन्य वस्त्रे

[465] रत्नमालाखण्ड ना. 1

[466] ...दश विचार गौ. 2

[467] ...

[468] ...

[469] ...

[470] ...

[471] भूप विधि

[472] पटवास विधि

[473] गन्धवा पर्व:

[474] गन्ध्यु क्रय: दन्त काष्ठ विधि:।

[475] इयत्र ताम्बूली

[476] पल्पङ्क निर्माण

[477] रत्नानि—

[478] हरना: —

4 पर्व मस्यासि

[479] (पुन: षुनुषल सागानि)

[480] गोलक्षणं...

[481] हस्ति लक्षणं...

[482] ...

[483] गोलक्षण

[484] शकुनं

[485] वुधोदयादि

[486] स्तल पत्रं भास लक्षणं

[487] परिधादि लक्षणं

[488] ...शारदशस्यो

[489] द्रवज्ञानं 9

[490] ...ज्ञानं

[491] ... गौ. 3

[492] ... 4 ना.

[493] शकुनावसन्तराजादिय मंत्र 5

[494] विष्णु धर्मोक ग्रहाणि 6

[495] फलानि ना.

[496] दीपिका ना. 7

[497] षडश्वाशि 8

[498] कामुष्नदीपिका 9

[499] मेघमालादि 10

[500] तिथ्यादि गणनो 10

[501] सामुद्रक 11

[502] नक्षत्र लक्षण 12

[503] एतान्येकत्र 13

[504] कृषपरा रात्र ताल पत्रीय

[505] वृहत् सागर पृथक

13
श्रीव्रद्धवदास पुस्तकानि
23-कोथरी अनंतयाश्वैवर्तत्

[506] (गीत गोविन्द 1)

(नसामृतोज्जवलमरणो)

एकत्र वस्त्रेतु

[507] गीत गोविन्द 1

[508] गीता 2

[509] (पञ्चाध्यायी प्रभृति 3)

[510] श्रीगोस्वामी कृत गीतावली 4

[511] ब्रह्मपारस्तव 5

[512] सन्धयाविलासाष्टक 6

[513] कविराज कृत श्रीगोस्वाम्यीष्टक 7

[514] मन शिक्षा: भिक्षा: 8

[515] श्रीकृष्ण कवच 9

[516] वृतरत्नाकरी ग्र

दामोदर महिमा वैदत्रं 10

[517] पृथक तु रसामृत सिन्धु

15–कोथली

दर्शन

पृथक ... वक त्र

[518] शंकर शारीरक भाष्य 1

[519] रामानुज भाष्य 1

[520] रामानुज सिद्धान्ताडी पत्र 1

[521] रामानुज भाष्य टीका द्रावीडाक्षर तथा गोपाल स्तव 1

[522] रातदूषणी 1

[523] शंकर शारीरक संग्रह 1

[524] मध्वाचार्य भाष्य 2

[525] यामुनाचार्य कृत स्तव 3

[526] प्रबोध कृत भगवत रहस्य 4

[527] विष्णु स्वामी सिद्यान्त चंद्रिका 5

[528] द्रव्य किरणावली 6

[529] वेदान्त सार 7

[530] पातञ्जल सूत्र 8

[531] अधिकरण मालाद्दंश 9

प्रभाग वा संबन्धि

14-कोथली

एकत्र वृ ... पृथक

[532] मुक्ताफल द्वय 1
[533] भक्ति रत्नावली 2
[534] तत्ववाद टीका 3
[535] नाम कौमुदी द्वय 4
[536] भागवत तात्पर्य 5
[537] हरि लीला 6
[538] वासना भाष्य यत्राणि 7
[539] दशम् चित्सुख 8
[540] रामानन्दवन कृत श्रति स्तवनि निवन्ध 9
[544] वल्लभ टीका 1
[545] सहनिद निबंध ताडि पत्रीय 1
[546] श्री काशी श्वेत गोस्वाम्यादि सागृहित 1

15-को

[541] पुनातन संदर्भ 1
[542] माध्व महोत्सव 1

10-कोथली

[543] भागवत संदर्भ नूतन

श्री वृहद्रोस्वामि कृत पुस्तक

6-कोथरी

[547] भक्ति विलास नागर 2

[548] श्री हस्त लिखित गौ. 1

8-कोथरी

[549] दशम टीका

[550] श्री हस्तलि. 1

[551] भागवतामृत 2

[552] वृहमस्तव टी. 1

23-कोथरी

[553] दशम टीका 2

[554] नागर टिप्पणी गोपाल 1

[555] कक्कर 1

ज्योतिष

1 हस्तक पुस्तक

[556] वाराही संग्रह 1

[557] तिथि गणन प्रक्रिया 2

व्याकरण कोष

हस्त पुस्तक 1-कोथली

[558] मनोरमा वृर्ति 1

[559] कवि कल्प द्रुम धातु पाठ 2

[560] गणाधातु 3

[561] प्रयुक्ताख्यात चंद्रिका 4

[562] त्रिकाण्ड शेष 6

[563] क्षीर स्वामी 7

[569] पाणिनी सूत्र 8

[570] प्रक्रिया संक्षेप पुनः खंडित-
पाणिनी सूत्राणि व 9

[571] अमर 10

13-कोथरी

[564] प्रक्रिय कौमुदी 1

[565] वर्द्धमान व्याकरण 1

[566] आख्यात चंद्रिका 1

[567] उनादि - 1

[568] सुपद्म 1

[572] हलायुध कोष 1

[573] अमर नागर

[574] द्वेश्वरपुरी कृत श्रीकृष्ण पत्री

[575] श्री हस्त लिखित शंकर कृत त्रिभंगीमय गोविन्दाष्टक

[576] गोपीजन वल्लभाष्टक

[577] षट्पदी स्त्रोत

[578] भुजंग प्रयातादि —

[583] चंपू रामायन पृथक 1

[584] उत्तर चरित पृथक 1

[585] नीति ग्रंथ द्वय पृथक 1

11-कोथली

[579] हस्ताध्याय 1

[580] दशरूपक 2

[581] भरत 3

[582] वाग्भढालंकार 4

[586] छन्दो मंजरी 5

[587] पृथक काव्य प्रकाशनत्संगे

[588] षत्व शोत्र

[589] प्रकरण

[590] साहित्य दर्पण

श्रीकृष्ण
काव्य नाटकादि
12-कोथली

[591] गोपाल विलास 1
[592] चैतन्यामृत 2
[593] कन्दर्प मंजरी 3
[594] वीर माधव 4
[595] कर्पूर कृत प्रसन्त रास रसोत्सव 5
[596] श्री रामानंद नाटक 6
[597] श्री जयदेव 7
[598] यादवेन्द्रपुरी कृत काव्य 8
[599] सर्वाङ्ग सुन्दरी 9
[600] मुकुन्द माला 10
[601] आलमन्दार 11
[602] मुकुन्दमाला आलमन्दार कर्स्सामृत्तवृहद्धान
[603] श्रीहस्तलिखित भर्तृहरि कृत श्लोकाश्व 12
[604] विल्व मंगल 13
[605] रूक्मणी पत्री 14
[606] विल्व मंगल 15
[607] छन्दो मंजरी 16
[608] प्रबोध चंद्रोदय 17
[609] श्री गोस्वामि हताष्टादश कृन्त किंचित् 18
[610] दण्डक 19
[611] विष्णुपुरी प्रबन्ध 20
[612] पृथक महत्तमाक्षर शंकराचार्य कृत गोविन्दाष्टक कृस्ताष्टोतर शतनाम शंकर कृत भुजंग प्रयात पूर्स्सप्रिरचित द्वय

ज्योतिष
हस्त पुस्तक 1-कोथली

[613] वाराही संग्रह 1

[614] तिथि गणन प्रक्रिया 2

अलंकार
हस्त पुस्तक 2-कोथली

[615] संगीत संग्रह 2

षतमादि 9-कोथली

[616] क्रम दीपिका 1
[617] तट्टीका 2
[618] गोपाल तापनी द्वय
कृष्ण तापनी षार 3
[619] पुनर्गोपालोत्रन तापनी 4
[620] पुन हस्त द्वयं 5
[621] स्वायंभुवागम नागर 6
[622] त्रैलोका संमोहन पटल 7
[623] गौतमीय तृतिय पटल 8
[624] तदीयषधंया रात्रम पटल 9
[625] दशासन पद्धति द्वय 10
[626] गौतमीययं पंच वा रात्रम पटल 11
[627] तदीय प्रथमा द्वितिय तृतीय पटल 12
[628] नारद पंचरात्र संग्रह 13
[629] अन्य क्रम दीपिका
स्वल्य पत्राणि 14
[630] जितंतेस्त्रोत 15
[631] पुनश्रवणाणिधिक 16
[632] निर्माल्यातुद्रासना पराध 17
[633] हेमाद्रि 18
[634] नरसिंह परिचर्य्यादय नागर गौड 19
[635] विष्णु भक्ति चंद्रोदय द्वय 20
[636] तत्ववदाचाना 21
[637] सिद्धसाध्य शोधनादि 22
[638] शौरितंत्र 23
[639] श्रीरामार्वत पटल 24
[640] श्रीकृष्ण षडसन 25
[641] सर्वविद्या 26
[642] नामकवच 27

पृथक

[643] आगम पुस्तक
द्वय तालि पत्रीय
[644] नारद पंचरात्र द्वय
(पुनश्रवणाविधि)
[645] द्वय शीर्ष मंत्रमाला 28
[646] नामार्चन यंत्रिका संग्रह श्लोका: 29

श्रीकृष्णाः।

पुराण

5-कोथली नाना पुस्तक

[669] पद्म पुराणीय उत्तर खंड 1

[670] पद्म पुराणीय कार्तिक माहात्म्य 2 नागर गौड

[671] व्रह्माण्डे पुराणस्य किंचित् 3

[672] पद्म पुराणीय ययाति चरित्र 4

[673] कौर्म्मेयदु वंशानु कीर्तन 5

[674] पद्म पुराणीय भूमिखण्डे माघ माहात्म्य 6

[675] गीता सार स्त्रोत 7

[676] जितन्त्रे स्त्रोत 8

[677] चरणाचिन्हाध्याय 9

[678] कृष्णानामामृतस्त्रोत तथा सहस्त्रनाम 10

[679] विष्णु सहस्त्रनाम 11

[680] कृष्ण सहस्त्रनाम द्वय 12

[681] वैष्णवानन्द लहरी 13

[682] तुलसी काष्ठ माहात्म्य 14

[683] वैष्नवाष्टषष्टि नाम 15

[684] पाण्डव गीता 16

[685] जप यज्ञ महिमा 17

[686] नरसिंह स्तव 18

[687] पर्वश्लोकाः 19

[688] हरि भक्ति सुद्योदय 20

[689] राम गीता 21

[690] जन्माष्टमी महिमा वृह्माण्ड पुराणीय 22

4-कोथली भारत

[691] वन पर्व 1

[692] सभा पर्व 1

[697] उद्यम 1

[698] नारायणीयोपाख्यान सटीक 1

20-कोथली

[693] कालिका पुराण 1

21-कोथली

[694] हरिवंश सटीक 1

[695] विष्णु पुराण सटीक 1

19-कोथली

[696] चैतन्य दत्त भागवत 1

पृथक

[699] कृष्णामृत स्त्रोत 45

[700] श्रीरामस्तवराज 46

पृथक

[711] सहस्त्रनाम भाष्य 1

[712] गीताभाष्य 1

[713] आदिवाराह मथुरा माहात्म्य 1

2-कोथली

[701] वृहत्सहस्त्रनाम सहित 2

[702] पद्मपुराणीय गीता महात्म्य 1

[703] गरूड पुराण 1

[704] अयोध्या खंडवाक
तनि गंगा महात्म्य 1

[714] द्वारका माहात्म्य 2

[715] नाना पुराणीय मथुरा माहात्म्य 1

3-कोथली

[705] प्रभाष खंड 1

[706] इन्द्रप्रस्त माहात्म्य 1

[707] पद्म पुराणीय
जालंधरोपाख्यान 1

[708] विष्णु पादोदक महिमा

[709] प्रहलाद स्तुति

[710] हरिभक्ति सुधा

[716] नाना पुराण वाक्य 1

[717] कार्तिक माहात्म्य द्वय
अमृत सारोद्यार 1

[718] माघ माहात्म्य 1

[719] विष्णु धर्मोत्तर श्लोका 1

[720] यमुना माहात्म्य 1

पुराणानि
1-कोथली श्री हस्त पुस्तकं

एकत्र

[745] श्रीकृष्णसत्या संवादीय कार्तिक महात्म्य 1

[746] पाद्म तुलसी जन्म माहात्म्य 2

[747] तुलसी विवाह आदि पुराणीय 3

[748] गोपी महात्म्य 4

[749] गारुड विष्णु माहात्म्य 5

[750] श्री कृष्ण लीला दिन संख्या 6

[751] ...7

[752] दामोदर लीला भविष्यज्ञ 8

[753] पाद्म निर्वाण खण्ड वृन्दावन महिमा 9

[754] श्री नाधिकाख्यान 10

[755] गीता सटीका 11

[756] वृहद्वामन पुराणीय गोपी प्रेम महात्म्य 12

[757] तुलसी काष्ठ महात्म्य 13

[758] पाद्मेपादोदक महात्म्य 14

[759] दान धर्म्मे महापुरूष माहात्म्य 15

[760] जलधेनु दान विधि 16

[761] द्रोण पर्वादौ श्रीकृष्ण महिमा 17

एकत्र

[762] हरिस्त्रोत 18

[763] विष्णु महात्म्य 19

[764] तुलसी स्त्रोत 20

[765] सान्दीपनी कथा 21

[766] नारायण व्यूह स्तव 22

[767] स्वायंभुवागम 23

[768] संमोहन तंत्र 24

[769] गौतमीय 25

[770] माहस्य विष्णु धर्म्मोत्तर यमुना माहात्म्यं 26

[771] चतुर्विंशति द्वादशी विधि संछूद्राणां शालिग्राम पूजानामाधेकं धारण माहाल्यादि 27

॥श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥5॥ अयं सुरम्येति। कास्य श्रीकृष्णस्य गु० शृँगारे गुणाः पंचविंशतिः कीर्त्रिताः। आदिनान्येप्ये तद्रस योग्या ज्ञेयाः ॥6॥ कामी षां सुरम्यत्वादि गुणानां। पूर्वं श्री रसामृत सिंधावेवाष कार्षेणन लक्षण सहिता दर्शिताः ॥ तेचगुणाः पद द्यातीत्यापादौ

श्रीभगवान श्री व्रह्माणं
श्री व्रह्मा श्री नारदं
श्री नारद श्री व्यासं
श्री व्यासः श्री शुकं
श्री शुकः परिक्षित सूतंच
श्री सूतः शौनकं

अथ श्री संकर्षणः सनकादीन्
सनकादिः सांख्यायनं
सांख्यायनः पाराशरं वृहस्पतिं च
पाराशर स्तक मैत्रेयं वृहस्पतिरूद्धवं
मैत्रेयो विदुरं

तत्वं श्री गुरू कुवर भार मुद्दहंतीरमोरूः पकमन यदानि
स्वंभुवीमत्रेलाल सगमनाशिरीष मृद्दीसोत्कंठा प्रुतगमन तथापि जातः।
राधयावदनविधोः समुछलेती हार श्रीः किरणपरंपरेति मन्ये
र्निवंचेत्कुकल द्वयं कथौंचासंकोच सत्तग स्पंदीय संगात्॥

... ज्ञाना।
... तारोयं आँवेशः
... भक्त्या विन्दोः
... र्भूय पूतिकल्पेरनुवर्तेति।
... व्राह्मे स्वयं भुवे ब्रह्मणोनासातः। चाक्षुषीयेतु जलतः।
... नचित्श्याम: कदाचिद्दं द्वगौरः
... विर्भूतिः। आदौदैत्यं घ्नन्नाहर ध्रुतीः। चासुषीये स प्रसंज्ञितः
... हरि कृष्णाख्यौ सहोदरौ चतुर्विंश वरो यंर्ता...॥
... सर्व वेद विनुञ्च कपिलोन्यो जज्ञाप्रद विभूषितः॥
... र्णः मधुकैटभोदानवौ हन्नावेदान् पूत्यानय
... कृष्ण प्रियतयाव तीर्णः। स्वायंभुवेवतारत्रात्
... अत्रा गम नमत्रिणावतार त्रं॥
... षमतया जातः।
... शुचिः ... शक्तावेशः
... त्रयोदशा कोलन स्यो पुनर्व्य किंचाक्षुषीयेव

श्री राधादामोदर जी

सा. श्रीराधाकुण्ड में श्रीराधादामोदर जी के मंदिर में पुजारी वृन्दावनदास के मा: पुस्तक रहे संवत् 1619 चैत सुदी 4 गुरूवार

[772] 1) कृष्ण मंगल नागर
[773] 2) विदग्ध माधव भाषा रस कदंब प्रस्थर नागर बंगला
[774] 1) मुक्ताचरित भाषा बंगला
[775] 1) गीत गोविन्द भाषा गौड 1
[776] 1) जगन्नाथ वल्लभ नाटक भाषा गौड 1
[777] 1) चैतन्य चरितामृत श्लोकावली गौड 1
[778] 1) चैतन्य चरितामृत गौड जीव लीला
[779] 1) गोविन्द लीलामृत
[780] 1) भाषा राय शेखरे
[781] 1) पदावली
[782] 1) पदकल्पतरू गौड 1

॥20॥

अथ भागवत संवंधि

[783] 1 मुक्ताफल सटीक गौ०
[784] 2 हरिलीला गौ. 1
[785] 3 भक्ति रत्नावली
[786] 4 तत्ववाद टीका 3 गौ.
[787] 5 नाम कौमुदी द्वय
[788] 6 भागवत तात्पर्य्य
[789] 7 (हरि लीला) प्रबोध कृत भागवत रहस्य ना.
[790] वासना भाष्य — पत्राणि —
[791] 8 दशम्चित्सुख
[792] 9 रामानंदवन कृत श्रति स्तव निबंध
[793] 10 रामानंदीय दशम् व्याख्या

[794] लघुवौल्लवतोषणी
[795] लघु संदर्भ
[796] वृहत्क्रम संदर्भ
[797] लघुचंपू
[798] लघुभक्ति विलास
[799] वृहदर्चन दीपिकाः
[800] चतुश्लोकी समाहार
[801] इतिहासावली
[802] लघु हरि नामामृत
[803] श्रवण दीपिका प्रभा

....
....
....

काव्यानि

[804] श्रीयादवेन्द्रपुरी कृत गोविन्द विलास 1 गौ.
[805] श्रीमधुसूदन कृत गोपाल विलास 2 गौ.
[806] श्री कविराज गो. कृत गोविंद लीलामृत 30
[807] विल्वमंगल कृत गोकुल चरित 4 गौ.
[808] श्रीजयदेव कृत गीत गोविन्द 5 गौ.
[809] तहीका च सर्वाङ्ग सुंदरी 6 गौ.
[810] चंपू रामायण 7
[811] चैतन्य चरितामृत 8
[812] भतृहरि 9
[813] (शांति शतक)
[814] शिल्हन पंचाशिका 10
[815] अमरू शतक 11
[816] व्रिहम् पुरी प्रबंध 12
[817] विदग्ध मुख मंडन 13
[818] दण्डक 14
[819] मुकुमाला 15
[820] आलमन्दार 16
[821] कर्णामृत 17
[822] तट्टीचां श्री कविराज कृता 18
[823] वेणी मिश्र कृत काव्य 19

श्रीगुरवे नमः ॥

पुस्तक संख्या श्री गुंसाइ जू की संवत् 1722 माघ सुदी 2 शाके 1587 मुकाम श्री वृन्दावन श्री गुंसाइ जू ही की कुंज

[824] श्री हस्ताक्षर गौड श्री भागवत पू. 1
[825] तथा नागर सटीक वैष्णवदास वा. 1
[826] ना. सटीक संदर्भ पू. भागवत 1
[827] व्रह्मवतोषणी पू. 1
[828] संदर्भ सप्त पू. 1
[829] श्रीगोपाल चंपू संपूर्ण 1
[830] श्री हरि भक्ति विलास पू. 1
[831] श्री हरि भक्ति रसामृत सटी 1
[832] उज्जवल गौड सटीक 1
[833] विदग्ध माधव ललित मा. 2
[834] माधव महोत्सव 1
[835] संकल्प कल्पद्रुम 1
[836] भागवतामृत तमा टीका 2
[837] श्रीहरि नामामृत 1

पु. संख्या

[838] लघुभागवतामृत	1
[839] हंसदूत उद्धव संदेश -	2
[840] नाटक चंद्रिका -	2
[841] स्तव माला मुक्ताक्षरी स्त.	2
[842] दानकेलि रसामृत शेष	2
[843] अभिषेक पद्धति	1
[844] गणोद्देश दीपिका	1
[845] मथुरा मा. विरूदावली ल.	2
[846] गोपालुविरूदावली	1
[847] व्रह्म सटी. योगसार टी.	2
[848] अग्नि पुराणोगायत्री व्यां	1
[849] श्रीकृष्ण चरण चिन्ह टीका	1
[850] श्रीराधा कर पद चिन्हना वाक्य	1
[851] श्रीराधा कृष्णार्च नंदी वटी	2
[852] लघु चंप सं. पद्यावली	2
[853] श्री हरिभक्ति मनोरमा	1
[854] नि... दशम...	1
[855] कृ...सं...संग्रह...	1
[856] हरिनामामृत गौड...	1
[857] इन्द्रप्रस्थ मा. व्रह्मवैवर्त	1

[858] काव्य प्र. गौड. भगवन्नाम कौमुदी	2
[859] दशम व्याख्या जादकषमत्	1
[860] भक्तिरत्नावली.हरिलीला	2
[861] दशम व्याख्या रामानंदी	1
[862] विजयधूजी पाठ मुक्ताफल टी.	1
[863] मोक्ष धर्म हरिवंश टी. हरिवंश खंड	3
[864] विष्णु पुराण टीका शाङ्गंधर –	2
[865] विष्णु पुराण टीका स्वाय –	1
[866] व्रह्मा [3] शंख [2] गरूड [3] पद्म [4] किंचित	4
[867] माघादि माहात्म्य तथा स्मृति	2
[868] जैमिनि [1] निदान [2] निदान सटी	3
[869] निघंटु [1] द्रव्यगुण [2] रत्न प्र ०	3
[870] लक्ष्मणोत्सव शाङ्गंधर	2
[871] वाजी करणा दि —	1
[872] पथ्या पथ्य विकार	1
[873] पांडु चिकित्सा	1
[874] पाशा केरली ज्योतिष	1
[875] साहित्य दर्पण	1
	32

पु. सं.

[876] दैवज्ञ कंठाभरण	1
[877] तत्व श्रुद्धि श्री त्रिदंडी	1
[878] हेमाद्रिकाल निर्णय	1
[879] गोपालविलास	1
[880] न्यायामृत- 1 तथात स्पटी	2
[881] गौतमी 1 वृहद्गौ. क्रमदी	3
[882] अगस्त्य सं. —	1
[883] अर्मक तट्टीका किंचित्	2
[884] कर्णप्रकाश. शब्द रत्नाव	2
[885] विश्व प्रकाश. द्वारावली	2
[886] शारीरिक भाष्य -	1
[887] आत्मोपष दादि -	1
[888] नारद पंचरात्र.दशकर्म	2
[889] मंत्र प्रदी पादि. तर्क भाषा	2
[890] श्रीपुरूषोत्र माहात्म्य -	1
[891] चार्तुमास्य मा. गीता मा. विरजामा.	3
[892] गोतमी मा. जागरण मा.	2
[893] द्वारका मा. महापु. मा.	2
	30

[894] पुरश्चरण विश्व नाथी -	1
[895] रूद्रयामलं -	1
[896] सहस्त्र शीर्षाध्यायः	1
[897] दशाक्षर पूजा पद्धतिः	1
[898] श्रीरामार्चन पटल -	1
[899] टोडर प्रकाश -	1
[900] हयशीर्ष पंचरात्रा	1
[901] तडागादि विधि -	1
[902] निर्णयामृत -	1
[903] मिताक्षरा किंचित् -	1
[904] श्राद्ध पद्धति -	1
[905] नैषद किं वैदत्र वस्त्रा	2
[906] टि. पंचाध्यायी किं -	1
[907] नाममालिका	1
[908] वेणी पंचा शिका. अमरूँशत	2
[909] संगीत संग्रह	1
[910] अलंकार शेखर	1
[911] ॥कविराज कृतालंकार	1
[912] गीत लक्षण -	20

पु. सं.

[913] प्रबोध चंद्रोदय -	1
[914] श्रीवल्लभाचार्य लिखितं कृतस्त्र वाः -	1
[915] दशरूपकः सात्वत. सं.	2
[916] तर्कभाषा केश व मिश्री	1
[917] मृत्युंजय तंत्र -	1
[918] गोविन्दाष्टक सटीक	1
[919] हय प्रदीपिका -	2
[920] सोमोत्पत्ति -	1
[921] रत्नमाला ज्यो. -	1
[922] कवि कल्पलता -	1
[923] वा...वावालंकारादि -	1
[924] अवतार तारतम्य -	1
[925] हस्तक लक्षणं -	1
[926] लीला स्तव -	1
[927] विष्णु भक्ति चंद्रोदै -	1
[928] पत्रीः श्लोका -	1
[929] श्रीकृष्ण कर्णामृत	1

पु. सं.

[930] अद्भुत सागर -	1
[931] सहस्त्रनाम सटीक -	1
[932] भक्ति विवेक -	1
[933] वादभूषणं -	1
[934] वाराह पुराणी व मथुरा माहा.	1
[935] चंडीषाणदि. वीर माधव	2
[936] गीत गोविंद उज्वल मू. ना.	2
[937] हरिभक्ति सुद्योदय -	1
[938] प्रेमामृत तथा टीका -	2
[939] शतनाम व्रह्मांडोक्त -	1
[940] छंदोग्रंथ स्तवाः	1
[941] सांख्य पातञ्जलो -	1
[942] वेदांत तथा वेदांत सार	1
[943] धातु मंजरी -	1
[944] गीता टीका -	3
[945] गीता सार. किचिन्मु	2
[946] व्रत रत्नाकर उत्तर चरित्र	2
[947] श्रीराधा नाटिका -	1
[948] कंदर्प मंजरी -	1
	26

[949] तुलसी विवाह स्वांयभू आ. 2
[950] नारायण व्यूह स्तव - 1
[951] राय रामानंद कृत स्तवाः - 1
[952] कवि कल्पद्रुम दीपिका ज्यो. टी. 2
[953] सामुद्रक जयदेव टी. 2
[954] किं महानाटक - 1
[955] शांति शतक - 1
[956] माघ किंचित् कुमार रागमाला टी. - 3
[957] कर्णामृत सटीक - 1
[958] गोपाल विलास कर्मादि (कारक) 2
[959] कातंत्र परिशिष्ट - 1
[960] नाना पुराण संग्रह 1
[961] रूद्रयामलध्यान 1
[962] काशिका का तंत्र वृत्ति 1
[963] कुंड निर्माण - 1
[964] रामार्चन चंद्रिका 1
[965] चतुर्थ स्कंध खिचरी 1
[966] अद्भुत सागर 1

24

छायाचित्र

चित्र–1
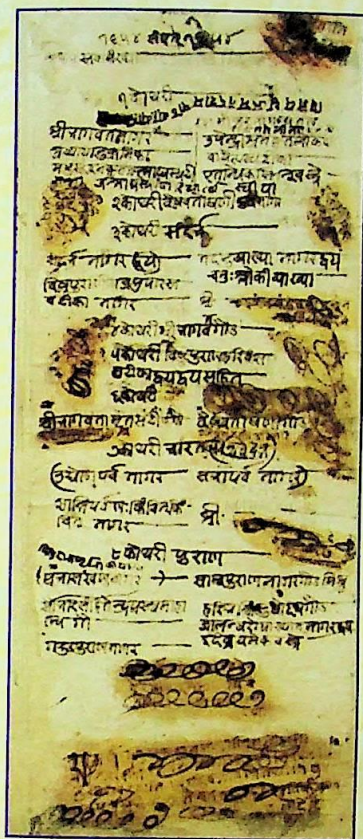
वृन्दावन के गौड़ीय वैष्णव साधकों की पुस्तक ठौर (अभिलेखागार) के वि.सं. 1654 (सन् 1597 ई.) में तैयार किये गये सूचीपत्र (Catalouge) का प्रथम पत्रक जो वृन्दावन शोध संस्थान में क्र० 5425 पर संरक्षित है।

चित्र–2
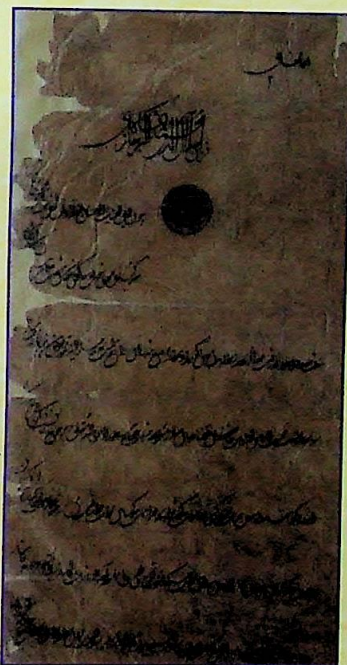
टोडरमल की अनुशंसा से बादशाह अकबर के द्वारा जीव गोस्वामी को दिये गये भूदान का फरमान। गौड़ीय वैष्णवों की तत्कालीन पुस्तक ठौर (राधादामोदर मंदिर) से प्राप्त यह फरमान वृन्दावन शोध संस्थान में क्र० 01 (A) पर संरक्षित है तथा इसका अनुवाद भी संस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थागार में विद्यमान है।

चित्र–3

वृन्दावन शोध संस्थान के ग्रंथागार में संरक्षित जीव गोस्वामी की संकल्प पत्री का चित्र वि.सं. 1663 (सन् 1606 ई.) में गदाधर भट्ट के द्वारा लिखित इस पत्रक में जीव गोस्वामी के उत्तराधिकार सम्बन्धी विवरणों के साथ नीचे की ओर पोथियों की सुरक्षा–संरक्षा का निर्देश भी अंकित है। क्र.791

चित्र–4

वृन्दावन शोध संस्थान के ग्रंथागार में संरक्षित वि.सं.1673 (सन् 1616 ई.) का एक जीर्ण दस्तावेज जिसमें जीव गोस्वामी के द्वारा कृष्णदास गोस्वामी को पाण्डुलिपियों का उत्तराधिकार देने की बात आरम्भिक पंक्तियों में कही गई है। क्र.183

चित्र–5
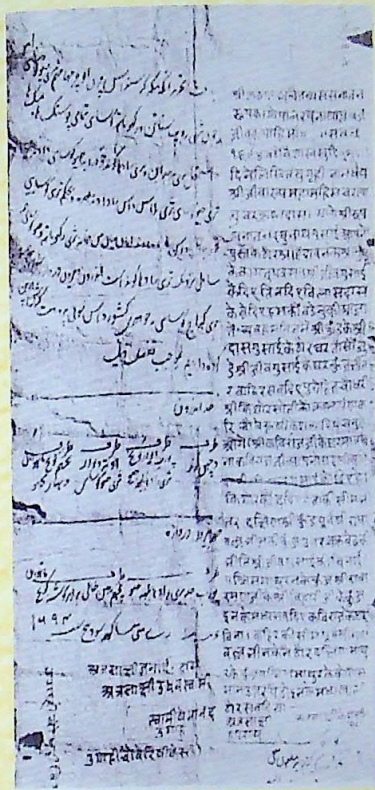
वि.सं. 1694 (सन् 1637 ई॰) का एक दस्तावेज जिसमें गौड़ीय वैष्णव साधकों के द्वारा अपनी पाण्डुलिपियों के संग्रह को "पुस्तक ठौर" शीर्षक से सम्बोधित किया गया है। इस दस्तावेज के अन्तर्गत पुस्तक ठौर के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के मध्य पारम्परिक रूप से हस्तांतरण के उल्लेख मी विद्यमान हैं।

- An early testamentary document in Sanskrit by Tarapada Mukherjee and J.C. Wright. Published by Vrindavan Research Institute.

चित्र–6

गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर के प्रमुख केन्द्र राधादामोदर मंदिर, वृन्दावन में जीव गोस्वामी के उत्तराधिकारी कृष्णदास की परिवर्ती सेवा परम्परा के अन्तर्गत वि.सं. 1746 (सन् 1639 ई॰) में गोस्वामी गोपीरमण जी के द्वारा तत्कालीन पंचों की उपस्थिति में तैयार कराया गया दस्तावेज जिसमें जमीन–जायदाद एवं सेवा परम्परा के साथ ही पुस्तक ठौर का अधिकार मी उनके नियंत्रण में होने का उल्लेख अंकित है।

क्र. 32, वृन्दावन शोध संस्थान

चित्र–7
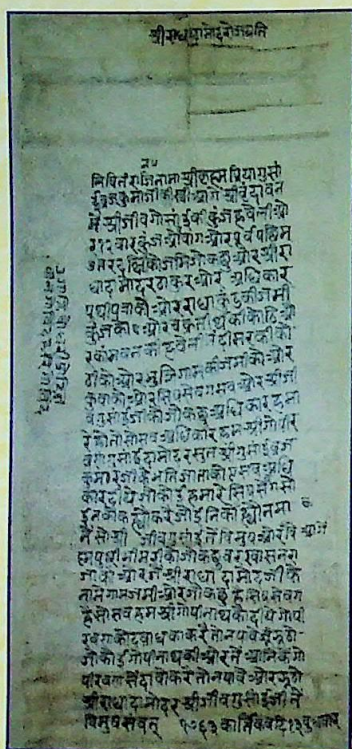
वि.सं. 1763 (सन् 1706 ई॰) का राजीनामा दस्तावेज जिसमें जीव गोस्वामी की सेवा परम्परा से जुड़ी जमीन–जायदाद उनकी पुस्तक ठौर, दस्तावेज एवं पाण्डुलिपियों के विवरण प्राप्त हैं।
क्र. 51, वृन्दावन शोध संस्थान

चित्र–8
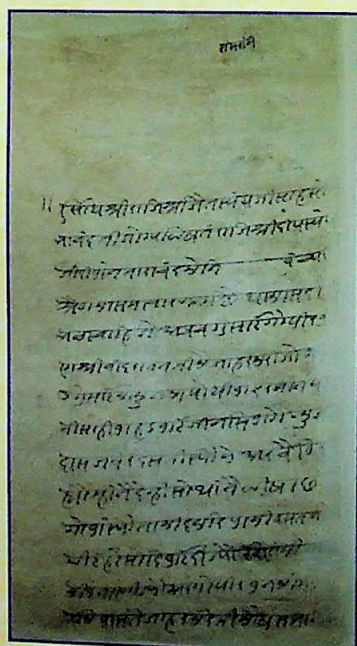
राधादामोदर मंदिर के गोस्वामी गोपीरमण जी के नाम वि.सं. 1774 (सन् 1717 ई॰) में प्रेषित राजस्थानी गद्य में लिखित पत्र की प्रति जिसमें सवाई जयसिंह के दीवान ताराचन्द्र ने उनके आधिकारिक साक्ष्यों को देखने हेतु गोपीरमण गोस्वामी से जीव गुसाईं की कुंज की पोथी व बादशाह अकबर के द्वारा दिये गये फरमान को सवाई जयसिंह के समक्ष प्रस्तुत करने की बात कही है।
क्र.सं. 39, वृन्दावन शोध संस्थान

चित्र–9
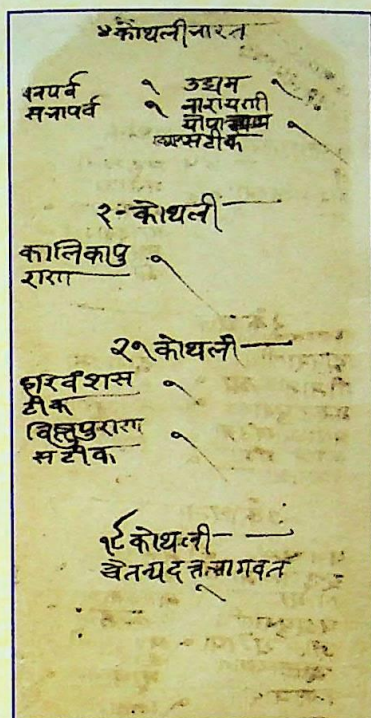
गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर के सूचीपत्र (Catalouge) के अन्तर्गत विद्यमान पत्रक जिसमें 19वीं कोथली (बसना) में चैतन्य महाप्रभु के द्वारा रघुनाथ भट्ट गोस्वामी को प्रदत्त उस श्रीमद्भागवत् की पाण्डुलिपि का उल्लेख है जो तत्कालीन समय में इस पुस्तक ठौर में विद्यमान थी।

चित्र–10
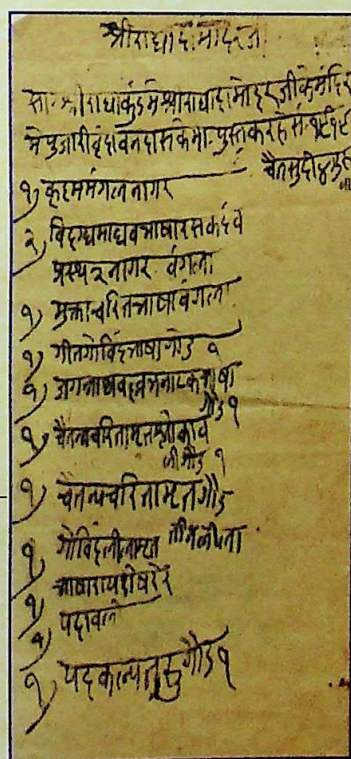
पुस्तक ठौर से पाण्डुलिपियों की नई प्रतियां तैयार करने अथवा पठनार्थ, यहां से पोथियों के बाहर जाने का उल्लेख दर्शाता सूचीपत्र का पत्रक जिसमें सम्वत् 1919 में राधाकुण्ड में पुजारी वृन्दावनदास के पास पोथियां भेजे जाने की बात कही गई है।

चित्र–11

वि.सं. 1722 (सन् 1665 ई॰) में किसी वैष्णव के द्वारा जीव गोस्वामी की कुंज में स्थित पुस्तक ठौर को व्यवस्थित करने के दौरान पोथियों की गणना का उल्लेख दर्शाता तत्कालीन पत्रक।

चित्र–12

ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन के दस्तावेज संग्रह में संरक्षित उपनिषदों की सूची के प्रथम एवं अंतिम पत्रक।

चित्र–13
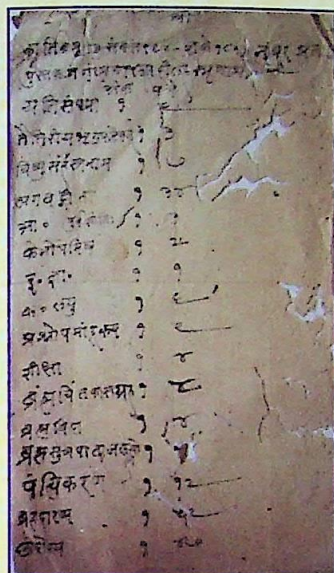
चित्र–15
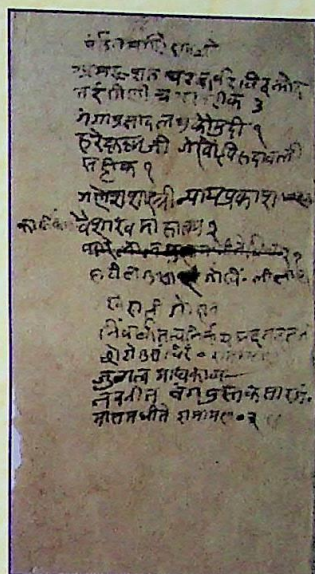
ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन के दस्तावेज संग्रह में संरक्षित वि.सं. 1947 का याद्दाश्ती सूचीपत्र जिसमें किसी व्यक्ति ने अपने ग्रंथागार से किन्हीं गंगादासजी को 16 पोथियां देने का उल्लेख किया है तथा चित्र 15 में किन्हीं पं. मणिराम जी के निजी संग्रह का सूचीपत्र।

चित्र–14
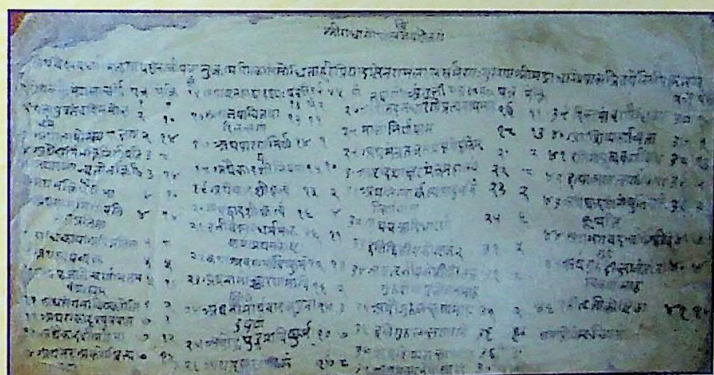
वृन्दावन के पुराना शहर अठ्खम्भा स्थित राधामोहन मंदिर में संरक्षित प्राचीन सूचीपत्र जिसमें लिपिकर्ता ने वैष्णव धर्म मंजूषा शीर्षक के अंतर्गत अपनी पांडुलिपियों का सूचीकरण किया है।

चित्र–16

चित्र–17

सूचीपत्र में संलग्न बंगला पत्रकों के प्रथम एवं अन्तिम पत्रक।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

01. द कवीन्द्राचार्य लिस्ट	—	आर.ए. शास्त्री
02. बर्नियर की भारत यात्रा	—	अनुवादः बाबू गंगा प्रसाद गुप्त एवं बाबूराम शर्मा
03. काशी का इतिहास	—	डॉ० मोतीचन्द
04. An early testamentary	—	Tarapada Mukherjee and document in Sanskrit : J.C.Wright, V.R.I.
05. ब्रज के शिलालेख भाग-1 (वृन्दावन)	—	डॉ० राजेश शर्मा
06. जहाँगीरनामा	—	बाबू ब्रजरत्नदास
07. बिहारिनदास की वाणी	—	बिहारिनदास
08. भगवतरसिक की वाणी	—	भगवतरसिक
09. भक्तमाल	—	नारायणदास 'नाभा' (नाभादास)
10. भक्तिरस बोधिनी टीका	—	प्रियादास
11. रसिक अनन्यमाल	—	भगवतमुदित
12. निजमत सिद्धान्त	—	किशोरदास
13. चैतन्य चरितामृत	—	कृष्णदास कविराज
14. भारत सावित्री	—	वासुदेवशरण अग्रवाल
15. ए हिस्ट्री आफ इण्डियन फिलॉसफी	—	एस.एन.दास गुप्ता
16. भक्त कवि व्यासजी	—	वासुदेव गोस्वामी
17. भक्त नामावली	—	ध्रुवदास
18. संस्कृत कैटलॉग - 3	—	वृन्दावन शोध संस्थान
19. चैतन्य सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य	—	डॉ० नरेशचन्द्र बंसल
20. लघु गोपाल चम्पू	—	प्रकाशक, बाबाकृष्णदास
21. वृन्दावन के वैष्णव लिखिया	—	डॉ० राजेश शर्मा
22. ललित सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य	—	डॉ० बाबूलाल गोस्वामी
23. संस्कृत साहित्य का इतिहास	—	वाचस्पति गैरोला

पाण्डुलिपियाँ/दस्तावेज

01. गोविन्द मन्दिर अष्टक — जीव गोस्वामी

02. वृन्दावनधामानुरागावली — गोपाल राय

03. विवाह मंगल बेली — चाचा श्रीहित वृन्दावनदास

05. बादशाह अकबर का फरमान, 997 हिजरी (1594ई०)
दस्तावेज संग्रह, क्र० 1 (A) वृ.शो.सं.

06. जीव गोस्वामी का संकल्प पत्र, वि०सं०1663 दस्तावेज संग्रह, क्र० 791, वृ.शो.सं.

07. कृष्णदास गोस्वामी का दस्तावेज, वि०सं०1673, क्र० 183, वृ.शो.सं.

08. राधादामोदर के गोस्वामी गोपीरमण का दस्तावेज, वि०सं०1746, क्र० 32 वृ.शो.सं.

09. राधादामोदर मंदिर का उत्तराधिकार विषयक दस्तावेज, वि०सं०1763, क्र० 51, वृ.शो.सं.

10. सवाई जयसिंह के दीवान का राजस्थानी गद्य में दस्तावेज, वि०सं०1774, क्र० 39, वृ.शो.सं.

11. वैष्णव धर्म मंजूषा (सूचीपत्र), राधामोहन मंदिर, पुराना शहर, वृन्दावन

12. याददाश्ती सूचीपत्र, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन

13. पं० मणिराम का सूचीपत्र, ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन

14. 108 उपनिषदों की हस्तलिखित सूची, दस्तावेज संग्रह,
ब्रज संस्कृति शोध संस्थान, वृन्दावन

शब्दानुक्रमणिका

इस परंपरा पर यह प्रथम ग्रंथ है। इसके पूर्व इस विषय पर किसी भी पांडुलिपिविद् ने ग्रंथ नहीं लिखा। हाँ, आर.ए. शास्त्री धन्यवाद के पात्र है, जिन्होंने प्रथम बार सन् 1919 ई॰ में पूना (महाराष्ट्र) में आयोजित ऑल इंडिया ऑरियण्टल कान्फ्रेंस में काशी स्थित कवीन्द्राचार्य सरस्वती के ग्रंथागार की पांडुलिपियों से संबंधित सूचीपत्र पर अपना शोध निबंध प्रस्तुत किया था। उनका यह शोधपत्र तत्त्कालीन विद्वानों द्वारा समादृत हुआ और उसी समय यह शोध गायकवाड़ ऑरियण्टल सीरिज में प्रकाशित भी हुआ।

वर्तमान में संस्थान के द्वारा प्रकाशित वृन्दावन के गौड़ीय वैष्णवों की पुस्तक ठौर (पुस्तकालय) का यह सूचीपत्र (कैटलॉग) शाहजहाँ के काल में विद्यमान कवीन्द्राचार्य के सूचीपत्र से भी अधिक प्राचीन, अक़बर के समय का होने के कारण अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रगति शर्मा ने ग्रंथ को 8 शीर्षकों में विभाजित कर तत्त्कालीन दुर्लभ, लेकिन अब तक अनुद्घाटित सन्दर्भों के साथ अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न दुर्लभ संदर्भों का संकलन स्वयं में अद्भुत है। पुस्तक के अंतर्गत प्रायः संदर्भ पहली बार प्रकाशित हुये हैं, जो पांडुलिपि विज्ञान से जुड़े अध्येताओं के लिए नई उपलब्धि सिद्ध होंगे।

ग्रंथ लेखिका प्रगति शर्मा को साधुवाद, जिन्होंने अद्यावधि अविवेचित ग्रंथ लिखकर न केवल चैतन्य महाप्रभु की परंपरा से जुड़े एक अप्रकाशित पक्ष को सर्वविदित किया बल्कि इस विरले कार्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में मूल्यवान योगदान दिया है, जो साहित्य जगत के लिये एक नई देन है।

उदयशंकर दुबे
पूर्व साहित्यान्वेषक,
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
सूत्र संयोजक
भारतीय मनीषा सूत्रम्, दारागंज, प्रयाग

प्रगति शर्मा : एक परिचय

पति का नाम	–	डॉ॰ राजेश शर्मा
पता	–	नृसिंह मंदिर के सामने, अठखम्भा, वृन्दावन–281121, मथुरा, उ०प्र०
जन्मतिथि	–	07–08–1984
ई–मेल	–	pragatisharmas27@gmail.com
शैक्षिक उपलब्धियाँ	–	एम॰ए॰ (संस्कृत, शिक्षाशास्त्र) बी॰एड॰
अभिरूचि	–	विभिन्न हस्तलिखित ग्रंथागारों तथा ब्रजलोक परम्पराओं से जुड़े ब्रज संस्कृति के विविध पक्षों पर शोध, सम्पादन एवं प्रकाशन तथा शैक्षिक संगोष्ठियों में सहभागिता।
गतिविधि	–	समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में ब्रज संस्कृति से जुड़े अप्रकाशित विषयों पर शोधपरक प्रकाशन तथा संस्कृति मंत्रालय के विभिन्न प्रकल्पों द्वारा संचालित शोध परियोजनाओं में सक्रिय सहयोग एवं आलेख आदि का प्रकाशन।

शोध-प्रकाशन –

- व्यास वाणी में शिक्षा शास्त्रीय आधार
- वृन्दावन और पोथी लेखन के सन्दर्भ
- प्रियादास कृत भक्तमाल का विस्तार और वृन्दावन
- वन वृन्दावन : तब और अब
- चैतन्य कथा के अमर रचनाकार कृष्णदास कविराज और चैतन्य चरितामृत की पाण्डुलिपियों का विस्तार
- ब्रज की साँझी कला के दुर्लभ ऐतिहासिक सन्दर्भ
- साझा संस्कृति के दुर्लभ प्राचीन दस्तावेज और ब्रज (कार्य सुचारु)
  [मुगलकाल के दौरान ब्रज–वृन्दावन में बादशाहों के द्वारा जारी दान पत्र, सांस्कृतिक सहयोग एवं इसके प्रतिफल में स्थानीय संत वैष्णवों के उद्गार विषयक तत्कालीन अभिलेखीय सामग्री की खोज पर एकाग्र।]